@Qpatrika @qaumipatrika hindi instagram.com/ qaumipatrika

कौमी पत्रिका
राष्ट्रीय दैनिक अखबार

दिल्ली-हरियाणा-पंजाब-चण्डीगढ़-उत्तर प्रदेश से प्रसारित
मंगलवार, 6 मई 2025

VISIT: www.qaumipatrika.in
Email: qpatrika@gmail.com

R.N.I. No. UP-HIN/2007/21472 सम्पादक - गुरचरन सिंह बब्बर वर्ष 18 अंक 175 qaumipatrikahindi 011-41509689, 23315814, 9312262300 गाजियाबाद संवत् 2077-78, पेज (12) मूल्य 3.00 रुपये (हवाई गुल्क 50 पैसे अतिरिक्त)

आतंक के खिलाफ जंग में भारत के साथ रूस

सिम्मी कौर बब्बर

नई दिल्ली, 5 मई। आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में रूस ने भारत का साथ देने की प्रतिबद्धता दोहराई है। राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने सोमवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को फोन किया और पहलगाम आतंकी हमले की निंदा की। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने कहा, रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को फोन किया और भारत के पहलगाम में हुए आतंकी हमले की कड़ी निंदा की। उन्होंने निर्दोष लोगों की मौत पर गहरी संवेदना व्यक्त की। उन्होंने आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में भारत को पूरा समर्थन देने की बात कही। जायसवाल ने कहा, पुतिन ने इस बात पर जोर दिया कि इस जघन्य हमले के दोषियों और उनके मददगारों को न्याय के कटघरे में लाया जाना चाहिए। दोनों नेताओं ने भारत-रूस विशेष और विशेषाधिकार प्राप्त रणनीतिक साझेदारी को और गहरा करने की अपनी प्रतिबद्धता दोहराई।

प्रधानमंत्री ने विजय दिवस की 80वीं वर्षगांठ के अवसर पर राष्ट्रपति पुतिन को शुभकामनाएं दीं और उन्हें इस साल के अंत में भारत में आयोजित होने वाले वार्षिक शिखर सम्मेलन के लिए आमंत्रित किया। इससे पहले रूस के विदेश मंत्री सर्गेई लावरोव ने रविवार को भारत और पाकिस्तान के बीच बढ़ते तनाव पर चिंता जताई थी। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकवादी हमले के बाद भारत और पाकिस्तान के बीच तनातनी जारी है। इस बीच रूसी विदेश मंत्री ने दोनों देशों से संयम बरतने और किसी भी तरह की बढ़त को रोकने की अपील की थी। 22 अप्रैल को जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकवादी हमले में दहशतगर्दों ने 26 लोगों की निर्मम हत्या कर दी थी। जान गंवाने वालों में ज्यादातर पर्यटक थे। यह हमला 2019 के पुलवामा हमले के बाद सबसे बड़ा आतंकी हमला माना जा रहा है। भारत ने इस हमले के बाद कड़े कदम उठाए हैं। इसमें 1960 की सिंधु जल संधि को निलंबित करने का एलान भी शामिल है। यह संधि दोनों देशों के बीच जल बंटवारे को लेकर बनी थी।

पहलगाम हमले से जुड़ी नई याचिका पर सुप्रीम कोर्ट की फटकार

सी.चन्द्रा

नई दिल्ली, 5 मई। पहलगाम आतंकी हमले के मद्देनजर पर्यटकों की सुरक्षा की मांग करने वाली जनहित याचिका को सुप्रीम कोर्ट ने खारिज कर दिया। पर्यटकों की सुरक्षा पर जनहित याचिका दायर करने पर सुप्रीम कोर्ट ने याचिकाकर्ता को फटकार लगाई। कोर्ट ने कहा कि यह बिना किसी सार्वजनिक कारण और महज प्रचार के लिए है। कोर्ट ने यह भी कहा कि आप मामले की संवेदनशीलता को नहीं समझते। हाल ही में पहलगाम में हुए आतंकी हमले में 26 लोगों की जान चली गई थी। न्यायमूर्ति सूर्यकांत और जस्टिस एन कोटिश्वर सिंह की पीठ ने जनहित याचिका दायर करने के लिए अधिवक्ता विशाल तिवारी की खिंचाई की। उन्होंने कहा कि यह केवल प्रचार के लिए है। न्यायमूर्ति सूर्यकांत ने कहा, आपने इस तरह की जनहित याचिका क्यों दायर की? आपका असली मकसद क्या है? क्या आप इस मुद्दे की संवेदनशीलता को नहीं समझते? मुझे लगता है कि आप इस जनहित याचिका के जरिए जुर्माने को आमंत्रित कर रहे हैं। याचिकाकर्ता वकील ने कहा, यह पहली बार है कि जम्मू-कश्मीर में पर्यटकों को निशाना बनाया गया। इसलिए वह उनकी सुरक्षा के लिए निर्देश मांग रहे हैं। पीठ ने अपने आदेश में कहा, याचिकाकर्ता एक के बाद एक जनहित याचिका दायर करने में लगे हुए हैं। इसका प्राथमिक मकसद सार्वजनिक कारण में कोई वास्तविक रुचि नहीं रखते हुए प्रचार प्रतीत होता है। 22 अप्रैल को आतंकवादियों ने अनंतनाग जिले के पहलगाम के ऊपरी इलाकों में स्थित एक लोकप्रिय पर्यटन स्थल बैसरन में आतंकियों ने पर्यटकों पर गोलीबारी की थी। इस दौरान आतंकियों ने 26 निर्दोष लोगों की निर्मम हत्या कर दी थी। घटना के बाद से ही भारत-पाकिस्तान के बीच तनाव बढ़ता जा रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा था कि दहशतगर्दों, उनके पनाहगारों और मददगारों को दुनिया के किसी भी कोने से ढूंढ निकालकर सजा दी जाएगी।

केवल 311 डायल करने से होगा हर समस्या का समाधान

नई दिल्ली, 5 मई। छोटी सी दिल्ली में बारिश या बाढ़ की स्थिति से निपटने के लिए कई एजेंसियां (ह्ष्ठस्ष्ट, स्ष्टष्ठ, ष्ठष्ठ, क्कङ्खष्ठ, जल बोर्ड और फ्लड विभाग) काम करती हैं। सबके क्षेत्र बंटे हुए हैं। लेकिन बारिश के समय जब कोई समस्या आती है तो आम लोगों को यह समझ नहीं आता है कि वे किस एजेंसी को कॉल करें जिससे उनकी समस्या का समाधान हो। कई बार फोन करने के बाद पता चलता है कि वे जिस एजेंसी को कॉल कर रहे हैं, वह एरिया उस एजेंसी के अधिकार क्षेत्र में आता ही नहीं है। इसे देखते हुए दिल्ली सरकार ने बारिश में पानी इकट्ठा होने या सीवर जाम होने जैसी समस्याओं के लिए एक हेल्पलाइन नंबर 311 जारी किया है। पूरी दिल्ली के लोगों को अब बारिश में जाम, पानी न निकलने या सीवर से संबंधित कोई भी समस्या हो, लोगों को इसी हेल्पलाइन नंबर (311) पर डायल करना होगा। फोन सुनने वाला कर्मचारी उसे संबंधित विभाग या एजेंसी तक पहुंचा देगा। इससे उपभोक्ताओं को अलग-अलग एजेंसियों के हेल्पलाइन नंबर पता करने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। इससे समस्याओं का त्वरित समाधान करने में मदद भी मिलेगी। पीडब्ल्यूडी मंत्री प्रवेश साहिब सिंह वर्मा ने एनडीएमसी के कंट्रोल एंड कमांड सेंटर का निरीक्षण करने के बाद सोमवार को यह नंबर जारी किया। वर्मा ने कहा कि अब लोगों को यह सोचने की जरूरत नहीं कि समस्या किस विभाग की है। नागरिक केवल 311 पर कॉल करें और उनकी शिकायत संबंधित विभाग तक तुरंत पहुंचा दी जाएगी।

नायब सरकार का गरीब कल्याण के लिए आर्थिक सहायता का तोहफा

संजय अरोड़ा

चंडीगढ़, 5 मई। मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी ने कहा कि प्रदेश सरकार प्रोएक्टिव मोड में है। विभिन्न सामजिक सुरक्षा पेंशन योजनाओं के पात्र लोगों की पेंशन अपने आप ही बना दी जाती है , लोगों को पहले की तरह दफ्तरों के चक्कर नहीं काटने पड़ते हैं। मुख्यमंत्री आज यहां हरियाणा सिविल सचिवालय , चंडीगढ़ में विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं के लाभार्थियों के लिए आयोजित वित्तीय सहायता वितरण समारोह में सम्बोधित कर रहे थे। इस अवसर पर कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री श्याम सिंह राणा भी उपस्थित थे। इस अवसर पर हरियाणा के मुख्य सचिव श्री अनुराग रस्तोगी, राजस्व एवं आपदा प्रबंधन विभाग की अतिरिक्त मुख्य सचिव डॉ सुमिता मिश्रा , कृषि विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव श्री राजा शेखर वुंडरू , सामाजिक न्याय , अधिकारिता ,अनुसूचित एवं पिछड़ा वर्ग

कल्याण विभाग की अतिरिक्त मुख्य सचिव श्रीमती जी.अनुपमा , मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव श्री अरुण कुमार गुप्ता,मुख्यमंत्री के अतिरिक्त प्रधान सचिव श्री साकेत कुमार , सूचना ,जनसंपर्क एवं भाषा विभाग के महानिदेशक श्री के एम पांडुरंग के अलावा अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे। इस समारोह से राज्य के विभिन्न जिलों से उपायुक्त भी वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से जुड़े हुए थे। मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी ने इस अवसर पर एक क्लिक से विभिन्न सामजिक सुरक्षा पेंशन योजनाओं के 24695 नए लाभार्थियों को उनकी पहली पेंशन सीधी उनके बैंक खाते में ट्रांसफर की। इन सभी लाभार्थियों को कुल 7.48 करो? रूपये की राशि भेजी गई। मुख्यमंत्री ने सभी नए लाभार्थियों को बधाई दी। ज्ञात रहे कि हरियाणा सरकार द्वारा संचालित विभिन्न सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजनाओं के अंतर्गत पात्र लाभार्थियों को नियमित रूप से वित्तीय सहायता /भत्ता प्रदान किया जाता है। मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी के निर्देश पर प्रदेश सरकार ने विभिन्न सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजनाओं के अंतर्गत पात्र व्यक्तियों से पेंशन के लिए आवेदन आमंत्रित किये थे। अप्रैल माह 2025 में इन योजनाओं के अंतर्गत स्वीकृत 24695 नए लाभार्थियों को कुल 7.48 करो? रूपये की पेंशन राशि आज मुख्यमंत्री द्वारा उनके खाते में भेज दी गई है। अब प्रदेश में इन पेंशन योजनाओं के तहत लाभार्थियों की कुल संख्या 35,16,814 हो गई है तथा प्रति माह 1060.16 करो? रूपये की पेंशन राशि दी जाएगी। मुख्यमंत्री ने बताया कि विभिन्न सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजनाओं के अंतर्गत वृद्धावस्था सम्मान भत्ता के लाभार्थियों में कुल 17407 पात्र लोगों की संख्या में इजाफा हुआ है। इनके अलावा , विधवा पेंशन में 1673 , विद्यालय ना जा वाले नि:शक्त बच्चों की संख्या में 106 , तृतीय एवं चतुर्थ स्तर के कैंसर मरीजों को वित्तीय सहायता पाने वालों में 351 ,किन्नर भत्ता में एक तथा दुर्लभ बिमारियों से पी?ित व्यक्तियों को दी वित्तीय सहायता पाने वालों की संख्या में भी एक पात्र की वृद्धि हुई है।

पाकिस्तान ने एक बार फिर की साइबर हमले की कोशिश

नई दिल्ली, 5 मई। दक्षिण कश्मीर के पहलगाम में आतंकी हमले के बाद भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव बढ़ा हुआ है। इस बीच, पाकिस्तान लगातार भारतीय संस्थानों को साइबर हमले का निशाना बनाने के लिए खुराफातों में जुटा है। इसी कड़ी में सोमवार को पाकिस्तान साइबर फोर्स नाम के एक्स खाते ने दावा किया कि उसने भारतीय सैन्य इंजीनियरिंग सेवा और मनोहर पर्रिकर रक्षा अध्ययन एवं विश्लेषण संस्थान (एमपी-आईडीएसए) से जुड़ा संवेदनशील डाटा चुरा लिया है। सूत्रों के मुताबिक, यह दावा किया गया है कि हैकर्स ने रक्षा से जुड़े कर्मियों की निजी जानकारी और लॉगिन विवरण तक पहुंच बना ली है। इसके अलावा, इस समूह ने रक्षा मंत्रालय के अधीन काम करने वाली सरकारी कंपनी आर्मर्ड व्हीकल कॉर्पोरेशन लिमिटेड (एवीएनएल) की आधिकारिक वेबसाइट को हैक करने की कोशिश की। वेबसाइट पर पाकिस्तान झंडा और अल खालिद टैंक की तस्वीर से दिखाई दी। सूत्रों ने बताया कि सुरक्षा के लिहाज से एवीएनएल की वेबसाइट को अस्थाई रूप से बंद कर दिया गया है, ताकि वेबसाइट की पूरी तरह से जांच की जा सके और यह पता लगाया जा सके कि कितना नुकसान हुआ है। इस बीच, साइबर सुरक्षा एजेंसियां और विशेषज्ञ लगातार इंटरनेट पर नजर रख रहे हैं, ताकि पाकिस्तान से जुड़े किसी और संभावित हमले को समय रहते पकड़ा जा सके और उससे निपटा जा सके। इस घटना के बाद, सरकार और एजेंसियां साइबर सुरक्षा को और मजबूत करने में जुटी हैं, ताकि आगे इस तरह के हमलों को रोका जा सके और देश के डिजिटल ढांचे की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके। पहलगाम आतंकी हमले में 26 लोगों की नृशंस तरीके से हत्या कर दी गई थी। जिसमें अधिकांश पर्यटक शामिल थे। इसके बाद भारत ने पाकिस्तान के खिलाफ कई रणनीतिक कदम उठाए। इनमें पाकिस्तानी नागरिकों के लिए सार्क वीजा में छूट रद्द करना, सिंधु जल समझौते को निलंबित करना, सभी श्रेणियों की डाक सेवाओं को प्रतिबंधित करना भी शामिल है।

ट्रंप को टैरिफ पर बातचीत का हक, भारत भी अच्छा सौदा करने में सक्षम: राहुल गांधी

सौरभ शर्मा

नई दिल्ली, 5 मई। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने कहा है कि अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को टैरिफ (आयात शुल्क) को बदलने की बात कहने का पूरा हक है, और भारत भी उतना ही सक्षम है कि वह अपने हितों के हिसाब से अच्छी डील कर सके। राहुल गांधी ने ये बातें 21 अप्रैल को अमेरिका के ब्राउन यूनिवर्सिटी के वॉटसन इंस्टिट्यूट फॉर इंटरनेशनल एंड पब्लिक अफेयर्स में एक संवाद सत्र के दौरान कही थीं। इस बातचीत का वीडियो शनिवार को वॉटसन इंस्टिट्यूट के यूट्यूब चैनल पर अपलोड किया गया है। राहुल गांधी ने सोमवार को फेसबुक पर भी इस बातचीत का एक हिस्सा साझा किया और लिखा, भारत के पास स्केल (बड़ा आकार) और स्किल (कौशल) दोनों हैं। अब हमें एक साफ-सुथरी दिशा चाहिए — बनाने की, नेतृत्व करने की और दुनिया को यह दिखाने की कि लोकतंत्र और मैन्युफैक्चरिंग मिलकर भविष्य को ताकत देंगे। अब वक्त आ गया है कि हम संभावनाओं से आगे बढ़कर

दिशा तय करें। राहुल गांधी ने कहा कि भारत के सामने आज सबसे बड़ी चुनौती यह है कि वह चीन की तरह एक मजबूत उत्पादन प्रणाली तैयार करे, जिससे मैन्युफैक्चरिंग बढ़े और रोजगार पैदा हों। उन्होंने कहा, %भारत यह तब तक नहीं कर सकता जब तक कि उसकी अर्थव्यवस्था उदार न हो। जो लोग सामाजिक प्रगति और जाति व्यवस्था को कमजोर करने की बात करते हैं, उन्हें यह भी मानना होगा कि इसके लिए धन की जरूरत है और धन तभी आएगा जब हमारे पास मजबूत उत्पादन व्यवस्था और खुली अर्थव्यवस्था होगी।% जब उनसे पूछा गया कि भारतीय सरकार ने ट्रंप की टैरिफ नीति पर क्या प्रतिक्रिया दी है, तो राहुल गांधी ने कहा, हमें नहीं पता सरकार कैसे प्रतिक्रिया दे रही है, क्योंकि वे हमें ये बातें बताते नहीं हैं। उन्होंने कहा, %ट्रंप बातचीत कर रहे हैं और उन्हें इसका पूरा अधिकार है। और हमें भी पूरी ताकत से जवाबी बातचीत करनी चाहिए। हमें समझना चाहिए कि हमारी ताकतें क्या हैं, हमें क्या चाहिए और किन चीजों में हमें कोई समझौता नहीं करना चाहिए जो हमारे लिए नुकसानदायक हों। ट्रंप अगर टैरिफ ढांचे में बदलाव की बात कर रहे हैं तो यह एक सामान्य मोलभाव है। इसमें कोई समस्या नहीं है। मेरा मानना है कि भारत भी अपने लिए एक अच्छी डील करने में पूरी तरह सक्षम है।%

किसानों की मदद करने से पहले महंगाई के बारे में सोचें: जयराम रमेश

तेजिन्दर कौर बब्बर

नई दिल्ली, 5 मई। कांग्रेस नेता जयराम रमेश ने उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ की टिप्पणी का हवाला देते प्रधानमंत्री मोदी पर निशाना साधा है। बता दें कि, उपराष्ट्रपति धनखड़ ने कहा था कि किसानों को सहायता करते समय महंगाई पर विचार करना चाहिए। इसके साथ ही धनखड़ ने अमेरिकी पैटर्न के आधार पर किसानों के लिए उर्वरक सब्सिडी में प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण (डीबीटी) की वकालत भी की थी। उन्होंने मांग की थी कि विधायकों और सांसदों के वेतन की तरह किसानों को वित्तीय सहायता प्रदान करते समय महंगाई को ध्यान में रखा जाना चाहिए। ग्वालियर में राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय एक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी ने सांसद और विधायक को वेतन बढ़ाने के समय महंगाई का ध्यान रखा। तो किसानों के लिए क्यों नहीं सोचा जाता? किसानों को वित्तीय सहायता देने के समय भी महंगाई के बारे में सोचना चाहिए। वहीं इस पर कांग्रेस नेता जयराम रमेश ने सोशल मीडिया

प्लेटफॉर्म एक्स पर एक पोस्ट में लिखा कि ग्वालियर में कल उपराष्ट्रपति ने कहा था कि पीएम मोदी सांसदों और विधायकों के वेतन बढ़ने के समय महंगाई का ध्यान रखते है, तो किसानों को वित्तीय सहायता देने के समय भी महंगाई के बारे में सोचना चाहिए। इस पर उन्होंने पूछा कि वास्तव में प्रधानमंत्री मोदी ऐसा कब करेंगे? अपने संबोधन में उपराष्ट्रपति ने उर्वरक सब्सिडी में डीबीटी की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि अमेरिका में किसानों को सीधे सहायता दी जाती है। बिचौलियों के माध्यम से नहीं। जैसे भारत में पीएम-किसान योजना है। वैसे ही भारत सरकार भी उर्वरक सब्सिडी पर भारी खर्च करती है। उन्होंने कहा कि यह अब चिंतन और शोध दोनों का विषय है। अगर यह धनराशि सीधे किसानों को दी जाए, तो भारत में प्रत्येक किसान परिवार को कम से कम 30,000 रुपये प्रति वर्ष मिल सकते हैं। यह राशि सीधे उन्हें दी जानी चाहिए। उन्होंने आगे कहा कि वर्तमान में जब सरकार उर्वरक सब्सिडी प्रदान करती है, तो किसान वास्तव में इसका प्रभाव महसूस नहीं कर पाते हैं।

हिमाचल में कांग्रेस से नहीं चला पा रही सरकार: अनुराग ठाकुर

धर्मशाला/हमीरपुर, 5 मई। हिमाचल में सत्तारूढ़ दल कांग्रेस के नेताओं की सोशल मीडिया पर टिप्पणियों पर गर्माई सियासत पर पूर्व केंद्रीय मंत्री सांसद अनुराग ठाकुर ने तंज कसा है। उन्होंने गांधी चौक हमीरपुर में आतंकवाद के विरोध में आयोजित विरोध रैली में जनता को संबोधित करते हुए कहा कि हिमाचल में कांग्रेस पार्टी से सरकार नहीं चल रही है। कांग्रेस पार्टी में क्या चल रहा है, यह प्रदेश की जनता को पता चल गया है। रैली के दौरान उन्होंने कांग्रेस पार्टी की आतंकवाद के खिलाफ मंशा पर सवाल खड़े किए। उन्होंने कहा कि कांग्रेस नेताओं के बयानों में आज भी पाकिस्तान का प्रेम झलक रहा है। वहीं अनुराग ठाकुर ने कहा कि पहलगाम आतंकी हमले की देशभर ने निंदा की है। पहलगाम आतंकी हमले के बाद दुनियाभर में पाकिस्तान के खिलाफ माहौल बना है। उन्होंने कहा कि भारत सरकार ने स्पष्ट किया है कि इस हमले का करारा और मुंहतोड़ जवाब दिया जाएगा। वह सोमवार सुबह कांगड़ा के गगल एयरपोर्ट पर पत्रकारों से बातचीत कर रहे थे। शिमला के संजौली मस्जिद विवाद पर अनुराग ने कहा कि कब्जा जमाएंगे, सनसनी फैलाएंगे, लेकिन कागज नहीं दिखाएंगे। यह वक्फ बोर्ड की मानसिकता बन गई है। संजौली में भी जिस तरह से मस्जिद का निर्माण हुआ, वह अवैध था। न जमीन के कागज, न मालिकाना हक और एक के बाद दूसरी मंजिल भी अवैध तौर पर बनी थी। कई महीनों का समय मिलने के बाद भी जब कागज नहीं दिखा पाए तो नगर निगम आयुक्त ने निर्देश दिए हैं कि एक नहीं, बल्कि सारी मंजिलें ही बिना मंजूरी के बनी हैं और मालिकाना हक भी अब तक वक्फ बोर्ड नहीं दिखा पाया है। अनुराग ने कहा कि यह एक नहीं, देशभर में ऐसे हजारों उदाहरण होंगे, जहां वक्फ ने जमीनों पर कब्जा कर रखा है।

जस्टिस यशवंत वर्मा केस: नकदी बरामदगी मामले में तीन सदस्यी पैनल ने सौंपी रिपोर्ट

नरेश मल्होत्रा

नई दिल्ली, 5 मई। इलाहाबाद हाईकोर्ट के न्यायाधीश यशवंत वर्मा के दिल्ली स्थित घर पर मिली नकदी मामले में सुप्रीम कोर्ट द्वारा नियुक्त तीन सदस्यीय समिति ने सीजेआई संजीव खन्ना को अपनी रिपोर्ट सौंप दी है।दिल्ली हाईकोर्ट में न्यायाधीश रहते हुए यशवंत वर्मा के घर पर कथित तौर पर भारी मात्रा में जली हुई नकदी मिली थी। जिसके बाद कोर्ट ने संज्ञान लेते हुए जांच समिति का गठन किया था। इस माामले की जांच के लिए सुप्रीम कोर्ट द्वारा गठित तीन सदस्यों वाली समिति में पंजाब और हरियाणा हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति शील नागू, हिमाचल प्रदेश हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति जी एस संधावालिया और कर्नाटक हाईकोर्ट की न्यायमूर्ति अनु शिवरामन शामिल थीं। इस तीन सदस्यीय समिति ने 3 मई को अपनी रिपोर्ट को अंतिम रूप दिया था। 4 मई को मुख्य न्यायाधीश को आगे की कार्रवाई के लिए सौंपी गई इस रिपोर्ट में कथित तौर पर न्यायमूर्ति वर्मा के लुटियंस दिल्ली स्थित आवास में 14 मार्च को रात करीब 11.35 बजे आग लगने के बाद कथित नकदी बरामदगी विवाद का निष्कर्ष शामिल हैं। अब इस रिपोर्ट पर आगे की कार्रवाई का फैसला मुख्य न्यायाधीश लेंगे। शीर्ष न्यायालय ने एक बयान में कहा, न्यायमूर्ति यशवंत वर्मा के खिलाफ आरोपों की जांच करने के लिए गठित तीन सदस्यीय समिति ने अपनी रिपोर्ट 4 मई को भारत के मुख्य न्यायाधीश को सौंप दी है। शीर्ष न्यायालय ने 28 मार्च को इलाहाबाद उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश से कहा था कि वे न्यायमूर्ति वर्मा को फिलहाल कोई न्यायिक कार्य न सौंपें। शीर्ष न्यायालय के कॉलेजियम ने 24 मार्च को न्यायमूर्ति वर्मा को उनके मूल इलाहाबाद उच्च न्यायालय में वापस भेजने की सिफारिश की थी। दिल्ली हाईकोर्ट ने पहले मुख्य न्यायाधीश के निर्देश के बाद न्यायाधीश से कार्य वापस ले लिए थे। कथित नकदी की बरामदगी 14 मार्च को रात करीब 11.35 बजे जस्टिस वर्मा के लुटियंस दिल्ली स्थित आवास में आग लगने के बाद हुई थी। 22 मार्च को सीजेआई ने आरोपों की आंतरिक जांच करने के लिए तीन सदस्यीय समिति का गठन किया था और घटना में दिल्ली उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश डीके उपाध्याय की जांच रिपोर्ट अपलोड करने का फैसला

किया। इसमें कथित तौर पर भारी मात्रा में नकदी मिलने की तस्वीरें और वीडियो शामिल थे। हालांकि, न्यायमूर्ति वर्मा ने आरोपों को खारिज कर दिया था और कहा कि उनके या उनके परिवार के किसी सदस्य द्वारा स्टोररूम में कभी भी कोई नकदी नहीं रखी गई। इलाहाबाद हाईकोर्ट में न्यायमूर्ति रहे एएन वर्मा के बेटे और दिल्ली हाईकोर्ट के न्यायमूर्ति यशवंत वर्मा ने 33 साल पहले प्रयागराज से ही बतौर अधिवक्ता प्रैक्टिस शुरू की थी। वह हाईकोर्ट के विशेष अधिवक्ता रहे और उत्तर प्रदेश सरकार के मुख्य स्थायी अधिवक्ता भी बनाए गए। यहीं 2014 में अतिरिक्त न्यायाधीश नियुक्त किए गए। करीब साढ़े तीन साल पहले तबादला दिल्ली हाईकोर्ट में कर दिया गया। न्यायमूर्ति यशवंत वर्मा का जन्म भी प्रयागराज में ही हुआ। हालांकि, उनकी पढ़ाई-लिखाई बाहर हुई। उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय के हंसराज कॉलेज से बीकॉम ऑनर्स किया। 1992 में मध्य प्रदेश के रीवा विश्वविद्यालय से एलएलबी करके 8 अगस्त 1992 को अधिवक्ता के बतौर बार काउंसिल में पंजीकृत हुए। जस्टिस वर्मा को संवैधानिक, औद्योगिक विवादों, कॉर्पोरेट टैक्सेशन और पर्यावरणीय मामलों का विशेषज्ञ माना जाता है। 2006 में विशेष अधिवक्ता बनाए जाने के बाद उन्होंने इलाहाबाद हाईकोर्ट के मुकदमों की पैरवी की।

क्रिकेटर मोहम्मद शमी को ईमेल भेज मांगे एक करोड़

नसीरउद्दीन

अमरोहा, 5 मई। भारतीय क्रिकेट टीम के तेज गेंदबाज मोहम्मद शमी को ईमेल कर जान से मारने की धमकी दी गई है। आरोपी ने एक करोड़ रुपये की मांग करते हुए पैसे न देने पर हत्या की चेतावनी दी है। यह मामला सामने आने के बाद से शमी और उनके परिजन दहशत में हैं। शमी फिलहाल इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) में व्यस्त हैं और हैदराबाद में मौजूद हैं। यह ईमेल सबसे पहले शमी के बड़े भाई मोहम्मद हसीब ने देखा। इसके बाद उन्होंने मामले की जानकारी अमरोहा के एसपी को दी। इसके बाद शिकायती पत्र सौंपकर आरोपी के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग की। हसीब के मुताबिक, शमी को पहला ई-मेल चार मई की शाम, दूसरा मेल पांच मई (सोमवार) सुबह भेजा गया था। शिकायत मिलने के बाद अमरोहा के साइबर थाने में रिपोर्ट दर्ज कर ली गई है। ईमेल राजपुत सिंधर नाम के ईमेल से भेजा गया है। इसमें उसका नाम प्रभाकारा बताया जा रहा है। पुलिस का कहना है कि आरोपी के बारे में पता लगाया जा रहा है। मोहम्मद शमी को धमकी की शिकायत के बाद अमरोहा पुलिस और क्राइम ब्रांच की टीमें अलर्ट हो गई हैं। ईमेल की तकनीकी जांच के लिए साइबर विशेषज्ञों की मदद ली जा रही है। पुलिस ने मेल भेजने वाले की पहचान और लोकेशन ट्रेस करने की प्रक्रिया शुरू कर दी है। मोहम्मद शमी उत्तर प्रदेश के अमरोहा जिले की डिडौली कोतवाली क्षेत्र के गांव सहसपुर अलीनगर के रहने वाले हैं। वह भारतीय टीम के प्रमुख गेंदबाजों में से एक हैं और हाल ही में देश-विदेश में बेहतरीन प्रदर्शन कर चुके हैं। ऐसे में उन्हें मिली यह धमकी सुरक्षा एजेंसियों के लिए भी चिंता का विषय है। पुलिस अधिकारियों का कहना है कि आरोपी के खिलाफ साक्ष्य जुटाए जा रहे हैं और जल्द ही उसे गिरफ्तार किया जाएगा।

कैलिफोर्निया में गोलीबारी के बाद तीन लोग घायल

एजेंसी

लॉस एंजेल्स। अमेरिका में कैलिफोर्निया प्रांत के ऑरेंज काउंटी के एक पार्क में दोपहर हुई गोलीबारी में तीन लोग घायल हो गए।ऑरेंज काउंटी शेरिफ विभाग ने 'एक्स' पर एक पोस्ट में कहा कि डिप्टी योरबा लिंडा के फेदरली रीजनल पार्क में गोलीबारी की रिपोर्ट पर कार्रवाई कर रहे हैं। शेरिफ विभाग ने बताया कि घायलों को स्थानीय अस्पताल में भर्ती कराया गया है। स्थानीय कानून प्रवर्तन एजेंसियों ने लोगों से इस क्षेत्र में न जाने का आग्रह किया है।

रोमानिया के राष्ट्रपति चुनाव में दक्षिणपंथी उम्मीदवार आगे

बुखारेस्ट। रोमानिया में हुए राष्ट्रपति चुनाव के पहले चरण के पुनः मतदान में अलायंस फॉर द यूनियन ऑफ रोमानियंस के अध्यक्ष जॉर्ज सिमियन बढ़त में हैं।शहरी एवं क्षेत्रीय समाजशास्त्र केंद्र (सीयूआरएस) की ओर से कराए गए एग्जिट पोल के अनुसार, सिमियन को 33.1 प्रतिशत वोट मिले। उनके बाद रोमानिया फॉरवर्ड गठबंधन के क्रिन एंटोनैस्कु को 22.9 प्रतिशत और स्वतंत्र उम्मीदवार बुखारेस्ट के मेयर निकुसोर डैन को 20.9 प्रतिशत वोट मिले हैं। एवांगार्डे सोशियो-बिहेवियरल स्टडीज ग्रुप द्वारा किए गए एक अन्य एग्जिट पोल में सिमियन को 30 प्रतिशत वोट मिले, जबकि एंटोन्सक्यू और डैन दोनों को 23-23 प्रतिशत वोट मिल सकते हैं। रोमानिया की स्थायी चुनाव प्राधिकरण के अनुसार, इस चुनाव में 1.8 करोड़ से ज्यादा पंजीकृत मतदाता थे। रोमानिया का राष्ट्रपति पांच साल के लिए चुना जाता है और अधिकतम दो कार्यकाल तक सेवा दे सकता है। रोमानिया के संविधान के अनुसार, यदि पहले दौर में कोई उम्मीदवार पूर्ण बहुमत नहीं पाता, तो दो सप्ताह बाद शीर्ष दो उम्मीदवारों के बीच रनऑफ होगा। पिछले नवंबर में हुई राष्ट्रपति चुनाव प्रक्रिया को प्रचार में गड़बड़ी और विदेशी दखल के आरोपों के चलते रद्द कर दिया गया था।

भारत से तनाव के बीच पाकिस्तान के 12 सैन्य अफसर ट्रेनिंग के लिए नेपाल पहुंचे, रक्षा विशेषज्ञ आश्चर्यचकित

काठमांडू। भारत के जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले के बाद जारी तनाव के बीच पाकिस्तान की सेना के 12 अधिकारी 12 दिवसीय सैन्य प्रशिक्षण के लिए काठमांडू पहुंचे हैं। नेपाली सेना ने एक बयान में कहा कि यह अधिकारी पाकिस्तान सेना के नेशनल सिक्योरिटी एंड वार कॉलेज के हैं। पाकिस्तान के नेशनल डिफेंस यूनिवर्सिटी के मातहत रहे यह अधिकारी एयर कोमोडोर साद मंसूर अंसारी के नेतृत्व में नेपाल आए हैं। नेपाली सेना के माउंटेन वारफेयर कॉलेज में इन्हें प्रशिक्षण दिया जाएगा। उल्लेखनीय है कि पहलगाम हमले के बाद नेपाल ने आतंकवाद के मसले पर भारत को अपना पूरा समर्थन देने की घोषणा की है। मगर इस घटनाक्रम से उसकी घोषणा पर सवाल खड़े हुए हैं। स्थानीय नागरिक पहलगाम हमले से खफा हैं। नेपाल में लगातार पाकिस्तान के खिलाफ प्रदर्शन भी हो रहा है। लोग पाकिस्तान के सैन्य अधिकारियों को प्रशिक्षण देने के फैसले से आश्चर्यचकित हैं। नेपाली सेना के अवकाश प्राप्त ब्रिगेडियर जनरल विनोज बस्नेत ने कहा कि भारत और पाकिस्तान के बीच इस तरह के तनाव के बीच नेपाल द्वारा पाकिस्तानी सेना के अधिकारियों को बुलाना रणनीतिक रूप से सही नहीं है।

लेडी गागा के रियो कॉन्सर्ट में विस्फोट की साजिश नाकाम, दो आरोपित गिरफ्तार

रियो डी जेनेरियो। ब्राजील की पुलिस ने पॉप स्टार लेडी गागा के रियो डी जेनेरियो में आयोजित ऐतिहासिक मुफ्त कॉन्सर्ट में विस्फोट करने की साजिश रचने के आरोप में दो लोगों को गिरफ्तार किया है। यह कॉन्सर्ट शनिवार को कोपाकबाना बीच पर आयोजित किया गया था, जिसमें अनुमानित 25 लाख से अधिक प्रशंसक शामिल हुए थे। ब्राजीलियाई अधिकारियों के अनुसार, संदिग्धों को कॉन्सर्ट से कुछ घंटे पहले गिरफ्तार कर लिया गया था। हालांकि कार्यक्रम बिना किसी व्यवधान के संपन्न हुआ, जिससे कुछ लोगों ने खतरे की गंभीरता पर सवाल उठाए। आमतौर पर इस प्रकार के बड़े आयोजनों में सुरक्षा चिंताओं के चलते कार्यक्रम रद्द कर दिए जाते हैं, जैसा कि पिछले वर्ष विएना में टेलर स्विफ्ट के कॉन्सर्ट के साथ हुआ था। पुलिस ने तत्काल साजिश की जानकारी सार्वजनिक नहीं की ताकि घबराहट और अफवाहों से बचा जा सके। लेडी गागा की टीम ने एक बयान जारी कर बताया कि उन्हें इस साजिश की जानकारी मीडिया रिपोर्ट्स से ही मिली। बयान में कहा गया, शो से पहले और इसके दौरान सुरक्षा को लेकर कोई जानकारी या पुलिस की ओर से कोई सतर्कता नहीं दी गई थी। लेकिन टीम ने आयोजन की योजना और निष्पादन के दौरान सुरक्षा एजेंसियों के साथ मिलकर काम किया था।

'राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरा' बता डोनाल्ड ट्रंप ने विदेशी फिल्मों पर लगाया 100 प्रतिशत टैरिफ

एजेंसी

वाशिंगटन। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने सोमवार को विदेशी फिल्मों पर 100 प्रतिशत टैरिफ लगाने की घोषणा की। उन्होंने कहा कि अमेरिका में फिल्म उद्योग बहुत तेजी से खत्म हो रहा है, जो राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरा है। उन्होंने अन्य देशों पर आरोप लगाया कि वे तरह-तरह के प्रोत्साहन देकर फिल्म निर्माताओं और स्टूडियो को अमेरिका से दूर कर रहे हैं।उन्होंने अपने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ट्रुथ सोशल पर लिखा, अमेरिका में उद्योग तेजी से खत्म हो रहा है। अन्य देश हमारे फिल्म निर्माताओं और स्टूडियो को अमेरिका से दूर करने के लिए कई तरह के प्रोत्साहन दे रहे हैं। हॉलीवुड और अमेरिका के कई अन्य क्षेत्र तबाह हो रहे हैं। यह अन्य देशों का सुनियोजित प्रयास है और इसलिए राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरा है।

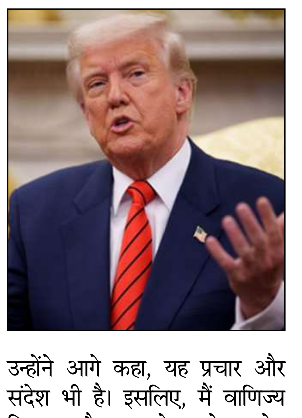

उन्होंने आगे कहा, यह प्रचार और संदेश भी है। इसलिए, मैं वाणिज्य विभाग और यूनाइटेड स्टेट्स ट्रेड रिप्रेजेंटेटिव को तुरंत उन सभी फिल्मों पर 100 प्रतिशत टैरिफ शुरू करने की प्रक्रिया शुरू करने का निर्देश दे रहा हूं, जो विदेशों में बनी हैं और हमारे देश में आ रही हैं। हम चाहते हैं कि अमेरिका में फिर से फिल्में बनाई जाएं। व्हाइट हाउस में पत्रकारों से बात करते हुए ट्रंप ने हॉलीवुड में पिछले कुछ वर्षों में फिल्म निर्माण में कमी के लिए कैलिफोर्निया के गवर्नर गेविन न्यूजॉम को जिम्मेदार ठहराया। उन्होंने कहा कि अन्य देश अमेरिका से फिल्में और फिल्म निर्माण की क्षमताएं चुरा रहे हैं।ट्रंप ने कहा, अगर वे संयुक्त राज्य अमेरिका के अंदर फिल्म बनाने के लिए तैयार नहीं हैं, तो हमें फिल्मों के आने पर टैरिफ लगाना चाहिए। रिपोर्ट्स के अनुसार, बजट में कटौती और बाहर अधिक आकर्षक टैक्स प्रोत्साहनों के कारण कैलिफोर्निया में फिल्म निर्माण कम हुआ है। इसके अलावा, हाल के वर्षों में अमेरिकी फिल्म उद्योग को कई आर्थिक झटके लगे, जिनमें हॉलीवुड मजदूर हड़ताल और कोविड महामारी शामिल हैं। जनवरी में ट्रंप ने तीन फिल्म स्टार्स- जॉन वॉइट, मेल गिब्सन और सिल्वेस्टर स्टेलोन को हॉलीवुड में व्यापार के अवसरों को बढ़ावा देने के लिए विशेष दूत नियुक्त किया था। ट्रंप ने कहा कि उनका काम हॉलीवुड में बिजनेस वापस लाना है, क्योंकि पिछले चार वर्षों में इस उद्योग को विदेशी फिल्मों के कारण बहुत नुकसान हुआ है। उन्होंने उस दौरान पोस्ट किया था, वे मेरे लिए विशेष दूत के रूप में काम करेंगे ताकि हॉलीवुड, जो पिछले चार वर्षों में विदेशी फिल्मों के कारण बहुत सारा बिजनेस खो दिया है, उसको पहले से कहीं अधिक बेहतर और मजबूत बनाया जा सके।

दक्षिण-पश्चिमी चीन में नाव पलटने से मरने वालों की संख्या नौ हुई, एक लापता

एजेंसी

गुइयांग। दक्षिण-पश्चिमी चीन के गुइझोउ प्रांत के कियानक्सी शहर में दोपहर एक नाव पलटने से नौ लोगों की मौत हो गई तथा एक लापता है। यह जानकारी स्थानीय अधिकारियों ने सोमवार को दी। उन्होंने कहा कि अचानक तेज़ हवाओं के कारण चार नावें पलट गईं, जिससे 84 लोग पानी में डूब गए। स्थानीय बचाव मुख्यालय के अनुसार, अब तक नौ लोगों की मौत हो चुकी है, 70 का इलाज चल रहा है और उनकी हालत खतरे से बाहर है, जबकि चार लोग सुरक्षित हैं। अधिकारियों के अनुसार, आखिरी लापता व्यक्ति की तलाश जारी है। प्रांतीय अधिकारियों ने बचाव प्रयासों में समन्वय के लिए पुलिस, अग्निशमन और चिकित्सा कर्मियों सहित लगभग 500 आपातकालीन प्रतिक्रिया दल तैनात किए हैं।

हूती ने इजरायल के अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर किया मिसाइल हमला, नेतन्याहू ने जवाबी कार्रवाई की खाई कसम

एजेंसी

यरूशलम। इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने यमन में हूती विद्रोहियों और उनके सहयोगी ईरान के खिलाफ जवाबी कार्रवाई करने की कसम खाई है। जवाबी कार्रवाई का फैसला हूती समूह के इजरायल स्थित अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर दागे गए मिसाइल हमले के बाद लिया गया है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर प्रधानमंत्री कार्यालय के आधिकारिक अकाउंट से किए गए एक पोस्ट में दावा किया गया कि हूती के हमले ईरान की शय पर होते हैं। इसमें आगे कहा गया कि इजरायल हमारे मुख्य हवाई अड्डे पर हूती विद्रोहियों के हमले का जवाब देगा और हमारे चुने गए समय और स्थान पर, उनके ईरानी आतंकवादी आकाओं को जवाब देगा। इससे पहले नेतन्याहू ने हूती विद्रोहियों को एक और चेतावनी जारी की, जिसमें समूह के खिलाफ हमला करने की धमकी दी गई। उन्होंने एक वीडियो बयान में कहा, हमने अतीत में हमला किया, हम भविष्य में भी हमला करेंगे। हूती ने तेल अवीव के बाहर बेन गुरियन हवाई अड्डे के मुख्य टर्मिनल की

ओर जाने वाले ड्राइववे पर मिसाइल हमले की जिम्मेदारी ली। सिन्हुआ समाचार एजेंसी ने बताया कि इजरायल और अमेरिका की ओर से तैनात किए गए डिफेंस सिस्टम्स ने मिसाइल को रोकने का प्रयास किया, लेकिन विफल रहे। हमले के परिणामस्वरूप चार लोग मामूली रूप से घायल हुए और उन्हें नुकसान पहुंचा। मिसाइल हमले के बाद कई अंतरराष्ट्रीय एयरलाइनों ने इजरायल से आने-जाने वाली उड़ानें रद्द कर दीं, जिनमें एयर यूरोपा, स्विस इंटरनेशनल एयर लाइन्स, लुफ्थांसा, आईटीए एयरवेज और ब्रुसेल्स एयरलाइंस शामिल हैं। हाल के हफ्तों में हूती ने यमन स्थित अपने ठिकानों पर नए अमेरिकी हवाई हमलों के बीच मिसाइल और ड्रोन हमले तेज कर दिए हैं। उत्तरी यमन के अधिकांश हिस्से पर नियंत्रण रखने वाले हूती ने नवंबर 2023 से इजरायल को निशाना बनाया, जिसे वे गाजा में युद्ध के दौरान फिलिस्तीनियों के साथ एकजुटता का कार्य बताते हैं। समूह ने कहा कि अगर इजरायल अपना सैन्य अभियान समाप्त कर देता है और एन्क्लेव में मानवीय सहायता की अनुमति देता है तो वह अपने हमले रोक देगा।

ईरान ने बंदरगाह विस्फोट में मरने वालों का आंकड़ा घटाकर 57 किया, सुरक्षा चूक के लिए दो लोग हुए गिरफ्तार

एजेंसी

तेहरान। ईरान ने अपने मुख्य वाणिज्यिक बंदरगाह पर पिछले महीने हुए एक बड़े विस्फोट में मरने वालों की संख्या 70 से घटाकर 57 कर दी, जबकि राज्य टेलीविजन ने विस्फोट मामले में दो गिरफ्तारियों की सूचना दी। अर्ध-सरकारी तस्नीम समाचार एजेंसी ने होर्मोज्गान प्रांत के मुख्य न्यायाधीश मोजतबा क़हरेमानी के हवाले से कहा कि 26 अप्रैल को शाहिद राजाई बंदरगाह पर हुए विस्फोट के अद्यतन आंकड़ों में 46 शव बरामद और पहचाने गए हैं तथा 11 लोग अभी भी लापता हैं।

क़हरेमानी ने कहा कि फोरेंसिक जांच में यह पता चलने के बाद कि अलग-अलग एकत्र किए गए कुछ शरीर के अंग एक ही व्यक्ति के थे, प्रारंभिक गिनती कम कर दी गई। उन्होंने कहा कि लापता लोगों की तलाश के लिए एक विशेष कार्य समूह का गठन किया गया है।राज्य टेलीविजन ने अलग से बताया कि विस्फोट मामले में एक सरकारी अधिकारी सहित दो लोगों को गिरफ्तार किया गया है। ईरानी रेड क्रिसेंट सोसाइटी के अनुसार वक्तव्य में सुरक्षा और निष्क्रिय बचाव उपायों का पालन करने में चूक का हवाला दिया गया, जबकि आंतरिक मंत्री एस्कंदर मोमेनी ने

विस्फोट और उसके बाद लगी आग में 1,200 से अधिक लोग घायल हो गए तथा घटनास्थल पर खोज एवं बचाव कार्य समाप्त हो गया। अधिकारियों ने इस घटना के लिए सुरक्षा संबंधी चूक को जिम्मेदार ठहराया है। प्रांतीय संकट प्रबंधन पिछले सोमवार को कुछ लापरवाही का हवाला दिया था। दक्षिणी होर्मोज़्गान प्रांत में स्थित शाहिद राजाई बंदरगाह, ईरान का सबसे बड़ा समुद्री केंद्र है, जो देश के अधिकांश कंटेनर यातायात और कुल व्यापार के आधे से अधिक हिस्से को संभालता है।

पहलगाम हमले के बाद नेपाल-भारत सीमा पर ड्रोन से की जा रही है निगरानी, पहचान पत्र देख कर ही प्रवेश की अनुमति

काठमांडू। भारत के जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले के बाद नेपाल-भारत की सीमा पर सुरक्षा व्यवस्था कड़ी कर दी गई है। अवैध नागरिकों के प्रवेश को रोकने के लिए फोटो युक्त पहचान पत्र दिखाने की व्यवस्था को अनिवार्य किया गया है। इसके अलावा सीमा क्षेत्र में ड्रोन से निगरानी की जा रही है। नेपाल भारत से सटे हुए सभी सीमा नाका पर सुरक्षाबलों ने चौबीस घंटे की गश्त को और तेज कर दिया है। सीमा से प्रवेश करने वाले सभी नागरिकों का पहचान पत्र देखकर ही उन्हें नेपाल की सीमा में प्रवेश करने की अनुमति दी जा रही है। नेपाल सरकार के गृह मंत्रालय द्वारा इस संबंध में निर्देश दिए जाने के बाद भारत से सटी हुई सभी सीमाओं पर सुरक्षा व्यवस्था को चुस्त दुरुस्त किया गया है। नेपाल भारत के मुख्य प्रवेश द्वार के रूप में रहे बीरगंज में पहचान पत्र दिखाकर

ही भारतीय नागरिक को नेपाल में प्रवेश की अनुमति दी जा रही है। बीरगंज के सिटी एसपी गौतम मिश्रा ने बताया कि पहलगाम आतंकी हमले के बाद अवैध रूप से भारत में रह रहे बांग्लादेशी और पाकिस्तानी नागरिकों का नेपाल में प्रवेश ना हो, इसके लिए सूक्ष्म तरीके से निगरानी की जा रही है। उन्होंने कहा कि इस तरह की खुफिया सूचना मिली है कि भारत से अवैध बांग्लादेशी और पाकिस्तानी नागरिकों को वहां की सुरक्षा कर्मियों के द्वारा गिरफ्तार कर वापस भेजे जाने की प्रक्रिया शुरू करने के बाद बड़ी संख्या में अवैध बांग्लादेशी और पाकिस्तानी नागरिकों के नेपाल में प्रवेश की संभावना है। बीरगंज के अलावा जनकपुर जटही सीमा, विराटनगर जोगबनी सीमा, सिलीगुड़ी पानीटंकी सीमा, भैरहवा सुनौली सीमा, नेपालगंज बेलहिया सीमा सहित अन्य छोटी सीमाओं पर भी सशस्त्र प्रहरी बल के द्वारा सूक्ष्म तरीके से निगरानी की जा रही है। दोनों देशों के बीच में खुली सीमा होने के कारण ड्रोन के जरिए भी निगरानी की जा रही है। भारत की सशस्त्र सीमा बल और नेपाल की सशस्त्र प्रहरी बल के बीच समन्वय कर खुली सीमा में ड्रोन से निगरानी की जा रही है ताकि खुली सीमा का फायदा उठाकर कोई भी अवैध बांग्लादेशी या पाकिस्तानी नागरिक नेपाल में प्रवेश न कर सके।

काठमांडू में बारिश के कारण हवाईअड्डा पर उड़ान प्रभावित, कुछ विमान भारत डाइवर्ट

एजेंसी

काठमांडू। त्रिभुवन अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे (टी.आई.ए.) पर भारी बारिश ने आज के उड़ान कार्यक्रम को बाधित कर दिया है। कम दृश्यता (लो विजिबिलिटी) ने न केवल टीआईए बल्कि देश भर के कई अन्य हवाई अड्डों को प्रभावित किया है। टीआईए के प्रवक्ता रिनजी शेरपा के अनुसार, घरेलू और अंतरराष्ट्रीय उड़ानों का संचालन आज भी प्रतिकूल रूप से प्रभावित हुआ है और निर्धारित समय के अनुसार आगे नहीं बढ़ सका।

सुबह, अंतरराष्ट्रीय उड़ानों सहित कई उड़ानों को मौसम की गड़बड़ी के कारण डायवर्ट किया गया है। एयर जज़ीरा के एक विमान को भारत के वाराणसी की ओर मोड़ दिया गया और बुद्ध एयर की निर्धारित माउंटेन फ्लाइट को भी डायवर्ट किया गया है। इसके अलावा, समिट एयर और तारा एयर द्वारा संचालित तीन उड़ानों को उतर यानी लैंड नहीं कर पाने के कारण वापस काठमांडू डायवर्ट किया गया। रामेछाप से लुकला के लिए उड़ान भरने वाले कई विमानों के लैंड नहीं कर पाने के कारण उन्हें फिर से रीरूट करना पड़ा। प्रतिकूल मौसम के कारण काठमांडू-तमखार्का मार्ग पर एक अन्य उड़ान को भी डायवर्ट किया गया है। काठमांडू घाटी में सुबह से ही तेज आंधी के साथ भारी बारिश हो रही है। जल और मौसम विज्ञान विभाग के अनुसार, नेपाल के पश्चिमी दिशा से आए बादलों के कारण जबरदस्त बारिश हो रही है। इसके अलावा बंगाल की खाड़ी से आई नमी से लदी हवा से भी प्रभावित है जिसके कारण मौसम में अचानक बदलाव हुआ है।

यमन में हूतियों के साथ संघर्ष में सरकार समर्थक सैनिक मारे गये

एजेंसी

अदन, यमन। यमन के तेल समृद्ध मारिब प्रांत में सैन्य ठिकानों पर हूती हमले में सरकार समर्थक तीन सैनिकों की मौत हो गई और आठ अन्य घायल हो गए। ने एक सैन्य अधिकारी का हवाला देते हुए यह जानकारी दी। अधिकारी ने बताया कि हूती लड़ाकों ने मुख्य रूप से सरकार के नियंत्रण वाले प्रांत के दक्षिण में हरीब जिले में सेना के ठिकानों पर समन्वित हमला किया। अधिकारी ने कहा, भयंकर झड़पें हुईं और कई घंटों तक जारी रहीं, क्योंकि सरकारी सैनिकों ने व्यापक बचाव अभियान चलाया। उन्होंने कहा कि घायलों को पड़ोसी शबवा प्रांत में चिकित्सा सुविधाओं में स्थानांतरित कर दिया गया है। एक अलग बयान में, सरकार समर्थक बल, सदर्न जायंट्स ब्रिगेड ने कहा कि उसने हमले को विफल कर दिया है और भारी नुकसान पहुंचाया है, दावा किया कि लड़ाई में 12 से अधिक हूती विद्रोही मारे गए या घायल हुए हैं। देश के अन्य हिस्सों में, यमनी सरकारी बलों ने दक्षिणी लाहज प्रांत में हद्द याफ़िया मोर्चे के पास

हौथी ठिकानों पर गोलाबारी की, जिसे अधिकारियों ने हाल ही में हूती तोपखाने के हमलों का बदला बताया। लाहज में झड़पों के दो दिन बाद फिर से हिंसा हुई जिसमें दो सरकारी सैनिक मारे गए और पाँच घायल हो गए। सरकारी सूत्रों ने कहा कि उन्होंने उस टकराव में चार हौथी लड़ाकों को मार गिराया और 13 अन्य को घायल कर दिया। हूती समूह ने हाल ही में हुई झड़पों के बारे में कोई बयान जारी नहीं किया है। यह सरकार समर्थक ताकतों के साथ अपने जुड़ाव के बारे में शायद ही कभी विवरण देता है। वर्ष 2014 में राजधानी सना पर कब्ज़ा करने वाला यह समूह एक दशक से भी ज़्यादा समय से अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त सरकार से लड़ रहा है। सैन्य विश्लेषकों का कहना है कि बढ़ती झड़पें उत्तरी यमन में हौथी-नियंत्रित क्षेत्रों को पुनः प्राप्त करने के उद्देश्य से व्यापक हमले के लिए सरकार की तैयारी का संकेत दे सकती हैं। उनका सुझाव है कि इस अभियान को क्षेत्रीय सहयोगियों और संयुक्त राज्य अमेरिका से समर्थन मिल सकता है, जिसने हाल के दिनों में हौथी-नियंत्रित क्षेत्र पर हवाई हमले बढ़ा दिए हैं।

हमास ने गाजा पर इजरायली हमले में कथित रूप से घायल हुए बंधक का वीडियो किया जारी

एजेंसी

गाजा। फ़िलिस्तीन में विद्रोही संगठन हमास की सैन्य शाखा अल-क़स्साम ब्रिगेड की ओर से जारी किये गए एक नये वीडियो में एक बंधक दिखाई दे रहा है जो कथित तौर पर गाज़ा पट्टी में इजरायली हवाई हमले में घायल हुआ है। इस वीडियो में नकाबपोश हमास के लड़ाके एक सुरंग के अंदर एक परेशान दिख रहे बंधक पर चिल्लाते नजर आते हैं। बंधक ने कहा, मैं बंधक नंबर 24 हूं। संघर्षविराम खत्म होने के बाद हम पर बमबारी हुई, किसी तरह बचकर सुरंग में गए, लेकिन वहां भी फिर से बमबारी हुई।बंधक ने इजरायली सरकार की रणनीति की आलोचना करते हुए कहा, मेरी हालत गंभीर है, दवाइयों का कोई उपाय नहीं है, और चिकित्सा सहायता मिलना नामुमकिन है। मुझे नहीं पता कि मेरे साथी के साथ क्या हुआ। बंधक ने इजरायली

नागरिकों से अपील की कि वे प्रधानमंत्री नेतन्याहू के प्रशासन पर दबाव डालें और बंधकों की रिहाई के लिए बंदी अदला-बदली की मांग करें इजरायल के सार्वजनिक प्रसारक कान ने बंधक की मैक्सिम हर्किन के रूप में पहचान की है, जो गाज़ा में कैद है। यह हर्किन का हमास की ओर से जारी किया गया दूसरा वीडियो है।

नेपाल पुलिस की वेबसाइट हैक, 20 लाख नागरिकों का डेटा चोरी

एजेंसी

काठमांडू। नेपाल पुलिस की आधिकारिक वेबसाइट हैक हो गई है। साइबर अपराधियों ने 20 लाख से अधिक नागरिकों का डेटा चोरी कर लिया है। नागरिकों की संवेदनशील डेटा चोरी होने से सरकार की चिंता बढ़ गई है। पुलिस प्रवक्ता के मुताबिक, केएजेडयू नाम के हैकर समूह ने उनकी आधिकारिक वेबसाइट को हैक कर लिया है।

रोमानिया में राष्ट्रपति चुनाव की पुनरावृत्ति के लिए मतदान, राजनीतिक संकट के बीच लोकतंत्र की परीक्षा

एजेंसी

बुखारेस्ट। रोमानिया में राष्ट्रपति चुनाव की पुनरावृत्ति के लिए मतदान संपन्न हुआ, जो देश के हाल के दशकों के सबसे बड़े राजनीतिक संकट के बाद कराया गया। यूरोपीय संघ और नाटो सदस्य देश रोमानिया में यह चुनाव उस समय दोबारा कराया गया जब पिछले वर्ष हुए चुनाव को अदालत ने चुनावी गड़बड़ियों और रूस की कथित दखलंदाजी के चलते अमान्य घोषित कर दिया था। हालांकि, रूस ने इन आरोपों से साफ इनकार किया है। चुनाव आयोग के अनुसार, स्थानीय समयानुसार रात 9 बजे मतदान समाप्त होने के साथ ही मतगणना का कार्य शुरू हो गया। प्रारंभिक आंकड़ों के मुताबिक लगभग 95.7 लाख मतदाताओं, यानी कुल योग्य मतदाताओं के 53.2 प्रतिशत, ने अपने मताधिकार का प्रयोग किया। विदेशों में बनाए गए मतदान केंद्रों पर भी लगभग 9.73 लाख मत डाले गए। इस पुनर्निर्वाचन में कुल 11 उम्मीदवारों ने भाग लिया और अब 18 मई को होने वाले संभावित दूसरे दौर की तैयारी शुरू हो गई है।

जनमत सर्वेक्षणों के अनुसार, कट्टर राष्ट्रवादी और दूर-दराज़ विचारधारा वाले उम्मीदवार जॉर्ज सिमियन का दूसरे दौर में पहुंचना लगभग तय माना जा रहा है। संभावना जताई जा रही है कि उनका मुकाबला या तो बुखारेस्ट के मेयर निकुसोर डैन या सत्तारूढ़ गठबंधन के उम्मीदवार क्रिन एंटोनेसकु से हो सकता है। चुनाव के दौरान सिमियन ने पूर्व उम्मीदवार कैलिन जॉर्जेस्कु के साथ राजधानी बुखारेस्ट के एक मतदान केंद्र पर उपस्थित होकर कहा, ÷हमारा मिशन स्पष्ट है- संवैधानिक व्यवस्था की वापसी और लोकतंत्र की पुनर्स्थापना। मेरा एकमात्र लक्ष्य है कि रोमानियाई जनता के लिए पहला स्थान सुनिश्चित किया जाए। वहीं, चुनाव से बाहर किए गए कैलिन जॉर्जेस्कु ने इस पुनः चुनाव को एक संगठित धोखाधड़ी करार देते हुए कहा कि यह उन लोगों द्वारा रचा गया है जो धोखे को राज्य की नीति बना चुके हैं। बावजूद इसके उन्होंने लोकतंत्र की ताकत और मत की शक्ति को स्वीकार करने की बात भी कही।

पुतिन ने जताई उम्मीद, यूक्रेन में परमाणु हथियारों की जरूरत नहीं पड़ेगी

एजेंसी

मॉस्को। रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने यूक्रेन युद्ध को लेकर महत्वपूर्ण बयान देते हुए कहा है कि अब तक परमाणु हथियारों के इस्तेमाल की आवश्यकता नहीं पड़ी है और वह आशा करते हैं कि भविष्य में भी इसकी जरूरत नहीं होगी। यह बयान रूसी राज्य टेलीविजन द्वारा प्रसारित एक वृत्तचित्र में सामने आया, जिसमें पुतिन के सत्ता में 25 वर्षों की यात्रा को दर्शाया गया है। पुतिन ने कहा, हमारे पास 2022 में शुरू किए गए विशेष सैन्य अभियान को रूस के अनुकूल परिणाम तक पहुंचाने की पर्याप्त ताकत और संसाधन हैं। उन्होंने यह भी जोड़ा कि परमाणु हथियारों की आवश्यकता नहीं पड़ी है... और मेरी आशा है कि आगे भी नहीं पड़ेगी। इस बयान के साथ पुतिन ने एक बार फिर यूक्रेन युद्ध को विशेष सैन्य अभियान करार दिया, न कि पूर्ण पैमाने पर युद्ध। उन्होंने स्पष्ट किया कि 2014 में जब रूस ने क्रीमिया पर कब्जा किया था।

कौमी पत्रिका

संपादक-गुरचरन सिंह बब्बर

स्वामी मुद्रक एवं प्रकाशक, गुरचरन सिंह बब्बर ने कौमी पत्रिका प्रिंटिंग प्रेस, सेक्टर ए-4/ए-144 इंडस्ट्रीयल एरिया ट्रोनिका सिटी लोनी (गाजियाबाद), उत्तर प्रदेश से छापकर प्रकाशित किया।

Corporate Office:
5, Bahadurshah Zafar Marg
ITO, New Delhi-110002

फोन : 011-41509689, 23315814
मोबाइल नंबर : 9312262300

E - mail address : qpatrika@gmail.com
Website: www.qaumipatrika.in

R.N.I. No. UP-HIN/2007/21472

Legal Advisors:
Advocate Mohd. Sajid
Advocate Dr. A.P.Singh
Advocate Manish Sharma
Advocate Pooja Bhaskar Sharma

पुलिस से बचने के लिए बांग्लादेशी बने ट्रांसजेंडर, चार गिरफ्तार

एजेंसी

नई दिल्ली। उत्तर-पश्चिम जिले की फॉरेन्सं सेल की टीम ने एक बड़ी कार्रवाई करते हुए आजादपुर सब्जी मंडी इलाके से चार अवैध रूप से भारत में रह रहे बांग्लादेशी नागरिकों को गिरफ्तार किया है। ये सभी संदिग्ध अपने को ट्रांसजेंडर बताकर दिल्ली की सड़कों पर भीख मांगने और अन्य गतिविधियों में संलिप्त थे। उत्तर पश्चिमी जिले के डीसीपी भीष्म सिंह ने बताया कि पुलिस को खुफिया जानकारी मिली थी कि कुछ अवैध बांग्लादेशी नागरिक ट्रांसजेंडर के रूप में पहचान छुपाकर दिल्ली में सक्रिय हैं। सूचना को पुख्ता कर जिले की फॉरेन्सं सेल ने महेन्द्रा पार्क थाना क्षेत्र में विशेष अभियान चलाया। इंस्पेक्टर विपिन कुमार की देखरेख में पुलिस टीम ने इलाके में जाल बिछाया और आजादपुर सब्जी मंडी के पास से चारों आरोपियों को गिरफ्तार किया। तलाशी के दौरान आरोपियों के पास से दो मोबाइल फोन बरामद हुए। इन मोबाइल फोन में प्रतिबंधित आईएमओ ऐप इंस्टॉल था। पूछताछ में आरोपियों ने बताया कि वे बांग्लादेश से अवैध रूप से भारत में घुसे थे। उन्होंने अपनी पहचान छुपाने के हार्मोनल इंजेक्शन और मामूली सर्जरी करवाई थी। पकड़े गए आरोपितों की पहचान अरमान उर्फ ईशा (21), आरिफ उर्फ शिल्पा (26), जाहिद उर्फ मौसमी (21), और बाबुल उर्फ पाखी (40) के रूप में हुई है।

आतंकवादियों को सरकार ऐसा जवाब देगी कि उनकी आने वाली पीढ़ियां याद रखेंगीः कुलजीत चहल

नई दिल्ली। एनडीएमसी के उपाध्यक्ष कुलजीत चहल ने पहलगाम आतंकी हमले पर कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सरकार आतंकवाद के खिलाफ हमेशा कड़ा जवाब देती है और पाकिस्तान को इस बार भी करारा जवाब दिया जाएगा। देश के लोग जो चाहते हैं, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी दुश्मनों को उसी भाषा में जवाब देंगे। केंद्रीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह के इस बयान पर कुलजीत चहल ने कहा कि पाकिस्तान ने जो गलती की है, उसकी कीमत उसे चुकानी पड़ेगी। एक बड़ा कदम उठाया जाएगा, जिसे देश और दुनिया देखेगी। और जो आतंकवादी हैं या आतंकवाद का समर्थन करते हैं, उन्हें ऐसा जवाब मिलेगा कि उनकी आने वाली पीढ़ियां भी इसे याद रखेंगी।रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा था कि मैं देशवासियों को आश्वस्त करना चाहता हूं कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में जैसा आप चाहते हैं, वैसा होकर रहेगा। देश के लोग जो चाहते हैं, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी दुश्मनों को उसी भाषा में जवाब देंगे।

संस्कृत मजबूत होगी तो बाकी भाषाएं भी मजबूत होंगी : केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह

एजेंसी

नई दिल्ली। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कहा कि संस्कृत भाषा और भारतीय संस्कृति के पुनरुत्थान के लिए संघ और संस्कृत भारती ने एक मजबूत अभियान शुरू किया है। उन्होंने स्पष्ट किया कि सरकार किसी भी भाषा का विरोध नहीं करती, बल्कि सभी भाषाओं को सशक्त बनाना चाहती है। यह बातें शाह ने संस्कृत भारती द्वारा आयोजित 1008 संभाषण शिविरों के समापन समारोह में कहीं। अमित शाह ने कहा कि संस्कृत अधिकांश भारतीय भाषाओं की जननी है। यदि संस्कृत मजबूत होगी तो बाकी भाषाएं भी मजबूत होंगी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में संस्कृत को बढ़ावा देने के लिए कई योजनाएं चलाई जा रही हैं। नई शिक्षा नीति में भी संस्कृत के लिए विशेष प्रावधान किए गए हैं। शाह ने कहा कि संस्कृत के अमृत ज्ञान को सरल भाषा में दुनिया तक पहुंचाना जरूरी है। उन्होंने सभी से अपील की कि संस्कृत भाषा के प्रचार-प्रसार में सहयोग करें। उन्होंने

बताया कि सरकार ने पांडुलिपियों के संरक्षण और डिजिटाइजेशन के लिए 500 करोड़ रुपये का बजट तय किया गया है। इस मौके पर दिल्ली के मुख्यमंत्री ने भी विचार रखे। उन्होंने कहा कि इन शिविरों में हजारों लोगों ने भाग लिया, जो मातृभूमि के प्रति समर्पण का प्रतीक है। मुख्यमंत्री ने कहा कि संस्कृत को कठिन मान लिया गया है, जबकि यह सबसे वैज्ञानिक भाषा है। आज दुनिया के 60 विश्वविद्यालयों में संस्कृत पढ़ाई जा रही है। संस्कृत की उपयोगिताओं को देखते हुए संस्कृत भारती ने दिल्ली के लोगों को संस्कृत बोलने का विशाल प्रशिक्षण शिविर चलाया। दिल्ली के सभी जिलों में 1008 स्थानों पर 23 अप्रैल से 03 मई तक संस्कृत संभाषण शिविरों का संचालन किया। दस दिनों तक रोजाना दो घंटे व्यवहारिक तरीकों से संस्कृत बोलना सिखाया गया। शिविरों के जरिए करीब 20 हजार प्रतिभागियों ने लिया। संस्कृत बोलना सीखने को लेकर प्रतिभागियों में उत्साह रहा। विभिन्न उम्र वर्ग के प्रतिभागी बच्चे, बड़े, बुजुर्ग, नौकरीशुदा, व्यापारी व गृहणियों ने संस्कृत बोलने का प्रशिक्षण लिया। प्रशिक्षण की खास बात यह रही कि दिल्ली के अलावा उत्तर प्रदेश, हरियाणा व राजस्थान के शिक्षकों ने प्रतिभागियों को संस्कृत का व्यवहारिक ज्ञान दिया और उनकी शंकाओं का समाधान किया।

एनडीएमसी प्रतिदिन एक घंटे का मेगा स्वच्छता अभियान- 'श्रमदान ' चलाएगी

एजेंसी

नई दिल्ली। नई दिल्ली नगरपालिका परिषद (एनडीएमसी) अपने सभी 14 स्वच्छता सर्किलों में 'श्रमदान' के रूप में नई दिल्ली क्षेत्र में एक मेगा स्वच्छता अभियान शुरू करने जा रही है। इस पहल में एनडीएमसी के हर विभाग के सभी कर्मचारी शामिल होंगे, जो प्रतिदिन सुबह 8:00 से 9:00 बजे तक भाग लेंगे और इसमें उत्साही आम जनता और क्षेत्रीय निवासी भी शामिल होंगे। एनडीएमसी के अध्यक्ष केशव चंद्र के अनुसार यह केवल एक अभियान नहीं है। यह पूरे शहर में बदलाव का प्रयास है। इसमें प्रत्येक कर्मचारी और प्रत्येक नागरिक का योगदान महत्वपूर्ण है। सभी कर्मचारियों द्वारा प्रतिदिन केवल एक घंटा देने और हमारे नोडल अधिकारियों के सक्रिय सहयोग से, यह परिवर्तन स्पष्ट, प्रभावशाली और स्थायी महत्व का होगा। उन्होंने कहा कि यह अभूतपूर्व नागरिक पहल पहली बार की जा रही है, जब एनडीएमसी का प्रत्येक कर्मचारी नियमित कार्यालय कार्य शुरू करने से पहले एक घंटे की फील्ड में सफाई के प्रयास में शामिल होगा। जिससे अब यह प्रयास एनडीएमसी द्वारा अब तक चलाए गए सबसे बड़े नागरिक स्वच्छता अभियानों में से एक बन जाएगा। उन्होंने आगे कहा कि श्रमदान अभियान के कुशल क्रियान्वयन और इसमें जवाबदेही सुनिश्चित करने के लिए, 14 विभागाध्यक्षों को नोडल अधिकारी के रूप में नामित किया गया है। जिनमें से प्रत्येक एक स्वच्छता सर्कल के लिए जिम्मेदार है। ये अधिकारी सभी फील्ड गतिविधियों का समन्वय करेंगे, कर्मचारियों की तैनाती की निगरानी करेंगे। स्वच्छता प्रयासों की निगरानी करेंगे और फील्ड में दैनिक रिपोर्टिंग और अनुपालन सुनिश्चित करेंगे। इस अभियान के लिए संसाधन जुटाने और रसद के रूप में एनडीएमसी ने स्वच्छता उपयोगी और सूचना, शिक्षा, संचार सामग्री की व्यापक आपूर्ति की व्यवस्था भी की है।

'दूसरी FIR दर्ज करने की जरूरत नहीं', बदलापुर एनकाउंटर मामले में सुप्रीम कोर्ट ने हाई कोर्ट के आदेश पर लगाई रोक

एजेंसी

नई दिल्ली । सुप्रीम कोर्ट ने बदलापुर एनकाउंटर मामले में राज्य सरकार को बड़ी राहत दी। पीठ ने बदलापुर एनकाउंटर मामले में कथित तौर पर दोषी पुलिसकर्मियों पर एफआईआर दर्ज करने के बॉम्बे हाई कोर्ट के आदेश पर रोक लगा दी है। दरअसल, पिछले साल ठाणे जिले के बदलापुर में नाबालिग मासूम बच्ची का यौन शोषण किया गया था। इसके बाद आरोपी अक्षय शिंदे को 23 सितंबर 2024 को पुलिस एनकाउंटर में मारा गया था। इस मामले को लेकर अक्षय शिंदे के परिवार की तरफ से बॉम्बे हाई कोर्ट में एक याचिका दायर की गई और उन्होंने ठाणे पुलिस पर फर्जी एनकाउंटर का आरोप लगाया। बॉम्बे हाई कोर्ट ने सुनवाई के दौरान प्राथमिक तौर पर इस एनकाउंटर को संदिग्ध मानते हुए दोषी पुलिसकर्मियों पर एफआईआर दर्ज करने का आदेश दिया था।

इसके साथ ही पिछले हफ्ते कोर्ट ने ठाणे पुलिस कमिश्नर को फटकार लगाते हुए 4 घंटे में इसका जवाब

मांगा था। इस मामले को लेकर राज्य सरकार की तरफ से सुप्रीम कोर्ट का रुख किया गया। अदालत ने सोमवार को इस मामले में सुनवाई करते हुए राज्य सरकार और ठाणे पुलिस को बड़ी राहत दी।

अदालत ने कथित तौर पर दोषी पुलिसकर्मियों पर एफआईआर दर्ज करने के बॉम्बे हाई कोर्ट के आदेश पर रोक लगा दी। कोर्ट ने कहा कि इसकी जांच की जा सकती है, लेकिन दूसरी एफआईआर दर्ज करने की कोई जरूरत नहीं है। बता दें कि सफाई कर्मचारी अक्षय शिंदे पर दो नाबालिग लड़कियों का यौन उत्पीड़न करने का आरोप था। बाद में शिंदे पुलिस एनकाउंटर में मारा गया था। जानकारी के अनुसार, अक्षय शिंदे को तलोजा जेल से बदलापुर स्थानांतरित किया जा रहा था। इसी दौरान कथित तौर पर उसने एक पुलिसकर्मी से हथियार छीनकर गोली चला दी थी। पुलिस की ओर से जवाबी कार्रवाई में वह घायल हो गया था और बाद में इलाज के दौरान अस्पताल में उसकी मौत हो गई थी।

देश के कई राज्यों में आठ मई तक आंधी-तूफान और बरसात का पूर्वानुमान, ओडिशा के लिए आज का दिन भारी

एजेंसी

नई दिल्ली। भारत मौसम विज्ञान विभाग ने राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली-एनसीआर समेत देश के कई हिस्सों में आगामी 08 मई तक आंधी-तूफान, बारिश, ओलावृष्टि और आसमानी बिजली गिरने का पूर्वानुमान जारी किया है। मौसम विज्ञानी डॉ. संजीव द्विवेदी ने कहा कि आज ओडिशा में भारी बरसात हो सकती है। इसकी चेतावनी पहले ही जारी की जा चुकी है। उन्होंने कहा कि इस चेतावनी के दायरे में ओडिशा के मयूरभंज, क्योंझर, बालासोर, भद्रक और गजपति जिला शामिल हैं। इस दौरान ओलावृष्टि भी हो सकती है। कल भी ऐसा ही मौसम रह सकता है। 07-08 मई को हलकी बारिश होने का पूर्वानुमान है। भारत मौसम विज्ञान विभाग ने कहा कि ओडिशा, पश्चिम बंगाल के गंगा के तटवर्ती इलाकों के साथ ही देश के पूर्व मध्य और पूर्वी इलाकों में गरज के साथ वर्षा की मौजूदा गतिविधियों में सात मई के बाद से कुछ कमी आ सकती है। हिमाचल प्रदेश में ऑरेंज अलर्ट के बीच पिछले 24 घंटों में कई जगह तेज बारिश के साथ ओले गिरे हैं। चंबा जिले के चेली गांव के डोंडरा नाला में शनिवार रात बादल फटने से एक बुजुर्ग नाले में बह गया। उसका शव बरामद कर लिया गया है। सुबह 8:30 बजे तक 24 घंटे के दौरान पूर्वी राजस्थान, मध्य भारत, ओडिशा और झारखंड में कुछ स्थानों पर 70-100 किलोमीटर प्रति घंटे की गति से हवा चलीं और कुछ जगहों पर धूल भरी आंधी आई। गुजरात, जम्मू-कश्मीर, लद्दाख, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, पंजाब, पूर्वी उत्तर प्रदेश, पश्चिमी राजस्थान में भी 40-70 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से हवाएं चलीं। पश्चिम बंगाल के गंगा के तट वाले इलाकों, बिहार, अरुणाचल प्रदेश, असम और मेघालय, नागालैंड, त्रिपुरा, तमिलनाडु पुडुचेरी, केरल , उत्तर आंतरिक कर्नाटक, तटीय आंध्र प्रदेश और तेलंगाना में अलग-अलग स्थानों पर आंधी-तूफान का असर रहा। उत्तराखंड, पश्चिमी राजस्थान, मध्य प्रदेश, विदर्भ, छत्तीसगढ़ में कुछ स्थानों स्थानों पर ओलावृष्टि हुई। ओडिशा और मेघालय में कई जगह भारी वर्षा हुई। इससे तापमान में गिरावट दर्ज की गई। मौसम वैज्ञानिकों के अनुसार, उत्तरी पाकिस्तान और उससे सटे पंजाब और उत्तर-पश्चिम राजस्थान में पश्चिमी विक्षोभ बना हुआ है। इसके प्रभाव से 10 मई तक जम्मू-कश्मीर, लद्दाख, हिमाचल, उत्तराखंड, पंजाब, हरियाणा, चंडीगढ़ और दिल्ली, उत्तर प्रदेश में तेज हवाओं के साथ मध्यम बारिश हो सकती है। इस दौरान राजस्थान में भी छिटपुट बारिश होने की संभावना है।

राहुल गांधी हिंदू हैं या नहीं, इसका निर्णय शंकराचार्य करेंगे - आचार्य प्रमोद कृष्णम

एजेंसी

गाजियाबाद। ज्योतिर्मठ के शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद के राहुल गांधी पर दिए गए बयान ने विवाद खड़ा कर दिया है। उन्होंने राहुल गांधी को हिंदू धर्म से निष्कासित करने को लेकर बयान दिया था। इस मामले पर कांग्रेस के पूर्व नेता आचार्य प्रमोद कृष्णम ने कहा कि राहुल गांधी के हिंदू होने या न होने का निर्णय केवल शंकराचार्य जी ही ले सकते हैं। आचार्य प्रमोद कृष्णम ने कहा, राहुल गांधी हिंदू हैं या नहीं, इसका निर्णय शंकराचार्य जी की बात है, मंदिर भगवान के द्वार हैं और भगवान के द्वार पर कोई भी जा

सकता है। भगवान के द्वार पर वो भी आ सकता है, जो भगवान को नहीं मानता है। राहुल गांधी को मंदिर जाने से रोकने वाले बयान का मैं समर्थन [illegible] धर्म में किसी भी समुदाय के व्यक्ति, चाहे वह मुस्लिम हो या ईसाई, मंदिर में दर्शन के लिए जा सकता है। यह सनातन धर्म की 'वसुधैव कुटुंबकम' की भावना को दर्शाता है। यूपी कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष अजय राय के बयान को लेकर भी आचार्य प्रमोद ने तीखी प्रतिक्रिया दी। उन्होंने कहा कि यह बयान अजय राय का नहीं, बल्कि राहुल गांधी का है। उन्होंने आरोप लगाया कि संविधान का अपमान ने बुलवाया होगा। इस तरह के बयान कांग्रेस की कार्यशैली का हिस्सा हैं। राहुल गांधी के ब्राउन यूनिवर्सिटी में दिए गए बयान को लेकर भी आचार्य प्रमोद ने तंज कसा। उन्होंने कहा कि राहुल गांधी न तो 'राम-राम' बोलते हैं, न 'जय श्री कृष्ण' कहते हैं, न 'वंदे मातरम' का उच्चारण करते हैं और न ही 'जय श्री राम' का नारा लगाते हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि राहुल गांधी हमेशा से भगवान राम को

PUBLIC NOTICE

IT is for general information that I Narjis Husain W/O Roomy Fakhrul Naqvy R/O H:NO-135/30 THIRD FLOOR, LANE NO-3, GHAFFAR MANZIL, JAMIA NAGAR, NCT OF DELHI, 110025,declare that name of mine has been wrongly written as Narjis Hussain in my minor son namely Yashar Naqvy aged 17 years in his 10th class educational document .The actual name of mine is NARJIS HUSAIN, which may be amended accordingly .

NAME CHANGE

It is for general information that I, PAWAN KUMAR CHAUHAN S/o JAGDISH PRASAD, R/o 60-A, Near G.T. Road, Rajbagh Colony, Sahibabad, Shalimar Garden, Ghaziabad, Uttar Pradesh-201005, declare that name of mine has been wrongly written as PAWAN KUMAR in my Service Record. The actual name of mine is PAWAN KUMAR CHAUHAN, which may be amended accordingly.

NAME CHANGE

I, VARUN BALI S/o ANIL BALI, R/o D-1/28-3B/TF, D-1 Block Extn., Palam Extention Part-1, Delhi-110077, have changed the name of my minor son NITYAM BALI aged 04 years and he shall be hereafter known as ATHARV BALI.

NAME CHANGE

I, KIRAN SINHA W/o SATISH KUMAR, residing at RZ-371/4, FF, Gali No.-10, Rajnagar-2, Palam Colony, New Delhi-110077, have changed my name from KIRAN SINHA to KIRAN KUMARI, for all future purposes.

NAME CHANGE

I, MANGAL is legally mother of No. 2808908Y Rank-SEP Name- JADHAV VAIBHAV ASHOK, R/O C-52 SARASWATTI KARPE CHWAL, ROOM NO-03, HILL ROAD, NEAR MOHAN NAGAR AT CHUNABHATTI, POST CHUNABHATTI, TEH NEHARU NAGAR KURLA, DIST -MUMBAI, State - MAHARASHTRA, PIN-400022, have changed my name from MANGAL to MANGAL ASHOK JADHAV and date of birth from 10/10/1972 to 10/10/1970 for all future purposes. Vide affidavit dated 15.04.2025 before Public Notary Delhi.

NAME CHANGE

I, SUNEETA is legally mother of No. 2508909F Rank-SEP Name- GADHE BALASAHEB JAYWANTA, R/O VILL BHOYARE PATHAR, POST-BHOYARE PATHAR, TEH- NAGAR, DIST AHMEDNAGAR, STATE- MAHARASHTRA, PIN-414005 have changed my name from SUNEETA 10 GADHE SUNITA JAYWANTA and date of birth from 20/04/1996 to 01/01/1973 for all future purposes. Vide affidavit dated 15.04.2025 before Public Notary Delhi.

NAME CHANGE

It is for general information that I, RIHAN ALVI S/o MALUA, R/o 545, Shastri Mohalla, Patparganj, East Delhi, Delhi - 110091, declare that name of mine and my father has been wrongly written as CHAND BABU and KALUA in my All Educational Documents , Birth Certificate No. MCDOLIR – 0114 – 005950199, Driving License No. DL-0720140205341and OBC Certificate No. OBC/88/882/17812/23/1/2012/8821101491 The actual name of mine and my Father are RIHAN ALVI and MALUA, which may be amended accordingly.

NAME CHANGE

I, Nirmal jha S/O Krishna Kumar Jha R/O 714, Siena Tower, Mahagun Moderne, Sector-78, Noida Gautam Budh Ngar, Uttar Pradesh-201301 Have changed my name to Nirmal Kumar Jha for all future purposes.

NAME CHANGE

I, hitherto known as VIPIN S/O DEVENDER KUMAR R/O RZ-6/A, GALI NO-2, KAILASH PURI EXTN., PALAM COLONY, SOUTH WEST DELHI, DELHI-110045 have changed my name and shall hereafter be known as VIPIN SHARMA.

NAME CHANGE

It is for general information that I, M CHITTI BABU S/O M MADHAVA RAO R/O B-47, TYPE-2, MINTO ROAD COMPLEX, DARYA GANJ, CENTRAL DELHI, DELHI-110002, declare that name of mine and my wife has been wrongly written as MOPI DEVI CHITI BABU and LAKSHMI KANTAM in my PPO NO-20137030290871. The actual name of mine and my wife are M CHITTI BABU and MOPIDEVI LAKSHMI KANTAM, which may be amended accordingly.

NAME CHANGE

I, AJAY PRATAP SINGH S/O VIRENDRA SINGH R/O Near Pacific World School, La Residentia, GH-06A, Tower-04, Flat No. 703, Techzone-04, PO: Surajpur, Dist: Gautam Buddha Nagar, Uttar Pradesh - 201306 have changed the name of my minor Daughter AANAYA CHAUHAN aged 6 years and she shall hereafter be known as AMORA SINGH.

NAME CHANGE

I, AJAY PRATAP SINGH S/O VIRENDRA SINGH R/o Near Pacific World School, La Residentia, GH-06A, Tower-04, Flat No. 703, Techzone-04, PO: Surajpur, Dist: Gautam Buddha Nagar, Uttar Pradesh - 201306 have changed the name of my minor son YUVAAN SINGH CHAUHAN aged 3 years and he shall hereafter be known as AGASTYA SINGH.

NAME CHANGE

I hitherto known as JYOTI RUNGTA alias JYOTI GUPTA D/o MAHAVIR PRASAD RUNGTA W/o ANKUR GUPTA residing at E -19, Pushpanjali Farms, New Delhi, Bijwasan, South West Delhi, Delhi - 110081 have changed my name and shall hereafter be known as JYOTI GUPTA.

NAME CHANGE

I hitherto known as SHRUTI RUNGTA alias SHRUTI JAIN D/o MAHABIR PRASAD RUNGTA W/o GAURAV JAIN residing at 32/1, Hanuman Lane, New Delhi, G.P.O, New Delhi, Delhi - 110001 have changed my name and shall hereafter be known as SHRUTI JAIN.

NAME CHANGE

I, ANJU TIWARI W/O BHARAT SHARMA R/O T-249,SHUKAR BAZAR ROAD, UTTAM NAGAR, DWARKA, DELHI-110059 have changed my name to ANJU SHARMA for all future purpose.

NAME CHANGE

I, Punam Shankarwal D/o Jagdish Narain R/o Shree Homes, 9/91A, 4th Floor, Rajendra Nagar, Near Angoori Park, Sector-3, Sahibabad, Ghaziabad, Uttar Pradesh-201005, have changed my name and shall hereafter be known as Adayaa Gur Saibhang.

NAME CHANGE

I, SWATI BHARDWAJ Wife of KARAN ANAND residing at D-138, NEW RAJINDER NAGAR, DELHI-110060 Have changed my name to SWATI KARAN ANAND for all future purpose.

NAME CHANGE

I, RAJIV KUMAR Son of PURAN MAL AGGARWAL residing at G-403, JHULELAL APPARTMENT, ROAD NO-44, PITAMPURA, SARASWATI VIHAR, DELHI-110034 Have changed my name to RAJIV AGGARWAL, for all future purpose.

NAME CHANGE

I, SHAKEEL AHMAD ANSARI S/O ABDUL HAMID R/O H NO 754 GALI NO 29 JAFRABAD DELHI 110053 HAVE CHANGED MY NAME SHAKEEL AHMAD FOR ALL FUTURE PURPOSE

NAME CHANGE

I hitherto known as Ravi alias Jagatpal S/O Shivratan R/O 182,DIESEL SIDE, VTC SHAKUR BASTI, District: North West Delhi,: Delhi, 110034,have changed my name and shall hereafter be known as JAGATPAL.

NAME CHANGE

I, SUNITA RANI ANAND Wife of RAKESH ANAND residing at D-138, NEW RAJINDER NAGAR, DELHI-110060 Have changed my name to SUNITA RAKESH ANAND for all future purpose.

NAME CHANGE

I, GRANDHI SRAVANI Wife of No.-14674648Y Rank-HAV Name-BALAJI VELAGA residing at VILL & PO-KOTANANDURU, TEHSIL-TUNI, DISTT-EAST GODAVARI, ANDHRA PRADESH-533407, have changed my name from GRANDHI SRAVANI to VELAGA SRAVANI for all future purposes vide Affidavit dated 05/05/2025 before Notary Public, Delhi.

NAME CHANGE

I, RITU W/O ASHOK KUMAR, R/O 166/40, GROUND FLOOR, C. R. PARK, POCKET 40,NEW DELHI 110019,HEREBY DECLARE THAT MY SON'S NAME HAS BEEN CHANGED FROM HIMESH TO HIMESH MIGLANI FOR ALL PURPOSES.

NAME CHANGE

I, ARCHANA JHA D/O MAHENDRA NARAIN JHA R/O 58 A, POCKET-C, MAYUR VIHAR, PHASE-2, PATPARGANJ, EAST DELHI, DELHI - 110091, I have changed my name from ARCHANA TO ARCHANA JHA for all future purpose.

NAME CHANGE

I Amisha Sarki D/o Mantu Sarki R/o C-394, 1st Floor, Mohan Gali, Nanak Chand Basti, Kotla Mubarakpur, Lodhi Road, Central Delhi, Delhi-110003 That i have Embraced ISLAM and Renounced HINDUISM w.e.f. 31/07/2024 and also changed my name from Amisha Sarki to Amal Khan for all future purposes.

NAME CHANGE

I hitherto known as Poonam Devi alias Shila W/O Rajender Kumar, R/O A-244, INDIRA COLONY JHUGGI CAMP, TRI NAGAR, North West Delhi, Delhi-110035,have changed my name and shall hereafter be known as SHILA.

NAME CHANGE

I hitherto known as I, Anjali Verma D/O Ashok Kumar Verma R/O 527/19, 1ST Floor DDA Flats Madangir Dr Ambedkar Nagar South Delhi 110062 have changed my name and shall hereafter be known as Anjali Mary.

NAME CHANGE

I, No-13768286L Rank-NK Name-RAJU BISWAKARMA residing at VILL-GULMA KHARI PO-CHAMPASARI, TEHSIL-SILIGURI, DIST-DARJEELING, WEST BENGAL-734003, have changed my daughter's name from REZINA BISHWAKARAMA to REZINA BISHWAKARAMA for all future purposes vide Affidavit dated 05/05/2025 before Notary Public Delhi.

NAME CHANGE

I, KANWAR SIMRAN SINGH son of MAHINDER PAL SINGH CHAUHAN residing at H NO- E-288, GREATER KAILASH PART-2, DELHI-110048 Have changed my name to KANWAR SINGH CHAUHAN, for all future purpose.

NAME CHANGE

I, Sahil Ahmad s/O Mohammad Naeem, R/O C-23/B, G/F, Old Jasola Village, New Friends Colony, PO:New Friends Colony, DIST:South Delhi, Delhi, 110025,HEREBY DECLARE THAT MY FATHER NAME HAS BEEN CHANGED FROM MOHD NAIM TO Mohammad Naeem, FOR ALL PURPOSES.

NAME CHANGE

I, SANTOSH DEVI is mother of No. JC282674L Rank- SUB (CLK SD), Name- VEDPAL R/o H NO-593/11, KABIR COLONY, JIND ROAD, ROHTAK, HARYANA-124001 have changed my name from SANTOSH DEVI to SANTOSH for all future purposes. And in my son service record my date of birth wrongly mentioned is 01/07/1960 instead of 01/01/1959. Vide affidavit dated 03/05/2025 before Notary Public New Delhi.

NAME CHANGE

I, Barkha Grover W/O Gourav Sharma R/O B-23/24, Second floor moon Light Apartment, Nawada Extn, Uttam Nagar, PO: D. K. Mohan Garden, Dist: West Delhi, Delhi -110059, have changed my name and shall hereafter be known as Barkha Sharma

NAME CHANGE

I, JAGDISH SINGH is father of No. JC282674L Rank- SUB (CLK SD), Name- VEDPAL R/o H NO-593/11, KABIR COLONY, JIND ROAD, ROHTAK, HARYANA-124001,have changed my name from JAGDISH SINGH to JAGDISH for all future purposes. And in my son service record my date of birth wrongly mentioned is 01/07/1958 instead of 01/01/1957. Vide affidavit dated 03/05/2025 before Notary Public New Delhi.

NAME CHANGE

It is for general information that I, SANJAY KUMAR OJHA S/O RAMJI OJHA R/O B-501, GALI NO-1, NEAR PATEL NAGAR RAILWAY STATION, PREM NAGAR, PATEL NAGAR, CENTRAL DELHI, DELHI-110008 declare that name of mine and my wife has been wrongly written as SANJAY KUMAR and PREETI in my minor daughter RITAMBHRA aged 16 years in her 10th class educational documents. The actual name of mine and my wife are SANJAY KUMAR OJHA and PREETI OJHA, which may be amended accordingly.

PUBLIC NOTICE

Smt. Harsha Walia Owner of the Residential House/Plot no 58, area measuring 140 sq. meter., Block/Pocket -B, Sector- Ghori Bacheda, Greater Noida, Distt. Gautam Budh Nagar, U.P., Smt. Harsha Walia have lost Original Allotment Letter dated 27/10/2016 issued by GNIDA in favour of Mr. Ganpat., for which complaint lodged to the police. That any person(s)/Appropriate authority etc. if find the misplaced Allotment letter aforesaid said person may come forward and inform the undersigned within 15 days from the date of Publication.

RAHUL KUMAR GUPTA
(ADVOCATE)
Off.: 43B, Third Floor, Patpargang Village, Mayur Vihar Phase-I, Delhi-1
M-NO- 7252922875

NAME CHANGE

I JATUN W/o ABDUL LATEEF R/o H NO 484, GALI MATIA MAHAL, JAMA MASJID, DELHI-110006 Have Changed my name to JAITUN BEGUM for all future purpose.

PUBLIC NOTICE

Public at large is hereby informed by the way of this notice that my client Mr. Satbir Singh S/o Late Hira Lal, R/o Village & Post office Ghumanhera, New Delhi 110073 has renounced & severed all his relationships with his son Anil Kumar S/o Sh. Satbir Singh R/o Village & Post office Ghumanhera, New Delhi 110073 as he is not obeying and respecting my client and my client is living with him and he has no relation with him in any manner and he has debarred him from all his movable and immovable properties. therefore, my client Mr. Satbir Singh shall not be responsible for any of his act and any type of dealing done in past, present or future.

SHIV UPADHYAYA ADVOCATE
306, LAWYERS CHAMBER, DWARKA COURT COMPLEX, SECTOR-10, DWARKA, NEW DELHI-110075

सार्वजनिक सूचना

दी नेबल टेकनीकल आफीसर्स सी.जी.एच.एस. लि0 पता-A-63, न्यू गोपाल नगर, रामा पब्लिक स्कूल रोड, गली-4 नजफगढ़ न्यू दिल्ली-43,

प्रमोटर प्रबंध कमेटी की बैठक दि0-10/3/25 में श्री रामखिलाडी निम एड0 को चुनाव अधिकारी नियुक्त किया, चुनाव कार्यक्रम/निर्देशन स्वयं करेगें। श्री रामखिलाडी निम एड0 चुनाव अधिकारी चुनाव कार्यक्रम-बैठक एजेंडा दि0-25/4/25 को जारी किया। एजेंडा की कांपी चुनाव अधिकारी को दिया गया, चुनाव की सभी गतिविधियां एजेंडा में घोषित कार्यक्रम [illegible] कार्यालय से प्रतिदिन 10 बजे से शाम 6 बजे तक संचालित रहेगी।

आम सभा बैठक/मतदान-मतदाता दि0-6/6/25 को दी रोयल बैंकट पटेल गार्डन द्वारिका मोड़ न्यू दिल्ली-77 पर सम्पन्न होगी, सुवह 10 से 2 बजे तक मतदान, समय-2 से 4 बजे तक मतों की गिनती, के बाद निर्वाचित प्रबंध कमेटी की घोषणा एवं चार्ज सौंप दिया जायेगा।

चुनाव कार्यक्रम निम्नवत् रहेगा,- (1) दि0-11 से 13/5/25 आवेदन खरीद बिक्री, दि0-14 से 17/5/25 आवेदन जमा होंगे, दि0-18/5/25 प्रत्याशी आवेदन पर आपत्तियां होगी, दि0-19/5/25 को आवेदन जांच आपति निस्तारण किया जायेगा। दि0-20/5/2025 को प्रत्याशी सूची की घोषणा कर दी जायेगी।

अतः प्रत्येक सदस्य चुनाव लडने के लिए स्वतंत्र है, प्रतिदिन कार्य दिवस में 10 से 5 बजे तक कार्यलय खुला रहेगा, प्रत्याशी आवेदन, देनदारी चुकता करके सदस्यों की सूची प्राप्त करके चुनाव के लिए सदस्यों मतदान के समर्थन मांगने के लिए स्वतंत्र हैं।

President
The Naval Technical Officers CGHS Ltd.

NAME CHANGE

I, ARCHANA BANSAL Wife of RAJIV AGGARWAL residing at G-403, JHULELAL APPARTMENT, ROAD NO-44, PITAMPURA, SARASWATI VIHAR, DELHI-110034 Have changed my name to ARCHANA AGGARWAL, for all future purpose.

PUBLIC NOTICE

I Mithlesh Kumar Vishavkarma S/O Tirlokinath, R/O House No-39, 14, Shaheed Bhagat Nagar, Mohammad Pur Majri, North West Delhi, Delhi-110081, declare that name of mine and my wife has been wrongly written as Jitender Sharma and Arti in my minor daughter namely Tulsi aged 14 years in her school records. The actual name of mine and my wife are Mithlesh Kumar Vishavkarma and Vimal Devi.

PUBLIC NOTICE

Information is given to general public at large that our client Mr. Hari Dutt Sharma S/o Mr. Subhash Chand Sharma is the owner of Freehold Residential House on Plot No. F-68, area measuring 138.88 Sq. Yds. i.e. 116.21 Sq. Mtrs., Arising out of Khasra No. 143, Situated at Vikas Enclave in Anup Nagar in the area of Village Fazalpur, Pargana, Tehsil & District Meerut, Uttar Pradesh. By virtue of Sale Deed dated 22.01.2020 as Doc. No. 469, in Book No. 1, Vol. No. 6280, on Pages No. 175-212, on dated 22.01.2020, in SR - Sadar IV, Meerut., in the chain document below mentioned documents not available i.e. Original Sale Deed dated 26.09.2002 As Doc no. 791, SRO- IV Meerut. & Original Sale Deed dated 31.05.2012 as Doc. No. 4319, in Book No. 1, Vol. No. 3645, on Pages No. 395-426, on dated 31.05.2012, in SR - IV, Meerut Sadar., now our client is declaring that any other Person does not have any right over the said property and same is going to be sell in favour of Sh. Krishan Pal Sharma. which is going to be financed by Home First Finance Company India Ltd. Branch: Ghaziabad, Uttar Pradesh. If any person(s) have any objection(s) or claim(s) with respect to the` right, title or interest in the Said Property then contact us within 07 days from the date of Publication of this notice and or the same to the undersigned if found by anyone. Thereafter no claim shall be entertained

[NAVEEN KUMAR VERMA]
Advocate
F-211,sector-3 Vaishali Ghaziabad
Uttar Pradesh-201010, Contact at 09958871432

PUBLIC NOTICE

Notice is hereby given by **Mr. Jeetendra Kumar is purchasing the Vacant Plot No. 3, area measuring 100 sq. yds., Plot No. 3-A, area measuring 200 sq. yds. and Plot No. 3-B, area measuring 200 sq. yds., total land measuring 500 sq. yds., out of Khasra No. 443, in Block-A, situated at Laxmi Garden Extension, Second Colony, Hadbast Village Dharoti Khurd, Pargana Loni, Tehsil and Distt. Ghaziabad, Uttar Pradesh** from Mr. Aamir Solanki and Mrs. Rahisan Begum who inherent the property after the death of Mr. Sirazuddin who died on 03.06.2004 and Intend to mortgage the said property with **Aditya Birla Capital Ltd.** If any person(s) has/have any objection(s) or claim(s) with respect to the right, title or interest in the said property may please contact us within 07 days from the date of this notice on the number & address mentioned herein below, failing which my client(s) shall not be held responsible in any manner whatsoever.

Khaitan & Khaitan
A-38 Kailash Colony,
New Delhi-110048,
Ph. No: 011-49774545

NAME CHANGE

I, MEERA DEVI Wife of JC-325844A Rank-SUB MAJ (Retd.) Name-AJMER SINGH residing at VILL-ADYANA, PO-ADYANA, TEHSIL-MADLAUDA, DISTT-PANIPAT, HARYANA-132113, have changed my name from MEERA DEVI to MEERA DAHIYA for all future purposes and in my husband's service record my date of birth wrongly mentioned as 01/10/1979 instead of my correct date of birth as 01/08/1979 vide Affidavit dated 05/05/2025 before Notary Public, Delhi.

अभियुक्त व्यक्ति की हाजिरी की अपेक्षा करने वाली उद्घोषणा

(धारा 82 Cr.P.C. देखिए)

मेरे समक्ष परिवाद किया गया है कि अभियुक्त **अफसार उर्फ मोना पुत्र इरशाद निवासी म. नं. 240, गली नं. 2, चांद मस्जिद के पास, डाबर तालाब, लोनी गाजियाबाद (उ.प्र.)** ने केस **एफआईआर नं. 169/2024 अन्तर्गत धारा 392/394/411/34 आईपीसी, थाना जगतपुरी, दिल्ली** के अधीन दण्डनीय अपराध किया है (या संदेह है कि उसने किया है) और उस पर जारी किए गए गिरफ्तारी के वारंट को यह लिखकर लौटा दिया गया है कि उक्त अभियुक्त **अफसार उर्फ मोना** मिल नही रहा है, और मुझे सामाधानप्रद रूप में दर्शित कर दिया गया है कि उक्त अभियुक्त **अफसार उर्फ मोना** फरार हो गया हैं (या उक्त वारंट की तामील से बचने के लिए अपने आपको छिपा रहा हैं) इसलिए इसके द्वारा उद्घोषणा की जाती है कि केस **एफआईआर नं. 169/2024 अन्तर्गत धारा 392/394/411/34 आईपीसी, थाना जगतपुरी, दिल्ली** के उक्त अभियुक्त **अफसार उर्फ मोना** से अपेक्षा की जाती है कि वह इस न्यायालय के समक्ष (या मेरे समक्ष) उक्त परिवाद का उत्तर देने के लिए दिनांक **06.06.2025** को या उससे पहले हाजिर हों।

आदेशानुसार
आयुषी सक्सेना
न्यायिक दण्डाधिकारी प्रथम श्रेणी-05
कमरा नं. 07, द्वितीय तल
कड़कड़डूमा न्यायालय, दिल्ली

DP/5284/SHD/2025
(Court Matter)

सेना का अधिकारी बनकर ऑनलाइन फ्रॉड करने वाले राजस्थान के आरोपी को पुलिस ने किया गिरफ्तार

नूंह। नूंह साइबर थाना पुलिस ने एक बड़े ऑनलाइन फ्रॉड गिरोह का पर्दाफाश करते हुए आरोपी मोहम्मद जाहिद को गिरफ्तार किया है, जो फर्जी आर्मी ऑफिसर बनकर आम लोगों को साइबर ठगी का शिकार बना रहा था। आरोपी राजस्थान के डीग जिले के टायर गांव का रहने वाला है। पुलिस के अनुसार साइबर टीम ने प्रतिबिंब पोर्टल पर एक्टिव संदिग्ध मोबाइल नंबर को ट्रैक किया, जो केरल के कन्नूर में 9000 रुपये की ऑनलाइन धोखाधड़ी में पहले से ही चिन्हित था। तकनीकी माध्यम से निरीक्षक विमल प्रभारी साइबर थाना नूंह के नेतृत्व में गठित टीम आईटीआई मरोड़ा के पास पहुंची, जहां आरोपी को रंगे हाथों पकड़ा गया। तलाशी के दौरान आरोपी के पास से 3 स्मार्टफोन, 6 मोबाइल सिम कार्ड, कई फर्जी सोशल मीडिया के प्रोफाइल, नकली आर्मी फोटो, फेक क्यू-आर-कोड यूपीआई आईडी, और डिजिटल पेमेंट ऐप से जुड़ी संदिग्ध गतिविधियां पाई गईं । जांच में सामने आया कि आरोपी व्हाट्सएप पर आर्मी अफसर की फर्जी प्रोफाइल लगाकर लोगों को झांसे में लेता था। पुलिस ने आरोपी के खिलाफ केस दर्ज कर लिया है। फिलहाल नूंह साइबर थाना पुलिस यह जांच कर रही है कि आरोपी इस गिरोह में अकेला था या उसके साथ और भी लोग शामिल हैं। निरीक्षक विमल प्रभारी साइबर थाना नूंह ने बताया कि ऑनलाइन ठगी से जुड़े ऐसे मामलों पर अब टेक्निकल सर्विलांस के जरिए लगातार कार्रवाई जारी रहेगी।

सेक्टर 12 हुडा मार्किट व प्रेम नगर 2 में स्ट्रीट लाइटों की एक्सईएन से पुनः मांग

गुरुग्राम। सेक्टर 12ए हुडा मार्किट व साथ लगती प्रेम नगर 2 कालोनी में 3-4 नई स्ट्रीट लाइट लगाने व हाई मास्क पिल्लर में खराब पड़ी बत्तियों को ठीक कराने की मांग वर्षों से की जा रही है, लेकिन नगर निगम से संबंधित बिजली विंग सुनवाई नहीं कर रहा है। हुडा मार्किट एसोसिएशन के महासचिव व संघर्षशील नेता संजीव अग्रवाल ने बताया कि करीब आधा दशक पूर्व हाई मास्क पिल्लर स्थापित कर उसमें कई बत्तियां लगाकर पूरी मार्किट को जगमग कर खुशियों से भर दिया गया था, लेकिन डेढ़ वर्ष में धीरे धीरे सभी बत्तियां गुल हो गई। जिससे मार्केट में अंधेरा पसर जाने से दुकानों में चोरी का भय बना रहता है। भारत सरकार से रिटायर्ड अफसर मनवीर सिंह राघव ने बताया कि कालोनी में उनकी गली झुग्गी बस्ती के कारण आगे चलकर बंद हो जाती है, जिसमें नई स्ट्रीट लाइट की आवश्यकता है। कालोनी की एंट्री तथा मैन रास्ते पर गली नंबर एक व 2 के बीच रास्ते पर अंधेरा रहने से लोगों को दिक्कत आती है। यहां भी स्ट्रीट लाइट की जरूरत है। कालोनी के आरडब्ल्यूए के उप प्रधान राहुल यादव, समाजसेवी महेंद्र सिंह गुलिया, प्रेम चंद, सर्वजीत शर्मा के अनुसार कालोनी में मंदिर के पास पेयजल के लिए एक नया सबमर्सिबल निगम ने लगाया है। साथ खड़े बिजली के खंभे पर स्टार्टर व उपकरण भी लगे हैं।

बिजली विभाग के एसडीओ को फोन करने वाला फर्जी ओएसडी गिरफ्तार

गुरुग्राम। फर्जी ओएसडी बनकर बिजली बोर्ड के एसडीओ को फोन करने वाले आरोपी को पुलिस ने काबू कर लिया है। आरोपी पहले भी खुद को राजनीतिक प्रभाव वाला बता कर पेट्रोल पंप दिलवाने के नाम पर 57 लाख की धोखाधड़ी के आरोप में जेल जा चुका है। पुलिस प्रवक्ता ने बताया कि एक अप्रैल को थाना सेक्टर-56 में एक शिकायत सीएम हरियाणा का फर्जी ओएसडी बनकर बिजली बोर्ड के एसडीओ को बिजली के पोल हटवाने के संबंध में कॉल करने के संबंध में प्राप्त हुई। प्राप्त शिकायत पर थाना सेक्टर-56 ने मामला दर्ज कर जांच शुरु कर दी। आगामी कार्यवाही कर आरोपी अमित को नागपुर से काबू कर लिया। आरोपी ने पूछताछ में बताया कि वह अक्सर खुद को समाज में राजनीतिक प्रभावशाली व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत करता है। इसी के चलते उसके एक जानकार ने उससे उसके एक प्लाट के पास बिजली के खंभों को हटवाने बारे कहा तो उसने खुद का राजनीतिक प्रभाव दिखाने के लिए खुद को सीएम का ओएसडी बता कर बिजली विभाग के एसडीओ को झूठा फोन करके धमकाया था। आरोपी द्वारा खुद की प्रोफाइल इसी धोखाधड़ी के लिए फर्जी बनाई गई थी।

लावारिस हालत में मिला अज्ञात महिला का शव

गुरुग्राम। गुरुग्राम फरीदाबाद रोड़ पर लावारिश हालात में अज्ञात महिला का शव मिला है। पुलिस प्रवक्ता ने बताया कि 3 मई को थाना सुशांत लोक की पुलिस टीम ने एक सूचना पर गुरुग्राम फरीदाबाद रोड पर शिव नादर स्कूल के पास फुटपाथ से थोड़ा दूर से खाली जगह से एक काले सूटकेस में एक अज्ञात महिला का शव बरामद किया, जिसकी उम्र लगभग 30-35 वर्ष थी। पुलिस टीम द्वारा पुलिस की सीन-ऑफ क्राइम, फिंगरप्रिंट व डॉग स्क्वायड टीमों से घटनास्थल का निरीक्षण कराया गया तथा थाना सुशांत लोक द्वारा इस मामले में आगामी कानूनी कार्यवाही की जा रही है। प्राथमिक दृष्टि के मालूम हुआ है कि शव को किसी दूसरी जगह से लाकर यहां पर डाला गया है। पुलिस टीम उपरोक्त अभियोग में अज्ञात मृतक की पहचान के लिए विभिन्न माध्यमों से प्रयास किए जा रहे है। मृतक ने हरे रंग का टॉप तथा अकेले रंग की जींस पहनी हुई है। मृतका ने दाएं हाथ में एक कड़ा पहना हुआ है व दाएं हाथ की कलाई पर एक चित्र गुदा है तथा बाएं हाथ में एक ब्रेसलेट पहना हुआ है व बाएं हाथ के अंगूठे पर 8 गुदा हुआ है। नीचे काले व लाल रंग से (माँ) गुदा हुआ है।

भगवान परशुराम की शिक्षाएं आज भी प्रासंगिक : सुभाष बराला

राज्यसभा सांसद सुभाष बराला ने मूर्ति स्थापना कार्यक्रम में की शिरकत

एजेंसी

टोहाना/जाखल । राज्यसभा सांसद सुभाष बराला ने भगवान परशुराम मंदिर के मूर्ति स्थापना के अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत कर विधिवत रूप से पूजा-अर्चना कर हवन यज्ञ में आहुति अर्पित की। भगवान परशुराम मंदिर, जो कि लक्ष्मी राई मिल्स के पास मास्टर कॉलोनी जाखल में स्थित है, का निर्माण कार्य पूर्ण हो चुका है। इस शुभ अवसर पर भगवान श्री परशुराम ब्राह्मण सभा एवं नगर निवासी जाखल द्वारा भव्य मूर्ति स्थापना एवं भागवत कथा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर राज्यसभा सांसद ने मंदिर के लिए 11 लाख रुपये सांसद कोष से देने की भी घोषणा की। कार्यक्रम में उपस्थितजनो को संबोधित करते हुए राज्यसभा सांसद सुभाष बराला ने कहा कि भगवान परशुराम केवल एक वर्ग विशेष के नहीं, बल्कि संपूर्ण मानवता के मार्गदर्शक हैं। उन्होंने समाज में अन्याय, अधर्म और अत्याचार के विरुद्ध संघर्ष करते हुए धर्म की स्थापना की। आज की पीढ़ी

को भगवान परशुराम के आदर्शों से प्रेरणा लेकर राष्ट्र निर्माण में योगदान देना चाहिए। वर्तमान सरकार महापुरुषों की जयंती को राज्यस्तरीय स्तर पर मना रही हैं, जिससे नई पीढ़ी को अपने इतिहास, संस्कृति और मूल्यों से जोड़ने का अवसर मिल रहा है। यह एक सराहनीय पहल है, जिससे युवाओं में राष्ट्रीय चेतना और संस्कारों का विकास होगा। महापुरुष किसी एक जाति, वर्ग या समुदाय के नहीं होते, वे पूरे समाज के होते हैं। ऐसे आयोजनों के माध्यम से समाज में समरसता, एकता और प्रेरणा का संचार होता है। उन्होंने मंदिर निर्माण में योगदान देने वाले सभी श्रद्धालुओं, दानदाताओं और आयोजकों का आभार प्रकट किया।कार्यक्रम में प्रसिद्ध कथा वाचक पंडित बाल कृष्ण शास्त्री ने अपने मधुर वाणी से भागवत कथा का रसपान करवाया। बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने भाग लेकर कार्यक्रम की गरिमा को बढ़ाया। इस अवसर पर मंडल अध्यक्ष किरण शर्मा, वेद जांगड़ा, लाली चूहड़पुर, सरदारी लाल, हरमेश शर्मा, अरुण गुप्ता, महेश शर्मा, आशीष गर्ग, यादवेंदर शर्मा, संजीव शर्मा , प्रदीप शर्मा, पवन शर्मा सहित बड़ी संख्या में श्रद्धालु मौजूद रहे।

भगवान परशुराम के आदर्शों पर चलकर समाज को करें एकजुट : डॉ अरविंद शर्मा

मोदी-नायब सरकार की योजनाओं को हर जागरूक तक पहुंचाने का लें संकल्प, नेता नहीं, सेवक बनकर रहना है मकसद

एजेंसी

रोहतक। सहकारिता, कारागार, विरासत व पर्यटन मंत्री डॉ अरविंद शर्मा ने कहा कि भगवान परशुराम के आदर्श हमें समाज को एकजुट बनाने, मिलकर चलने के लिए प्रेरित करते हैं। आज प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के मार्गदर्शन और मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी के नेतृत्व में हरियाणा सरकार हर समुदाय, हर वर्ग को साथ लेकर सबका उत्थान सुनिश्चित कर रही है। उन्होंने कहा कि रोहतक के पहरावर में भगवान परशुराम जयंती पर प्रस्तावित राज्य स्तरीय जयंती समारोह अब 17 मई की जगह 30 मई को होगा, जिसमें प्रदेश के कोने-कोने से जन-जन उमड़ेगा। सहकारिता मंत्री ने अपने स्वैच्छिक कोष से भगवान परशुराम जनकल्याण समिति को विकास कार्यों के उद्देश्य से 11 लाख रुपए देने की घोषणा की। भगवान परशुराम जनकल्याण समिति द्वारा सेक्टर 2 में

आयोजित भगवान परशुराम जन्मोत्सव व अभिनंदन समारोह में मुख्यातिथि के तौर पर पहुंचे सहकारिता मंत्री डॉ अरविंद शर्मा ने भगवान परशुराम की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित करते हुए वंदना की व समाज भलाई का संकल्प लिया। पार्क में आयोजित समारोह को संबोधित करते हुए सहकारिता मंत्री डॉ अरविंद शर्मा ने बताया कि मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी की केंद्र स्तर पर बैठक निर्धारित होने के कारण 17 मई को पहरावर में राज्य स्तरीय भगवान परशुराम जयंती समारोह अब 30 मई को होगा। उन्होंने कहा कि इस जयंती समारोह में प्रदेश के कोने-कोने से ब्राह्मण व सर्व समाज अपनी भागीदारी करेगा। सहकारिता मंत्री डॉ अरविंद शर्मा ने कहा कि जिस प्रकार गऊ में 33 कोटि देवी-देवता वास करते हैं, उसी प्रकार ब्राह्मणों में 36 बिरादरी का वास है। ब्राह्मण हर किसी को साथ लेकर चलने की क्षमता रखता है। उन्होंने कहा कि देश की आजादी में और इसे बरकरार रखने में ब्राह्मणों का बड़ा योगदान है, जिसकी पूरा देश सराहना करता है।कैबिनेट मंत्री डॉ अरविंद शर्मा ने कहा कि मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी 36 बिरादरी का ध्यान रखने वाले नेता हैं। उन्होंने पूर्व मुख्यमंत्री मनोहर लाल की संत-महापुरुष सम्मान व विचार प्रसार योजना को बढ़ाते हुए जयन्तिया को निरंतर आयोजित करने की परंपरा को निभाया है। आज उनके नेतृत्व में प्रदेश के भिवानी में पंडित नेकीराम शर्मा राजकीय मेडिकल कालेज का निर्माण हुआ है। 600 करोड़ रुपए की लागत से कैथल में भगवान परशुराम राजकीय मेडिकल कालेज का निर्माण तेजी से चल रहा है। उन्होंने कहा कि प्रदेश में भगवान परशुराम जयंती का राजकीय अवकाश भाजपा सरकार द्वारा घोषित किया गया। उन्होंने कहा कि नौकरियों में पारदर्शिता युवाओं के लिए वरदान बनकर आई है। हमें अपने युवाओं को कड़ी मेहनत के लिए प्रेरित करना चाहिए, ताकि वो देश व समाज के निर्माण में अपना भरपूर योगदान दे सकें। इस मौके पर समिति प्रधान ललित कौशिक, वरिष्ठ उपप्रधान हरिकिशन भारद्वाज, उप प्रधान ओंकार पराशर, महासचिव डॉ कपिल कौशिक, सचिव रामकुमार कौशिक, कोषाध्यक्ष डॉ हरिओम वशिष्ठ ने पगड़ी व स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया। इस मौके पर महामंडलेश्वर स्वामी विश्वेवरानंद महाराज, महामंडलेश्वर परमानंद महाराज, अंतरराष्ट्रीय पहलवान योगेश्वर दत्त समेत बड़ी संख्या में ब्राह्मण समाज के गणमान्य मौजूद रहे।

इको-टूरिज्म को बढ़ावा देने के लिए बनाई जा रही है जंगल सफारी- राव नरबीर सिंह

अरावली पर्वत श्रृंखला हरियाणा सहित चार राज्यों के 1.15 मिलियन हेक्टेयर क्षेत्र में है फैली

मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी और पर्यावरण, वन एवं वन्य जीव मंत्री राव नरबीर सिंह 7 व 8 जून को जामनगर(गुजरात) की वनतारा परियोजना का करेंगे दौरा

एजेंसी

चंडीगढ़। हरियाणा के पर्यावरण, वन एवं वन्य जीव मंत्री राव नरबीर सिंह ने कहा है कि बढ़ते प्रदूषण के कारण पर्यावरण सरंक्षण एक वैश्विक चिंता का विषय बनता जा रहा है। पर्यावरण संतुलन को बनाये रखने के लिए हमें प्रकृति व वन्य जीव सरंक्षण के प्रति संवेदनशील होना होगा। निजी क्षेत्र के साथ-साथ कई नए युवा स्टार्टअप भी प्रकृति व वन्यजीव सरंक्षण में गरी रूचि दिखा रहे हैं, जो कि सरकारी प्रयासों के साथ-साथ एक सराहनीय पहल है। मंत्री राव नरबीर सिंह ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने पिछले दिनों अपने मन की बात कार्यक्रम में वन्य जीवों को बचाने का देशवासियों का आह्वान किया था। इसी कड़ी में हरियाणा वन विभाग अरावली क्षेत्र में जंगल सफारी व ग्रीन वाल प्रोजेक्ट वन जीवों को बचाने के लिए कार्यक्रम

की रूपरेखा तैयार कर रहा है। उन्होंने कहा कि जंगल सफारी परियोजना पहले पर्यटन विभाग द्वारा तैयार की जानी थी परंतु अब मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी ने इसकी जिम्मेदारी वन एवं वन्य जीव विभाग को सौंपी है। विभाग तेजी से कार्य कर रहा है। मंत्री राव नरबीर सिंह ने कहा कि मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी 7 व 8 जून को जामनगर(गुजरात) के वनतारा परियोजना का दौरा करेंगे। उनके साथ वे स्वयं भी जाएंगे। उन्होंने कहा कि अरावली ग्रीन वॉल परियोजना के तहत हरियाणा, राजस्थान, गुजरात और दिल्ली सहित चार राज्यों में 1.15 मिलियन हेक्टेयर से अधिक भूमि का सुधार बहु-राज्य सहयोग का एक अनुकरणीय मॉडल प्रदर्शित करना है। वनों की स्वदेशी प्रजातियों के साथ वनरोपण, जैव विविधता संरक्षण, मृदा स्वास्थ्य में सुधार और भूजल पुनर्भरण को बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित करना भी है। उन्होंने कहा कि इन परियोजनाओं से अरावली क्षेत्र में न केवल लोगों को रोजगार के अवसर प्राप्त होंगे बल्कि जैव विविधता संरक्षण और पर्यावरण अनुकूल संसाधन प्रबंधन को भी बढ़ावा मिलेगा। उन्होंने कहा कि हरियाणा में युवा पीढ़ी को प्रकृति को इस नेक कार्य के प्रति जागरूक करने तथा उनके आजिविका के साधन बढ़ाने के लिए राज्य में वन मित्रों की नियुक्ति की गई है, जो स्थानीय लोगों को वनों से जोड़ रहे है।

पंजाब पुलिस ने दो पाकिस्तानी जासूसों को किया गिरफ्तार, लीक कर रहे थे सेना की गोपनीय जानकारी आई एस आई से था संपर्क

फिरोजपुर । पंजाब पुलिस ने जासूसी के एक बड़े नेटवर्क का पर्दाफाश करते हुए दो पाकिस्तानी एजेंटों को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार आरोपियों की पहचान पलक शेर मसीह और सुरज मसीह के रूप में हुई है, जो भारतीय सेना से जुड़ी संवेदनशील जानकारियां पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी तक पहुंचा रहे थे।, दोनों आरोपी अमृतसर स्थित सैन्य छावनियों और वायुसेना अड्डों की गोपनीय तस्वीरें और जानकारियां पाकिस्तान को भेजते थे। वहीं प्रारंभिक जांच से पता चला है कि उनके पाकिस्तानी खुफिया एजेंटों से संबंध हैं, जो हरप्रीत सिंह उर्फ पिट्टू उर्फ हैप्पी के माध्यम से स्थापित किए गए हैं। हरप्रीत सिंह उर्फ पिट्टू वर्तमान में अमृतसर सेंट्रल जेल में बंद है। पंजाब के डीजीपी ने एक्स (पूर्व में ट्विटर) पर जानकारी साझा करते हुए कहा, एक महत्वपूर्ण जासूसी विरोधी अभियान के तहत अमृतसर ग्रामीण पुलिस ने 3 मई को दोनों को गिरफ्तार किया। उनके खिलाफ आधिकारिक गोपनीयता अधिनियम के तहत केस दर्ज किया गया है ।

पार्टी के सभी वरिष्ठ नेताओं ने संगठन विस्तार और आगामी रणनीति पर चर्चा की: डॉ. सुशील गुप्ता

पानीपत। आम आदमी पार्टी हरियाणा की प्रदेश कार्यकारिणी की महत्वपूर्ण बैठक पानीपत में संपन्न हुई। बैठक की अध्यक्षता आम आदमी पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष डॉ. सुशील गुप्ता ने की। डॉ. सुशील गुप्ता ने बताया कि बैठक में पार्टी के वरिष्ठ नेताओं ने संगठन विस्तार, आगामी रणनीति और प्रदेश के ज्वलंत मुद्दों पर विस्तृत चर्चा की। बैठक में सर्वसम्मति से बीजेपी सरकार की जनविरोधी नीतियों के खिलाफ प्रस्ताव पारित किया गया। उन्होंने कहा कि बैठक में संगठन को और मजबूत करने के लिए जमीनी स्तर पर कार्यकर्ताओं को सक्रिय करने, नए नेताओं को जोड़ने, और हरियाणा के सभी जिलों में पार्टी की पहुंच बढ़ाने पर जोर दिया गया। इसके साथ ही, बीजेपी सरकार की विफलताओं, जैसे बेरोजगारी, किसानों की उपेक्षा, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं की बदहाली, और बढ़ते भ्रष्टाचार पर तीखी आलोचना की गई। उन्होंने कहा कि हरियाणा की जनता बीजेपी के कुशासन से त्रस्त है। आम आदमी पार्टी जनता की आवाज बनकर उनके हक के लिए संघर्ष करेगी। हमारा लक्ष्य हरियाणा में एक पारदर्शी और जन-केंद्रित सरकार स्थापित करना है। इस दौरान प्रदेश के कई महत्वपूर्ण मद्दों पर सर्वसम्मति से बीजेपी सरकार के खिलाफ प्रस्ताव पास किया।आम आदमी पार्टी (हरियाणा) यह स्पष्ट करती है कि हरियाणा में बीजेपी सरकार की नाकामियां प्रदेश की जनता के लिए गंभीर संकट का कारण बन रही हैं। निम्नलिखित मुद्दों पर हम सरकार की विफलताओं को उजागर करते हैं हरियाणा में कानून व्यवस्था पूरी तरह चरमरा गई है।

राष्ट्र हित के लिए जरूरी है एक देश एक चुनाव -रोजी मलिक

एजेंसी

करनाल । एक देश एक चुनाव में आम जनमानस की सहमति बनाने के विषय को लेकर विचार-विमर्श हेतु भाजपा जिला कार्यालय कर्ण कमल में भाजपा जिलाध्यक्ष प्रवीण लाठर की अध्यक्षता में बैठक का आयोजन किया गया जिसमें उपस्थित सभी कार्यकर्ताओं को एक देश एक चुनाव कुरुक्षेत्र विभाग जिसमें करनाल, कुरुक्षेत्र, कैथल व पानीपत जिला आते हैं कि प्रभारी रोजी मलिक का मार्गदर्शन मिला। प्रभारी रोजी मलिक ने उपस्थित सभी को कहा कि एक देश एक चुनाव से होने वाले लाभ की आप सभी को जानकारी दें। उन्होंने कहा कि इससे न केवल राजकोष की बचत होगी अपितु इससे कालेधन पर लगाम भी लगेगी इस अवसर पर उन्होंने कहा कि अकसर चुनाव के दौरान विकास कार्यों में रुकावट आ जाती है क्योंकि चुनाव के समय राज्यों में आचार संहिता लागू हो जाती है और यह परिणाम जारी होने तक लागू रहती है। ऐसे में इससे विकास परियोजनाओं में देरी होती है। एक देश-एक चुनाव में ऐसा नहीं होगा। उन्होंने कहा कि चुनाव के समय देशभर में फोर्स से लेकर विभिन्न सरकारी कर्मचारियों की ड्यूटी लगती है। इससे उनके सरकारी काम में भी व्यवधान होता है। ऐसे में साल में एक ही बार में इस तरह की आवश्यकता पड़ेगी और इससे संसाधनों में बचत होगी। उन्होंने जानकारी देते हुए बताया कि पहले भी वर्ष 1952, 1957, 1962 और 1967 में लोकसभा एवं विधानसभा चुनाव एक साथ हो चुके हैं। हालांकि, इसके बाद यह परंपरा कायम नहीं रह सकी। अब फिर एक देश और एक चुनाव की मांग जोर पकड़ती जा चुकी है इस अवसर पर भाजपा जिलाध्यक्ष प्रवीण लाठर, कुरुक्षेत्र विभाग संयोजक डा राजबीर आर्य,सह संयोजक अजीत चहल ने भी अपने विचार रखे बैठक में सांसद प्रतिनिधि कविन्द्र राणा, पूर्व जिला महामंत्री सुनील गोयल, जिला मीडिया प्रभारी डा अशोक कुमार,आई टी प्रमुख विकास कथुरिया, कार्यालय इंचार्ज मदन गुर्जर,अलका चौधरी,मीनू चावला,अनिल मदान सहित करनाल जिला के सभी मंडल अध्यक्ष एवं महामंत्री मौजूद रहे।

पंजाब के सीएम द्वारा हरियाणा को दिए जा रहे पानी के आंकड़े बिल्कुल झूठेः चौ.धर्मबीर सिंह

एजेंसी

नारनौल। भिवानी-महेंद्रगढ़ लोकसभा क्षेत्र के सांसद चौधरी धर्मबीर सिंह ने जल वितरण के मुद्दे पर कहा कि यह पानी पूरी तरह से बोर्ड का है ना की पंजाब प्रदेश का है और पंजाब के मुख्यमंत्री द्वारा हरियाणा के 103 प्रतिशत पानी के इस्तेमाल का दवा बिल्कुल निराधार है। पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान द्वारा दो प्रदेशों के बीच इस तरह के व्यवहार बिल्कुल राजनीति है बल्कि आपस में दो प्रदेशों के बीच तनाव व भाईचारा बिगड़ने के अलावा और कुछ नहीं है। चौधरी धर्मबीर सिंह सायं गौड़ ब्राह्मण सभा नारनौल के प्रधान राकेश महता एडवोकेट के आवास पर बोल रहे थे। चौधरी धर्मबीर सिंह ने कहा कि पंजाब के मुख्यमंत्री द्वारा जो हरियाणा को दिए जा रहे पानी को लेकर आंकड़े पेश किए हैं वे बिल्कुल झूठे एवं निराधार है। उन्होंने कहा कि आज उन्हें गौड़ ब्राह्मण सभा नारनौल द्वारा भगवान परशुराम के जन्मोत्सव पर गौड़ ब्राह्मण सभा के नए भवन परशुराम भवन की भूमि पूजन कार्यक्रम में पहुंचे था लेकिन वे दिल्ली में पहले

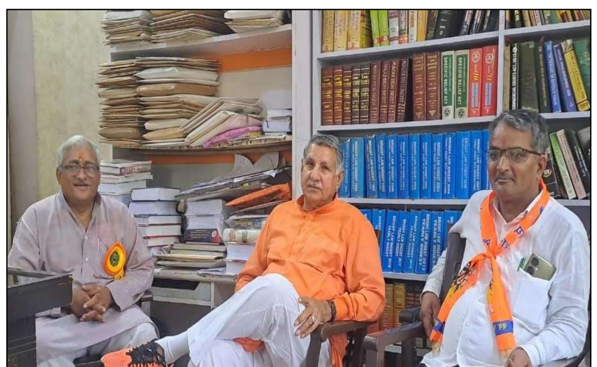

से आयोजित कार्यक्रम में शामिल रहने की वजह से लेट हो गए। वे भविष्य में गौड़ ब्राह्मण सभा द्वारा आयोजित कार्यक्रम में अवश्य पहुंचेंगे।उन्होंने सभा प्रधान राकेश मेहता की तारीफ करते हुए कहा कि उनके एवं सभी विप्र बंधुओं द्वारा नारनौल में भवन बनाए जाने का फैसला सराहनीय है। इस तरह के भवन बन जाने के बाद व्यक्ति विशेष एवं जाति के न होकर वे समाज के सभी वर्गों के होते हैं जिनमें विवाह, शादी,सार्वजनिक कार्यक्रम एवं अन्य कार्यक्रम किये जा सकते हैं। उन्होंने भारत-पाकिस्तान के बीच पहलगाम में हुई घटना को लेकर चल रहे तनाव पर बोलते हुए कहा कि पाकिस्तान द्वारा आतंकवादियों को उकसा कर भारत में की गई कार्रवाई पाकिस्तान को बहुत महंगी पड़ेगी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश की सेना दुश्मन को मुंहतोड़ जवाब देने के लिए वचनबद्ध है। इस मौके पर गौड़ सभा के प्रधान राकेश महता ने अपने आवास पर पहुंचने पर सांसद चौधरी धर्मबीर सिंह का स्वागत किया। इस मौके पर गौड़ सभा सदस्य कृष्ण सिंह ठेकेदार, मास्टर भूप सिंह सहित अनेको गणमान्य लोग मौजूद थे।

इस मौके पर गौड़ सभा के प्रधान राकेश महता ने अपने आवास पर पहुंचने पर सांसद चौधरी धर्मबीर सिंह का स्वागत किया।

जिला महेंद्रगढ़ में नीट परीक्षा शांतिपूर्वक सम्पन्न, पुलिस ने किए कड़े इंतजाम

एजेंसी

नारनौल। महेंद्रगढ़ में आज एनटीए की ओर से नीट परीक्षा जिला प्रशासन ने शांतिपूर्वक सम्पन्न करवाई। परीक्षा के चलते जिला भर में सुरक्षा के कड़े इंतजाम किए गए थे। परीक्षा को लेकर जिले में कुल 8 परीक्षा केंद्रों बनाये गए थे। आठ परीक्षा केंद्रों में 3392 परीक्षार्थियों में से 3329 परीक्षार्थियों ने नीट की परीक्षा दी। नीट परीक्षा में 63 परीक्षार्थी गैर हाजिर रहे। नीट परीक्षा देने वाले विद्यार्थियों की कुल 98.14 प्रतिशत हाजिरी रही। परीक्षा दोपहर 2 बजे से शाम 5 बजे तक चली। परीक्षार्थियों की एंट्री सुबह 11 बजे से ही होनी शुरू हो गई थी। जिला प्रशासन की ओर से परीक्षा केंद्रों पर सीसीटीवी कैमरे व जैमर भी लगाए गए हैं। जिला के 8 परीक्षा केंद्रों पर नीट की परीक्षा आयोजित की गई। इन परीक्षा केंद्रों में 5 परीक्षा केंद्र नारनौल और 3 परीक्षा केंद्र महेंद्रगढ़ में बनाए गए हैं। नारनौल में राजकीय पीजी कॉलेज, गर्ल्स कॉलेज, पीएम श्री गर्ल्स सीनियर सेकेंडरी स्कूल, मॉडल संस्कृति स्कूल तथा केंद्रीय स्कूल शामिल हैं। वहीं महेंद्रगढ़ में गर्ल्स कालेज, ब्याव कालेज तथा मॉडल संस्कृति स्कूल में परीक्षा दी। परीक्षा केंद्रों के अंदर केवल ड्यूटी पर तैनात स्टाफ व परीक्षार्थियों को ही प्रवेश की अनुमति दी गई थी। किसी भी अन्य व्यक्ति को केंद्र में प्रवेश करने की अनुमति नहीं दी गई। परीक्षा केंद्र में प्रवेश के समय परीक्षार्थियों की गहन तलाशी ली गई। जिसके लिए एचएचएमडी, डीएफएमडी को तैनात किया गया था। पुलिस कर्मियों को वॉकी-टाकी से लैस किया गया था, ताकि किसी भी प्रकार की सूचना को तुरंत अधिकारियों तक पहुंचाया जा सके। परीक्षा केंद्रों के आसपास पांच या पांच से अधिक व्यक्तियों के एकत्रित होने या किसी भी प्रकार के आग्नेय अस्त्र लेकर आने पर भी पाबंदी रही। वहीं परीक्षा केंद्रों के आस-पास स्थित सभी फोटोस्टेट की दुकानें बंद रही। परीक्षा केंद्र के अंदर परीक्षार्थियों को किसी भी प्रकार का सामान नहीं ले जाने की अनुमति दी। प्रशासन द्वारा किए गए पुख्ता प्रबंध के चलते जिला महेंद्रगढ़ में नीट (यूजी) परीक्षा सुचारू रूप से संपन्न हुई। उपायुक्त डॉ विवेक भारती ने आज सभी आठ परीक्षा केंद्रों पर जाकर स्थिति का जायजा लिया।

पुलिस ने लोगों को नशे के दुष्प्रभाव सहित विभिन्न अपराधों के बारे में जानकारी देकर किया जागरूक

एजेंसी

गुरुग्राम। पुलिस उपायुक्त मानेसर दीपक के निर्देशानुसार कार्य करते हुए उप-निरीक्षक जितेंद्र, इंचार्ज पुलिस चौकी बार गुर्जर ने अपनी पुलिस टीम के साथ मिलकर सैक्टर-78,79 की सोसाइटियों में विशेष जागरूकता कार्यक्रम आयोजित करके लोगों को खेलों की महत्वता, नशा ना करने/नशा मुक्ति, नशे के दुष्प्रभाव, यातायात नियमों का पालन करना, डायल 112 व विभिन्न प्रकार के साईबर अपराधों/अपराधियों की पहचान व उनसे बचाव के बारे में विस्तृत जानकारी देकर जागरुक किया गया। इन विशेष जागरूकता कार्यक्रम के माध्यम से उप-निरीक्षक जितेंद्र, इंचार्ज पुलिस चौकी बार गुर्जर, गुरुग्राम व उनकी पुलिस टीम ने सैक्टर-78,79, गुरुग्राम की सोसाइटियों उपस्थित लोगों को नशे के दुष्प्रभाव, नशा मुक्ति व नशे के आदि लोगों के पुनर्वास, विभिन्न प्रकार से होने वाले साईबर अपराधों/अपराधियों की पहचान, बचाव, उनके निवारण, महिला/बच्चों के विरुद्ध होने वाले अपराधों से बचाव/ निवारण यातायत नियमों की नियमित रूप से पालना, हरियाणा पुलिस की ट्रिप मॉनिटरिंग सुविधा तथा खेलों का जीवन में महत्व इत्यादि के बारे में विस्तृत जानकारी देकर जागरूक किया। इस दौरान नशा मुक्ति से शरीर को स्वस्थ रखने का संदेश दिया गया तथा आमजन से नशे के विरुद्ध लडने् में गुरुग्राम पुलिस का सहयोग करने की अपील की गई। इन कार्यक्रमों के दौरान गुरुग्राम पुलिस द्वारा नशे के विरुद्ध किए जा रहे प्रयासों के बारे में भी जानकारी देकर अवगत कराया गया। इस दौरान गुरुग्राम पुलिस द्वारा लोगों से अवैध नशीले पदार्थ रखने/बेचने वालों की सूचना गुरुग्राम पुलिस को देने की अपील की।

2029 तक 17 अरब डॉलर का होगा स्क्रीन एंटरटेनमेंट बाजार

एजेंसी

नई दिल्ली। देश में स्क्रीन मनोरंजन बाजार 2029 तक 17 अरब डॉलर तक पहुंचने का अनुमान है। यह डिजिटल प्लेटफार्मों से संचालित और टेलीविजन और फिल्मों द्वारा समर्थित होगा। मीडिया पार्टनर्स एशिया (एमपीए), आईपी हाउस और भारतीय उद्योग परिसंघ यानी सीआईआई की संयुक्त रिपोर्ट के अनुसार, ऑनलाइन वीडियो 8.6 अरब डॉलर का योगदान देगा, जो 2029 तक सबसे बड़ा राजस्व सेगमेंट बन जाएगा। रिपोर्ट में कहा गया है कि टेलीविजन सेगमेंट के राजस्व में गिरावट आएगी फिर भी 6.8 अरब डॉलर के साथ यह दूसरा सबसे बड़ा सेगमेंट बना रहेगा। रिपोर्ट के अनुसार, फिल्में 1.9 अरब डॉलर की कमाई करने के लिए तैयार हैं, जो हाइब्रिड रिलीज रणनीतियों और मल्टीप्लेक्स पुनरुद्धार के माध्यम से लगातार बढ़ रही हैं। तीनों प्रारूप एक साथ मिलकर पारंपरिक से डिजिटल की ओर बदल रहे हैं जबकि ये हाइब्रिड, मल्टी-स्क्रीन भविष्य में भी अस्तित्व में रहेंगे। रिपोर्ट के अनुसार, 2029 तक भारत की स्क्रीन अर्थव्यवस्था की कमाई में प्रत्येक दो डॉलर में से एक डॉलर ऑनलाइन वीडियो से आएगा। यह टेलीविजन से आगे निकल जाएगा और यह देश में कहानियों को देखने के तरीके को पुनः परिभाषित करेगा। रिपोर्ट का अनुमान है कि 2029 तक कुल सामग्री निवेश 7.5 अरब डॉलर तक पहुंच जाएगा। ऑनलाइन वीडियो पर होने वाला खर्च पहली बार टेलीविजन के बराबर होगा।

आधिकारिक रिकॉर्ड से हटेंगे 3300+ कंपनियों के नाम; एक साल में भी कारोबार शुरू नहीं, अब दिया आवेदन

नई दिल्ली। कॉरपोरेट मामलों का मंत्रालय 3,300 से अधिक कंपनियों के नाम आधिकारिक रिकॉर्ड से हटा देगा। मंत्रालय के पास उपलब्ध ताजे आंकड़ों के अनुसार, विभिन्न राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के रजिस्ट्रार ऑफ कंपनीज (आरओसी) ने कंपनी अधिनियम के प्रावधानों के अनुसार अप्रैल में इन कंपनियों के नाम हटाने के संबंध में सार्वजनिक नोटिस जारी किए। उपरोक्त 3,300 कंपनियों में से महाराष्ट्र में 700 से अधिक, दिल्ली में लगभग 500, कर्नाटक में 350 से अधिक, गुजरात, उत्तर प्रदेश और पश्चिम बंगाल में 200-200 से अधिक कंपनियां हैं। कंपनी रजिस्ट्रार को कंपनी अधिनियम की धारा 248(2) के तहत कुछ आधारों पर कंपनियों से आवेदन मिले थे। इनमें यह भी शामिल था कि वे अपनी स्थापना के एक वर्ष के भीतर कारोबार शुरू करने में विफल रहीं या उन्होंने दो वित्त वर्षों की अवधि के दौरान कोई कारोबार नहीं किया। इस वर्ष मार्च के अंत तक देश में कुल 28.52 लाख पंजीकृत कंपनियों में से 18.51 लाख सक्रिय कंपनियां थीं। धारा 248(2) के तहत, कोई कंपनी अपनी सभी देनदारियों को समाप्त करने के बाद विशेष प्रस्ताव या 75 प्रतिशत सदस्यों की चुकता शेयर पूंजी की सहमति से कुछ शर्तों के अधीन नाम हटाने के लिए आवेदन कर सकती है।

भारत-ब्रिटेन व्यापार समझौते पर वार्ता में लग सकता है और समय, अभी भी अनसुलझे हैं कुछ मुद्दे

नई दिल्ली। भारत और ब्रिटेन के बीच प्रस्तावित एफटीए सहित तीन समझौतों पर वार्ता पूरी होने में कुछ और समय लग सकता है। दोनों पक्षों को अभी कुछ लंबित मुद्दों को सुलझाना है। चार या पांच मुद्दे हैं। सूत्रों ने यह जानकारी दी। जिन तीन समझौतों पर बातचीत चल रही है, उनमें मुक्त व्यापार समझौता (एफटीए), द्विपक्षीय निवेश समझौता (बीआईटी) और सामाजिक सुरक्षा समझौता शामिल हैं। पिछले हफ्ते लंदन में वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने ब्रिटेन के व्यापार एवं वाणिज्य मंत्री जोनाथन रेनॉल्ड्स के साथ बैठक की थी। बैठक के दौरान वार्ता की प्रगति की समीक्षा की गई थी। एक सूत्र ने बताया कि कुछ महत्वपूर्ण मुद्दे अभी भी बने हुए हैं। कुछ और बैठकें होंगी। जिन मुद्दों पर कुछ और चर्चा की आवश्यकता हो सकती है, उनमें बीआईटी में सनसेट क्लॉज, ब्रिटेन का नया कार्बन कर और डाटा स्थानीयकरण शामिल हैं। दोनों पक्ष 29 अप्रैल को लंदन में इन वार्ताओं के समापन की घोषणा करने की तैयारी कर रहे थे, लेकिन अंतिम समय में मतभेद उभर आए। गोयल ने 29 अप्रैल को लंदन की अपनी दो दिवसीय यात्रा पूरी की। इसके बाद उन्होंने दो मई को ओस्लो (नॉर्वे) और ब्रसेल्स का दौरा किया। केंद्रीय मंत्री राष्ट्रीय राजधानी पहुंच रहे हैं।

केवाईसी सिस्टम को केंद्रीकृत किया जा रहा, सेबी अध्यक्ष बोले- वित्त मंत्रालय कर रहा इस काम में मदद

नई दिल्ली। बाजार नियामक संस्था सेबी, केंद्रीय वित्त मंत्रालय और अन्य बाजार नियामकों के साथ मिलकर केवाईसी सिस्टम को केंद्रीकृत करने की दिशा में काम कर रहा है। सेबी अध्यक्ष तुहिन कांत पांडे ने यह जानकारी दी। केंद्रीय KYC एक ऑनलाइन डेटाबेस है जो ग्राहकों के केवाईसी रिकॉर्ड को केंद्रीकृत तरीके से रखता है, जिसका उद्देश्य वित्तीय संस्थानों में अनुपालन को आसान करना है। सेबी अध्यक्ष ने बताया कि केंद्रीकृत केवाईसी सिस्टम बनाने के लिए काम कर रही समिति की अध्यक्षता वित्त सचिव कर रहे हैं और प्रक्रिया को तेज करने की कोशिश हो रही है। हालांकि उन्होंने इसकी कोई समयसीमा तय नहीं की, लेकिन कहा कि ये जल्द हो जाना चाहिए। उन्होंने केंद्रीकृत केवाईसी सिस्टम की खूबी बताते हुए कहा कि यह व्यवस्था बहुत प्रभावी रहेगी, जहां एक जगह केवाईसी होगी और वो सभी जगह अपने आप हो जाएगी।

परिवर्तित-जीनोम वाली चावल की किस्में विकसित करने वाला भारत बना पहला देश

एजेंसी

नई दिल्ली। केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने जीनोम में परिवर्तन कर तैयार चावल की दो किस्मों के विकास की घोषणा की। यह उपलब्धि हासिल करने वाला भारत दुनिया का पहला देश बन गया। यह वैज्ञानिक अनुसंधान और नवाचार के क्षेत्र में एक नई शुरुआत है। इन नई फसलों के विकास से न केवल उत्पादन बढ़ेगा बल्कि पर्यावरण के लिहाज से भी सकारात्मक परिणाम मिलेंगे। इससे सिंचाई के पानी की बचत होगी और ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में कमी आएगी, जिससे पर्यावरण पर दबाव कम होगा। यहां एक कार्यक्रम में उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए चौहान ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में, विकसित राष्ट्र के लिए भारत का सपना साकार हो रहा है और किसान समृद्धि की ओर बढ़ रहे हैं। आज की उपलब्धि स्वर्ण अक्षरों में लिखी जाएगी। मंत्री ने कहा, आजादी का अमृत

महोत्सव' के दौरान, पीएम मोदी ने किसानों से कृषि चुनौतियों से निपटने के लिए आधुनिक तकनीक अपनाने का आह्वान किया था। उनके शब्दों से प्रेरित होकर, आईसीएआर (भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद) के वैज्ञानिकों ने इन नई किस्मों के निर्माण के साथ कृषि के क्षेत्र में असाधारण उपलब्धियां हासिल की हैं।÷ चौहान ने इस बात पर जोर दिया कि आने वाले समय में खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने, पौष्टिक उत्पादन बढ़ाने और भारत तथा दुनिया दोनों के लिए भोजन उपलब्ध कराने की जरूरत है। साथ ही भारत को दुनिया की खाद्य टोकरी बनाने की भी जरूरत है। उन्होंने कहा, हमें गर्व है कि हमारे प्रयासों से सालाना 48,000 करोड़ रुपए के बासमती चावल का निर्यात हुआ है। मंत्री ने सोयाबीन, अरहर, तुअर, मसूर, उड़द, तिलहन और दलहन के उत्पादन को बढ़ाने के लिए और कदम उठाने की जरूरत पर भी जोर दिया।

चौहान ने माइनस 5 और प्लस 10 फॉर्मूला भी पेश किया, जिसमें बताया गया कि इसमें चावल की खेती के क्षेत्र को पांच मिलियन हेक्टेयर कम करने के बावजूद चावल का उत्पादन 10 मिलियन टन बढ़ाना शामिल है। इससे दलहन और तिलहन की खेती के लिए जगह खाली हो जाएगी। उन्होंने किसानों, खासकर युवा किसानों से उन्नत खेती तकनीक अपनाने का आग्रह किया। चौहान ने कहा, हमें कृषि अनुसंधान को किसानों तक ले जाने की जरूरत है। जब कृषि वैज्ञानिक और किसान मिलकर काम करेंगे, तो चमत्कार होगा।

तीन करोड़ किराना दुकानों को खतरे में डाल रहे 'डार्क स्टोर', अब सड़कों पर उतरेंगे नौ करोड़

एजेंसी

मुंबई। व्यापारी कॉन्फेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (कैट), जो देशभर के 9 करोड़ से अधिक छोटे व्यापारियों का प्रतिनिधित्व करता है, ने 16 से 18 मई 2025 तक नई दिल्ली और उत्तर प्रदेश के वृंदावन में एक निर्णायक तीन दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित करने की घोषणा की है। इसका मकसद विदेशी निवेश वाली ई-कॉमर्स और क्विक कॉमर्स कंपनियां, जैसे अमेजन, फ्लिपकार्ट, ब्लिंकिट, स्विगी, इंस्टामार्ट, जेप्टो और अन्य इसी तरह की प्रमुख कॉमर्स कंपनियों की कथित अनैतिक व अवैध प्रथाओं के खिलाफ राष्ट्रव्यापी आंदोलन की रणनीति बनाना और उसे सक्रिय करना है। कैट का कहना है कि ये कंपनियां, एफडीआई का दुरुपयोग कर रही हैं तो वहीं नियामक उल्लंघन करने से भी पीछे नहीं हट रही हैं। इन कंपनियों की 'डार्क स्टोर्स' जैसी नीतियां, देशभर में 3 करोड़ से अधिक किराना दुकानों की आजीविका खतरे में डाल रही हैं। इसके चलते देशभर के 9 करोड़ व्यापारी सड़कों पर उतरने की योजना बना रहे हैं। यह विरोध सभी राज्यों में किया जाएगा। कैट के राष्ट्रीय अध्यक्ष बीसी भरतिया ने कहा, इस सम्मेलन में देश के विभिन्न राज्यों से 100 से अधिक शीर्ष व्यापारिक नेता भाग लेंगे। उन्होंने ई कॉमर्स कंपनियों पर कई गंभीर आरोप लगाए हैं। कैट का आरोप है कि इन कंपनियों ने विदेशी प्रत्यक्ष निवेश (एफडीआई) का उपयोग बुनियादी ढांचे के विकास के बजाए घाटे की भरपाई और चुनिंदा विक्रेताओं के माध्यम से गहरी छूट देने के लिए किया है, जो एफडीआई मानदंडों का उल्लंघन है। ये प्लेटफॉर्म 'प्रतिस्पर्धा अधिनियम, 2002' का उल्लंघन करते हुए विशेष समझौतों में प्रवेश कर रहे हैं।

सोने के भाव में तेजी, चांदी की घटी चमक

एजेंसी

नई दिल्ली। पिछले कुछ दिन से लगातार गिरावट का सामना करने के बाद आज घरेलू सर्राफा बाजार में सोने की कीमत में तेजी का रुख नजर आ रहा है। दूसरी ओर, चांदी की कीमत में आज 1,000 रुपये प्रति किलोग्राम की गिरावट दर्ज की गई है। सर्राफा बाजारों में सोना आज 200 रुपये से लेकर 220 रुपये प्रति 10 ग्राम तक महंगा हो गया है। कीमत में आई तेजी के कारण देश के ज्यादातर सर्राफा बाजारों में आज 24 कैरेट सोना 95,730 रुपये से लेकर 95,880 रुपये प्रति 10 ग्राम के दायरे में कारोबार कर रहा है। इसी तरह 22 कैरेट सोना आज 87,750 रुपये से लेकर 87,900 रुपये प्रति 10 ग्राम के बीच बिक रहा है। चांदी के भाव में आज गिरावट आने के कारण ये चमकीली धातु दिल्ली सर्राफा बाजार में 97,000 रुपये प्रति किलोग्राम के स्तर पर कारोबार कर रही है। दिल्ली में 24 कैरेट सोना आज 95,880 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है, जबकि 22 कैरेट सोने की कीमत 87,900 रुपये प्रति 10 ग्राम दर्ज की गई है। वहीं देश की आर्थिक राजधानी मुंबई में 24 कैरेट सोना 95,730 रुपये प्रति 10 ग्राम और 95,730 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 87,750 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है। लखनऊ के सर्राफा बाजार में

22 कैरेट सोना 87,750 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। इसी तरह अहमदाबाद में 24 कैरेट सोने की रिटेल कीमत 95,780 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोने की कीमत 87,800 रुपये प्रति 10 ग्राम दर्ज की गई है। इन प्रमुख शहरों के अलावा चेन्नई में 24 कैरेट सोना आज 95,730 रुपये प्रति 10 ग्राम की कीमत पर और 22 कैरेट सोना 87,750 रुपये प्रति 10 ग्राम की कीमत पर बिक रहा है। कोलकाता में भी 24 कैरेट सोना आज 95,880 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर और 22 कैरेट सोना 87,900 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। पटना में 24 कैरेट सोने की कीमत 95,780 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर है, जबकि 22 कैरेट सोना 87,800 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। जयपुर में 24 कैरेट सोना 95,880 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 87,900 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है।

कोलकाता के श्यामा प्रसाद मुखर्जी पोर्ट ने रचा इतिहास, अप्रैल में देश का सबसे तेज़ी से बढ़ता बंदरगाह बना

एजेंसी

कोलकाता। श्यामा प्रसाद मुखर्जी पोर्ट (एसएमपी), कोलकाता ने अप्रैल 2025 में जबरदस्त प्रदर्शन करते हुए देश का सबसे तेज़ी से बढ़ने वाला प्रमुख बंदरगाह बनने का गौरव हासिल किया है। अप्रैल महीने में एसएमपी ने 45.32 प्रतिशत की वार्षिक वृद्धि दर्ज करते हुए 5.967 मिलियन मीट्रिक टन (एमएमटी) कार्गो का संचालन किया, जबकि अप्रैल 2024 में यह आंकड़ा 4.106 एमएमटी था। यह उपलब्धि ऐसे समय में हासिल हुई है जब वैश्विक स्तर पर आर्थिक मंदी और समुद्री व्यापार में बाधाओं का सामना करना पड़ रहा है। इस उल्लेखनीय प्रदर्शन के बाद एसएमपी कोलकाता ने देश के अन्य प्रमुख बंदरगाहों को पीछे छोड़ दिया है। एसएमपी के अध्यक्ष रथेंद्र रमन ने इस उपलब्धि के लिए अपनी टीम की प्रतिबद्धता और मेहनत को श्रेय दिया। उन्होंने कहा, यह सफलता हमारे एसएमपी परिवार की अटूट प्रतिबद्धता और दक्षता का परिणाम है। मैं बंदरगाह, नौवहन और जलमार्ग मंत्रालय का आभार व्यक्त करता हूं, जिनके मार्गदर्शन और

सहयोग ने इस वृद्धि को संभव बनाया। मैं सभी हितधारकों, पोर्ट यूजर्स और अपनी पूरी टीम का हृदय से धन्यवाद करता हूं। एसएमपी कोलकाता के अंतर्गत दो डॉक सिस्टम हैं - हल्दिया डॉक कॉम्प्लेक्स (एचडीसी) और कोलकाता डॉक सिस्टम (केडीएस)। अप्रैल 2025 में एचडीसी ने 4.363 एमएमटी कार्गो का संचालन किया, जो अप्रैल 2024 में 2.993 एमएमटी था। यह 45.77 प्रतिशत की वृद्धि है। वहीं केडीएस ने अप्रैल 2025 में 1.604 एमएमटी कार्गो संभाला, जबकि अप्रैल 2024 में यह आंकड़ा 1.113 एमएमटी था, जो करीब 44.12 प्रतिशत की वृद्धि है। कार्गो हैंडलिंग में यह उछाल विभिन्न वस्तुओं के तेज़ी से बढ़ते संचालन के कारण हुआ। अप्रैल 2025 में एसएमपी कोलकाता ने कुल 75,716 टीईयू (ट्वेंटी फुट इक्विवेलेंट यूनिट्स) कंटेनर हैंडल किए, जिनमें से 62,021 टीईयू केडीएस और 13,695 टीईयू एचडीसी में संभाले गए।

निर्मला सीतारमण करेंगी एडीबी की वार्षिक बैठक में भारत का नेतृत्व

एजेंसी

नई दिल्ली। केंद्रीय वित्त एवं कॉरपोरेट कार्य मंत्री निर्मला सीतारमण एशियाई विकास बैंक (एडीबी) की 58वीं वार्षिक बैठक में भारत का प्रतिनिधित्व करेंगी। यह बैठक 4 से 7 मई तक इटली के मिलान शहर में आयोजित की जा रही है। निर्मला सीतारमण इस बैठक में वित्त मंत्रालय के आर्थिक मामलों के विभाग के अधिकारियों के भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व करेंगी। इसमें एडीबी के बोर्ड ऑफ गवर्नर्स, सदस्य देशों के प्रतिनिधिमंडल और अंतरराष्ट्रीय वित्तीय संस्थानों के अधिकारी भाग लेंगे वित्त मंत्री बैठक के मुख्य सत्रों में हिस्सा लेंगी। वे गवर्नर्स के बिजनेस सेशन और

गवर्नर्स प्लेनरी सेशन में भाग लेंगी। इसके अलावा वे भविष्य के लचीलेपन के लिए सीमा पार सहयोग विषय पर गवर्नर्स सेमिनार में पैनलिस्ट के रूप में शामिल होंगी। बैठक के दौरान निर्मला सीतारमण एडीबी के अध्यक्ष से द्विपक्षीय बातचीत करेंगी। वे आईएफएडी के अध्यक्ष और जेबीआईसी के गवर्नर से भी मुलाकात करेंगी। इसके अलावा वे इटली, जापान और भूटान के वित्त मंत्रियों के साथ भी बैठक करेंगी। मिलान प्रवास के दौरान वे भारतीय समुदाय से संवाद करेंगी। वे वैश्विक थिंक-टैंकों, व्यापारिक नेताओं और प्रमुख सीईओ से भी मुलाकात करेंगी। वित्त मंत्री बोकोनी विश्वविद्यालय में आर्थिक और जलवायु लचीलेपन में संतुलन विषय पर आयोजित नेक्स्ट मिलान फोरम के पूर्ण सत्र में भी भाग लेंगी। इस दौरे से भारत की वैश्विक आर्थिक भागीदारी को मजबूती मिलने की उम्मीद है।

भारत की उदार नीति फार्मा, वाहन व पर्यटन बना वैश्विक निवेशकों का पसंदीदा गंतव्य; एफडीआई से खुले नए

एजेंसी

नयी दिल्ली। अवसर डेलॉय के अनुसार, भारत ने बीमा, बीमा मध्यस्थ, पर्यटन निर्माण, अस्पताल और चिकित्सा उपकरण जैसे प्रमुख क्षेत्रों सहित अधिकांश क्षेत्रों में स्वतः मंजूर मार्ग के तहत 100 प्रतिशत प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की अनुमति देकर महत्वपूर्ण प्रगति की है। यह कदम स्थिरता का संकेत देता है, जो वैश्विक निवेशकों को भारत की विशाल और बढ़ती अर्थव्यवस्था में उतरने के लिए एक बेहतर अवसर प्रदान करता है। 70 अरब डॉलर की राष्ट्रीय मौद्रीकरण पाइपलाइन और 100 से अधिक शहरों में औद्योगिक गलियारे के विकास के समर्थन से भारत वैश्विक निवेशकों को निवेश के लिए तैयार क्षेत्र प्रदान कर रहा है। पर्यटन (जीडीपी में 199.6 अरब डॉलर से अधिक का योगदान) और आतिथ्य जैसे क्षेत्र अब होटल और मनोरंजन सुविधाओं के निर्माण में 100 प्रतिशत एफडीआई की मंजूरी देते हैं। इससे पारदर्शी और स्थिर निवेश स्थल के रूप में भारत की छवि और मजबूत होती है। रिपोर्ट के अनुसार, बुनियादी ढांचे को बढ़ावा देने और एफडीआई उदारीकरण से लॉजिस्टिक्स, रियल एस्टेट और शहरी विकास में अभूतपूर्व अवसर पैदा हो रहे हैं। कुल मिलाकर, पिछले वित्त वर्ष में अप्रैल-दिसंबर के दौरान देश में एफडीआई 27 प्रतिशत बढ़कर 40.67 अरब डॉलर हो गया।2023-24 की समान अवधि में यह 32 अरब डॉलर था। इसके अलावा, भारत कई देशों के साथ व्यापार समझौतों के माध्यम से वैश्विक वाणिज्य में अपनी भूमिका को मजबूत कर रहा है।

साप्ताहिक शेयर समीक्षाः लगातार तीसरे सप्ताह मजबूती के साथ बंद होने में सफल रहा शेयर बाजार

एजेंसी

नई दिल्ली। घरेलू शेयर बाजार पिछले सप्ताह के दौरान लगातार उतार-चढ़ाव का सामना करने के बावजूद साप्ताहिक आधार पर मजबूती के साथ बंद होने में सफल रहा। ये लगातार तीसरा सप्ताह है, जब शेयर बाजार मजबूती के साथ बंद होने में सफल रहा है। माना जा रहा है कि ग्लोबल मार्केट में बने पॉजिटिव सेंटीमेंट्स, टैरिफ वॉर में नरमी आने के संकेत, रिकॉर्ड जीएसटी कलेक्शन, कंपनियों के मिले-जुले नतीजे और विदेशी निवेशकों द्वारा लगातार की जा रही खरीदारी के कारण घरेलू शेयर बाजार साप्ताहिक आधार पर करीब 1 प्रतिशत की मजबूती के साथ बंद होने में सफल रहा। 2 मई यानी खत्म हुए कारोबारी सप्ताह में बीएसई का सेंसेक्स साप्ताहिक आधार पर 1,289.46 अंक यानी 1.62 प्रतिशत की मजबूती के साथ 80,501.99 अंक के स्तर पर बंद हुआ। इसी तरह एनएसई के निफ्टी ने साप्ताहिक आधार पर 307.35 अंक यानी 1.2 प्रतिशत उछल कर 24,346.70 अंक के स्तर पर पिछले सप्ताह के कारोबार का अंत किया। मासिक आधार पर देखा जाए तो सेंसेक्स और निफ्टी दोनों सूचकांकों ने लगभग 3.5 प्रतिशत की बढ़त हासिल की। 28 अप्रैल से 2 मई तक के कारोबारी सप्ताह के दौरान बीएसई का लार्जकैप इंडेक्स करीब 1 प्रतिशत की मजबूती के साथ बंद होने में सफल रहा। इस इंडेक्स में शामिल हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स, रिलायंस इंडस्ट्रीज, अडाणी पोर्ट्स एंड स्पेशल इकोनॉमिक जोन, भारत पेट्रोलियम कॉरपोरेशन, इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन, मारुति सुजुकी इंडिया और डीएलएफ के शेयर टॉप गेनर्स की सूची में शामिल हुए। दूसरी ओर श्रीराम फाइनेंस, जेएसडब्ल्यू स्टील, अडाणी पावर, श्रीसीमेंट्स, एवेन्यू सुपरमार्ट्स, स्विगी, बजाज फिनसर्व, मैनकाइंड फार्मा, अल्ट्राटेक सीमेंट, इंडस टावर्स और वारी एनर्जीज के शेयर लार्ज कैप इंडेक्स के टॉप लूजर्स की सूची में शामिल हुए। बीएसई का मिडकैप इंडेक्स पिछले सप्ताह के कारोबार के बाद 0.4 प्रतिशत की बढ़त के साथ बंद हुआ। इस इंडेक्स में शामिल मझगांव डॉक शिपबिल्डर्स, ट्यूब इन्वेस्टमेंट्स ऑफ इंडिया, विशाल मेगा मार्ट, स्कैफ्लर इंडिया, इंद्रप्रस्थ गैस लिमिटेड, सोना बीएलडब्ल्यू प्रेसीजन फोर्जिंग्स और प्रेस्टीज एस्टेट प्रोजेक्ट्स टॉप गेनर की सूची में शामिल हुए। दूसरी ओर फिनिक्स मिल्स, टाटा टेक्नोलॉजीज, पतंजलि फूड्स, स्टार हेल्थ एंड एलाइड इंश्योरेंस कंपनी, थर्मेक्स और वन 97 कम्युनिकेशंस (पेटीएम) मिड कैप इंडेक्स के टॉप लूजर्स की सूची में शामिल हुए। लार्जकैप और मिडकैप के विपरीत बीएसई के स्मॉलकैप इंडेक्स ने पिछले सप्ताह के कारोबार के बाद 1.3 प्रतिशत की कमजोरी के साथ कारोबार का अंत किया। इस इंडेक्स में शामिल पारस डिफेंस एंड स्पेस टेक्नोलॉजीज, गो फैशन इंडिया, स्पोर्ट किंग इंडिया, प्राइम फोकस, सोनाटा सॉफ्टवेयर, बार्बेक्यू नेशन हॉस्पिटैलिटी, गार्डनरिच शिपबिल्डर्स एंड इंजिनियर्स, क्रिस्टल इंटीग्रेटेड सर्विसेज और जायसवाल निको इंडस्ट्रीज के शेयरों में 15 से 29 प्रतिशत तक की तेजी दर्ज की गई।

'बर्बाद होने जा रही मुद्रा पर कभी दांव नहीं लगाऊंगा', वॉरेन बफेट की डॉलर पर चेतावनी

एजेंसी

वाशिंगटन। बर्कशायर हैथवे के चेयरमैन और सीईओ वॉरेन बफेट ने डॉलर को लेकर चेतावनी दी। बफेट ने कहा कि मैं कभी भी ऐसी मुद्रा पर दांव नहीं लगाऊंगा जिसके बर्बाद होने का खतरा हो। वार्षिक शेयरधारक बैठक में बफेट ने वैश्विक मामलों और व्यापार को लेकर शेयरधारकों और निवेशकों से बात की। इस बैठक में उन्होंने अपनी सेवानिवृत्ति की भी घोषणा की। वॉरेन ने कहा कि मैं ऐसी मुद्रा पर कभी दांव नहीं लगाऊंगा, जिसके बर्बाद होने का खतरा हो। मौजूदा स्थितियों को देखते हुए वॉरेन का मानना है कि आने वाले वक्त में डॉलर बर्बाद हो जाएगा। उन्होंने कहा कि संतुलित व्यापार पूरे विश्व के लिए अच्छा है। व्यापार जितना संतुलित होगा, उतना ही बेहतर होगा। उन्होंने कहा कि व्यापार को कभी हथियार नहीं बनाया जाना चाहिए। व्यापार युद्ध का एक कार्य हो सकता है। लेकिन अमेरिका में इसे लेकर जो रवैया पैदा हुआ है, उसे देखने की जरूरत है। वॉरेन बफेट ने कहा कि हम एक समृद्ध विश्व चाहते हैं। आठ देशों के पास परमाणु हथियार हैं, जिनमें से कुछ काफी अस्थिर हैं, मुझे नहीं लगता कि ऐसी दुनिया की रचना करना एक अच्छा है, जहां कुछ देश कहें कि हम जीत गए। विश्व जितना अधिक समृद्ध होगा, यह हमारी कीमत पर नहीं होगा। हम उतने ही अधिक समृद्ध होंगे और उतना ही अधिक सुरक्षित महसूस करेंगे।बफेट ने कहा कि अमेरिका में पूंजीवाद ने ऐसी सफलता हासिल की है जैसी हमने पहले कभी नहीं देखी होगी। हम अनसुलझी समस्याओं को सुलझाने का प्रयास नहीं कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि दूसरों के पैसे से बेवकूफी भरी चीजें करना अपने पैसे से करने से कहीं ज्यादा आसान है। यह सरकार की भी समस्याएं हैं। हम इसे निजी उद्यम के पास नहीं लाना चाहते। उन्होंने कहा कि मुझे यह कहते हुए शर्म आ रही है कि टिम कुक ने बर्कशायर को उससे कहीं अधिक धन कमाया है जितना मैंने बर्कशायर हैथवे को कमाया है। हम बड़ी मंदी से गुजरे हैं, हम विश्व युद्धों से गुजरे हैं, हम परमाणु बम के विकास से गुजरे हैं, जिसके बारे में हमने मेरे जन्म के समय कभी सपने में भी नहीं सोचा था, इसलिए मैं इस तथ्य से निराश नहीं हूं कि ऐसा नहीं लगता कि हमने सभी समस्याओं का समाधान कर लिया है।

'चीन से सामान आयात कर यूएस भेजा तो देना पड़ेगा भारी टैक्स'

एजेंसी

नई दिल्ली। वाणिज्य मंत्रालय ने भारतीय निर्यातकों को सख्त चेतावनी दी है कि अमेरिका को माल भेजते वक्त वहां के रूल्स ऑफ ओरिजिन (उत्पत्ति के नियम) का पूरी तरह पालन करें। मंत्रालय ने कहा कि अगर चीन जैसे उच्च-शुल्क

वाले देशों से उत्पाद खरीदकर पर्याप्त मूल्य संवर्धन के बगैर भारत से अमेरिका भेजा गया, तो इसे ट्रांसशिपमेंट माना जाएगा। ट्रांसशिपमेंट एक देश से उत्पादों को खुद के देश में आयात करने और फिर इसे आमतौर पर बगैर खास बदलाव या मूल्य संवर्धन (उत्पाद की कीमत बढ़ाने) के दूसरे देश में निर्यात करने की प्रक्रिया है। मंत्रालय का कहना है कि यह अमेरिका के उत्पत्ति के नियमों के खिलाफ है। इससे भारतीय निर्यातकों को नुकसान हो सकता है और उन पर भारी टैक्स या प्रतिबंध लग सकते हैं। मंत्रालय के एक अधिकारी के मुताबिक, इस मामले में मंत्रालय उद्योगों के साथ मिलकर काम करेगा ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि भारतीय निर्यातकों को कोई नुकसान न हो।

टॉप 10 में शामिल 7 कंपनियों के मार्केट कैप में 2.31 लाख करोड़ की वृद्धि

एजेंसी

नई दिल्ली। घरेलू शेयर बाजार में पिछले कारोबारी सप्ताह के दौरान हुई खरीद-बिक्री के कारण देश की टॉप 10 मोस्ट वैल्यूड कंपनियों में से 7 कंपनियों के मार्केट कैप में 2.31 लाख करोड़ रुपये से अधिक की बढ़ोतरी हो गई। इनमें सबसे अधिक फायदा रिलायंस इंडस्ट्रीज को हुआ। दूसरी ओर, टॉप 10 में शामिल 3 कंपनियों के मार्केट कैप में 18,740.33 करोड़ रुपये की गिरावट आ गई। इनमें बजाज फाइनेंस को सबसे ज्यादा नुकसान का सामना करना पड़ा। इस सप्ताह के कारोबार के दौरान रिलायंस इंडस्ट्रीज, एचडीएफसी बैंक, भारती एयरटेल, आईसीआईसीआई बैंक, स्टेट बैंक ऑफ इंडिया (एसबीआई), इंफोसिस और आईटीसी के मार्केट कैप में 2,31,177.30 करोड़ रुपये की बढ़ोतरी हो गई। दूसरी ओर, टाटा कंसलटेंसी सर्विसेज (टीसीएस), बजाज फाइनेंस और हिंदुस्तान यूनिलीवर के मार्केट कैप में 18 हजार करोड़ रुपये से अधिक की गिरावट आ गई। 28 अप्रैल से 2 मई के बीच हुए कारोबार के दौरान रिलायंस इंडस्ट्रीज का मार्केट कैप 1,64,959.62 करोड़ रुपये बढ़ कर 19,24,235.76 करोड़ रुपये के स्तर पर आ गया। इसी तरह भारती एयरटेल का मार्केट कैप 20,755.67 करोड़ रुपये उछल कर 10,56,029.91 करोड़ रुपये के स्तर पर पहुंच गया। इसके अलावा, आईसीआईसीआई बैंक का मार्केट कैप 19,381.9 करोड़ रुपये बढ़ कर के 10,20,200.69 करोड़ रुपये के स्तर पर, एचडीएफसी बैंक का मार्केट कैप 11,514.78 करोड़ रुपये की उछाल के साथ 14,73,356.95 करोड़ रुपये के स्तर पर, इंफोसिस का मार्केट कैप 10,902.31 करोड़ रुपये उछल कर 6,25,668.37 करोड़ रुपये के स्तर पर, आईटीसी का मार्केट कैप 2,502.82 करोड़ रुपये की बढ़त के साथ 5,38,294.86 करोड़ रुपये के स्तर पर और स्टेट बैंक ऑफ इंडिया (एसबीआई) का मार्केट कैप 1,160.20 करोड़ रुपये बढ़ कर 7,14,014.23 करोड़ रुपये के स्तर पर आ गया। दूसरी ओर, बजाज फाइनेंस का मार्केट कैप 15,470.50 करोड़ रुपये कम होकर 5,50,726.80 करोड़ रुपये के स्तर पर आ गया। इसी तरह हिंदुस्तान यूनिलीवर का मार्केट कैप 1,985.41 करोड़ रुपये घट कर 5,45,845.29 करोड़ रुपये के स्तर पर पहुंच गया। इसके अलावा टाटा कंसलटेंसी सर्विसेज (टीसीएस) का मार्केट कैप 1,284.42 करोड़ रुपये की गिरावट के साथ 12,45,996.98 करोड़ रुपये के स्तर पर पहुंच गया। मार्केट कैप के लिहाज से रिलायंस इंडस्ट्रीज 19,24,235.76 करोड़ रुपये के बाजार पूंजीकरण (मार्केट कैप) के साथ देश की सबसे अधिक मार्केट कैप वाली कंपनी रही। इसके बाद एचडीएफसी बैंक (कुल मार्केट कैप 14,73,356.95 करोड़ रुपये), टीसीएस (कुल मार्केट कैप 12,45,996.98 करोड़ रुपये), भारती एयरटेल (कुल मार्केट कैप 10,56,029.91 करोड़ रुपये), आईसीआईसीआई बैंक (कुल मार्केट कैप 10,20,200.69 करोड़ रुपये), स्टेट बैंक ऑफ इंडिया (कुल मार्केट कैप 7,14,014.23 करोड़ रुपये), इंफोसिस (कुल मार्केट कैप 6,25,668.37 करोड़ रुपये), बजाज फाइनेंस (कुल मार्केट कैप 5,50,726.80 करोड़ रुपये) हिंदुस्तान यूनिलीवर (कुल मार्केट कैप 5,45,845.29 करोड़ रुपये) और आईटीसी (कुल मार्केट कैप 5,38,294.86 करोड़ रुपये) के नाम सबसे मूल्यवान टॉप 10 कंपनियों की लिस्ट में दूसरे से दसवें स्थान पर बने रहे।

गर्मी के फल तरबूज का रस चेहरे पर लगाने से क्या होता है?

तरबूज में विटामिन ए, विटामिन सी, पोटेशियम, मैग्नीशियम और एंटीऑक्सीडेंट जैसे पोषक तत्व होते हैं जो सेहत के साथ-साथ स्किन के लिए भी फायदेमंद होते हैं. तरबूज की तासीर ठंडी होती है इसलिए यह शरीर को हाइड्रेट रखता है. इस आर्टिकल में हम आपको बताएंगे की क्या आप चेहरे पर तरबूज का रस लगा सकते हैं.

गर्मी के मौसम में मीठे और रसीले फल जैसे तरबूज, खरबूजा बाजार में खूब मिलते हैं और लोग इसे खाना खूब पसंद करते हैं. इसमें कई पोषक तत्व होते हैं जैसे पोटेशियम, लाइकोपिन, एंटीऑक्सीडेंट, विटामिन सी और ए. गर्मियों में डिहाइड्रेशन की समस्या से होती है जिस वजह से कई बीमारियां हो जाती है और सेहत पर बुरा असर भी पड़ता है. तरबूज में पर्याप्त मात्रा में पानी होता है जिस वजह से गर्मी में ये शरीर को हाइड्रेट रखने में हेल्प करता है. इसे खाने से सेहत के साथ-साथ आपको स्किन से जुड़ी समस्याएं जैसे पिंपल, झुर्रियों, दाग-धब्बों से राहत मिलती है. पर क्या आप जानते हैं कि स्किन को ग्लोइंग बनाने के लिए तरबूज के रस को चेहरे पर लगाया जा सकता है.

ग्लोइंग स्किन के लिए चेहरे पर हम बहुत सारे नेचुरल प्रोडक्ट्स लगाते हैं जैसे कि मुल्तानी मिट्टी, आलू का रस, एलोवेरा, गुलाब जल पर क्या आपने तरबूज के रस को चेहरे पर लगाने की बात सुनी है. हां सुनने में अटपटा लगता है पर चेहरे पर तरबूज का रस आप लगा सकते हैं और इसके कई फायदे भी हैं.

स्किन को रखता है हाइड्रेट

तरबूज में भरपूर मात्रा में पानी होता है जिसके कारण यह स्किन को हाइड्रेट रखने में मदद करता है और स्किन का नेचुरल ग्लो बरकरार रखता है. इसमें हाइड्रेटिंग गुण होते हैं जो चेहरे की ड्राईनेश को कम करने में मदद करता है.

पिंपल को करता है कम

तरबूज में एंटीऑक्सीडेंट गुण होते हैं इसलिए इसके रस को चेहरे पर लगाने से पिंपल्स की समस्या खत्म हो जाती है और ये चेहरे को ठंडक देता है और एक्ने को कम कर सकता है.

दाग-धब्बों को कम करता है

तरबूज को खाने के साथ-साथ आप इसके रस को चेहरे पर लगा भी सकते हैं क्योंकि इसमें विटामिन सी भरपूर मात्रा में होता है इसलिए ये चेहरे पर मौजूद दाग-धब्बों को कम करने में मदद करता है और स्किन को ग्लोइंग बनाता है.

ग्लोइंग स्किन

ग्लोइंग स्किन पाने के लिए आप तरबूज के रस में थोड़ा सा दूध मिलाकर फेस पर लगा सकते हैं और सूखने के बाद चेहरे को ठंडे पानी से धो ले ये आपके फेस पर नेचुरल ग्लो लाने में मदद करता है.

ग्लोइंग स्किन पाने के लिए आप तरबूज के रस से बनी यह होम रेमेडीज का इस्तेमाल कर सकते हैं इससे आपकी त्वचा का प्राकृतिक निखार बना रहता है.

खुफिया सूचना पूरी तरह पुख्ता क्यों नहीं हो पाती है

कच्ची और अपुष्ट सूचनाओं का संग्रहण, मिलान, विश्लेषण, प्रसार, मध्यस्थता, नीति अधिनिर्णय और निर्णय लेने की प्रक्रिया के बाद ही कार्रवाई के लिए नीति बनायी जाती है। इस प्रक्रिया में किसी भी प्रकार का गैप रहना पूरी सूचना उपलब्ध न हो पाने की स्थिति पैदा करेगा जिसमें सरकार के किसी भी विंग के पास पहले से ही किसी न किसी रूप में उपलब्ध तकनीकी बिंदुओं सहित खुफिया जानकारी नीतिया कार्रवाई में बदलाव संभव नहीं होता है।

बैसारन (पहलगाम, कश्मीर) में नरसंहार के सिलसिले में कुछ रिपोर्टों ने दावा किया कि यह एक खुफिया या सुरक्षा विफलता थी। अब तक यह स्पष्ट नहीं है कि अमरनाथ मंदिर से 50 किलोमीटर दूर पर्यटकों के लोकप्रिय पिकनिक स्थल बैसारन घास के मैदानों को एकीकृत कमान% के तहत काम करने राज्य के किसी भी सुरक्षा समूह द्वारा असुरक्षित क्यों छोड़ दिया गया था? एक अपुष्ट रिपोर्ट में कहा गया है कि पिकनिक स्थल को आधिकारिक तौर पर खोला नहीं गया था और इसलिए सुरक्षा व्यवस्था के बारे में विस्तार से तैयारी नहीं की गई थी।यह प्रयास इस चूक के लिए किसी को दोषी ठहराना नहीं बल्कि यह समझाना है कि सामान्य रूप से सरकारों द्वारा %सुरक्षा के लिए उत्पन्न खतरों% को कैसे प्रोसेस किया जाता है और इनमें %फासला% कैसे रखा जाता है। चूंकि जम्मू-कश्मीर एक संवेदनशील क्षेत्र है इसलिए राज्य पुलिस खुफिया विभाग के अलावा यहां देश भर के असैनिक नागरिक, सैन्य और अर्द्ध सैनिक विभागों से संबंधित खुफिया एजेंसियों की बड़ी संख्या में मौजूदगी है।यद्यपि राष्ट्रीय खुफिया एजेंसियां अपने मुख्यालय को रिपोर्ट करती हैं, इसके अलावा वे उप राज्यपाल और उनके अधीन एकीकृत कमान को सुरक्षा परिदृश्य में किसी भी बदलाव से अवगत कराते हैं ताकि स्थानीय खतरे की अवधारणा के आधार पर निवारक तंत्र में उपयुक्त रूप से बदलाव किया जा सके। हालांकि इस तरह की खुफिया जानकारी जब उप राज्यपाल (जम्मू-कश्मीर में कानून और व्यवस्था अभी भी उनके अधीन है) जैसे उच्च अधिकारियों को रिपोर्ट की जाती है तो उसे सावधानीपूर्वक सत्यापित किया जाना चाहिए क्योंकि इस तरह के अलर्ट के बाद की कार्रवाई के राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय प्रभाव होते हैं।

कच्ची और अपुष्ट सूचनाओं का संग्रहण, मिलान, विश्लेषण, प्रसार, मध्यस्थता, नीति अधिनिर्णय और निर्णय लेने की प्रक्रिया के बाद ही कार्रवाई के लिए नीति बनायी जाती है। इस प्रक्रिया में किसी भी प्रकार का गैप रहना पूरी सूचना उपलब्ध न हो पाने की स्थिति पैदा करेगा जिसमें सरकार के किसी भी विंग के पास पहले से ही किसी न किसी रूप में उपलब्ध तकनीकी बिंदुओं सहित खुफिया जानकारी नीति या कार्रवाई में बदलाव संभव नहीं होता है। इसकी वजह से खुफिया या सुरक्षा विफलता का अभाव महसूस होता है।

खुफिया और सुरक्षा एजेंसियों को अक्सर बेतरतीब तरीके से, टुकड़ों-टुकड़ों में आधी-अधूरी जानकारी मिलती है जो पूरी तस्वीर का खुलासा नहीं करती हैं, खासकर जब रुझान अल्पकालिक होते हैं। कई मौकों पर एजेंसियों के पास सुरक्षा संबंधी विषयों पर विविध, अपूर्ण या यहां तक कि परस्पर विरोधी खुफिया जानकारी होती है जिसके कारण नीति संबंधी निर्णय लेने वालों को एक परिपूर्ण तस्वीर प्राप्त करने के लिए सूचना के आंतरिक मतभेदों को सुलझाने के लिए एक सक्षम मध्यस्थ की आवश्यकता होती है। यह इंटेलिजेंस आर्बिट्रेशन की प्रक्रिया है।यदि यह विफल रहता है तो सूचनाओं में अनेक रिक्त स्थान रह जाते हैं। ऐसा कई बार हुआ है। एक खुफिया मध्यस्थ भी खुफिया में लापता रिक्त स्थानों को भरने के लिए अपने स्वयं के दृष्टिकोण का उपयोग करता है। इसके लिए वह मीडिया जानकारी तक का उपयोग करता है जिसे ओपन-सोर्स इंटेलिजेंस (ओएसआई) कहा जाता है।

कानून और व्यवस्था अधिकारियों तथा राष्ट्रीय सूचना एजेंसियों द्वारा तैयार की गई सूचना के प्रसंस्करण में बहुत अंतर है। जहां राष्ट्रीय एजेंसियां रणनीतिक खुफिया जानकारी देती हैं वहीं राज्य इकाइयां सामरिक जानकारी का मंथन करती हैं। रणनीतिक जानकारी आम तौर पर पूरे देश को प्रभावित करने वाला दीर्घकालिक संकेत या लंबे समय सीमा का होता है जबकि सामरिक सूचना अल्पकालिक रुझान है जो पुलिस कार्रवाई जैसे छोटे क्षेत्रों को प्रभावित करता है। हालांकि, विशेष रूप से विदेशी हस्तक्षेप के साथ आतंकवाद विरोधी कार्रवाई रणनीतिक और सामरिक आयाम ग्रहण कर सकती है जिसके लिए यह अध्ययन करने और अनुमान लगाने की क्षमता की आवश्यकता होती है कि विदेशी सरकारों या विदेश आधारित संगठन जैसे लश्कर हमारे खिलाफ कैसे काम करेंगे जिसे संभालने में केवल राष्ट्रीय सुरक्षा एजेंसियां ही सक्षम हैं।

फिर भी, ऐसे मामले हैं जब यह प्रक्रिया पश्चिमी देशों में भी विफल रही थी। यूएस 9/11 आयोग ने अपनी रिपोर्ट फोरसाइट एंड हाइन्ड्साइट (पूर्वानुमान और घटना के बाद उसकी कारण मीमांसा करना) के अध्याय 11 में इन रुझानों पर विस्तार से चर्चा करते हुए कहा कि पूरी दुनिया में ओसामा बिन लादेन की बड़े पैमाने पर अमेरिका विरोधी गतिविधियां जारी रहने के बावजूद किसी भी एजेंसी ने 9/11 जैसे परिदृश्य का अंदाजा नहीं लगाया था। इस हमले में अमेरिकी यात्री विमानों को अमेरिका के खिलाफ हथियार बनाया गया था- %सीआईए ने संभावित अपहरण परिदृश्यों का कोई विश्लेषणात्मक आकलन नहीं लिखा था% जबकि उत्तरी अमेरिकी एयरोस्पेस डिफेंस कमांड ने सामूहिक विनाश के हथियार ले जाने में विदेशी विमान के उपयोग का अनुमान लगाया था। किसी ने नहीं सोचा था कि अल-कायदा अमेरिकी विमानों का इस्तेमाल करेगा।आयोग ने यह भी संकेत दिया कि अमेरिका में खुफिया और सुरक्षा एजेंसियों की बड़ी संख्या के कारण भ्रम की स्थिति पैदा हो गयी एवं जिम्मेदारी कम हो गई थी। ऐसी चेतावनी जारी करने की जिम्मेदारी के लिए सीआईए में खाड़ी युद्ध के बाद 1992 में बनाए गए नेशनल इंटेलिजेंस ऑफिसर फॉर वार्निंग का पद खत्म कर दिया गया और काउंटर-टेररिज़्म सेंटर (सीटीसी) को यह जिम्मेदारी दी गई। हालांकि सीटीसी ने यात्री विमानों में हथियार रखने की संभावना पर एक भी चेतावनी जारी नहीं की। दूसरे शब्दों में, एक शीर्ष-भारी भरकम खुफिया संरचना होने के कारण बेहतर अलर्ट जारी नहीं हुए।इसी तरह मुंबई में 26/11 हमले पर पुलिस प्रतिक्रिया की जांच करने के लिए गठित समिति के सदस्य के रूप में महाराष्ट्र सरकार की विफलता पर ध्यान दिया जो उनके अधिकार क्षेत्र से बाहर कुछ घटनाओं को देखने में विफल रही जिनका यदि अध्ययन किया जाता तो भयावह मुंबई हमले को रोका जा सकता था।30 जुलाई, 2006 को सीएनएन-आईबीएन टीवी चैनल ने तत्कालीन राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार की चेतावनी के मद्देनजर हमारे पश्चिमी तटीय सुरक्षा उपायों का एक सर्वेक्षण प्रसारित किया कि हमारे परमाणु ऊर्जा प्रतिष्ठानों को पाकिस्तानी आतंकवादी समुद्र से निशाना बना सकते हैं। इसके बाद यह उम्मीद की गई कि महाराष्ट्र पुलिस तटीय गश्त को सतर्क व सशक्त करेगी। चैनल की टीम ने पाया कि तटीय गश्त कही नहीं देखी गई थी- यद्यपि बीएआरसी अब सीआईएसएफ की भारी सुरक्षा में है लेकिन यहां समुद्र के माध्यम से पहुंचे जाने की आशंका चिंता का कारण है।इसी चैनल ने 16 जून 2007 को एक और खबर प्रसारित की जिसे लेकर मुंबई और नई दिल्ली को चिंतित होना चाहिए था लेकिन ऐसा नहीं हुआ। रिपोर्ट में कहा गया है कि लश्कर-ए-तैयबा के आठ संदिग्ध आतंकवादियों ने मुंबई के पास समुद्री मार्ग से घुसपैठ की थी और उनमें से दो- अब्दुल मजीद और मोहम्मद जमील को जम्मू-कश्मीर पुलिस ने मार्च में राजौरी मे गिरफ्तार किया था। समुद्री रास्ते से आतंकवादियों के घुसने की यह पहली ज्ञात घटना है।टीवी चैनल ने फिर से खबर दी थी जिससे संकेत मिलता है कि आठ आतंकवादियों ने 23 फरवरी को पाकिस्तान छोड़ दिया था व कथित लश्कर ऑपरेटिव आसिफ तथा अब्बास द्वारा संचालित एक भारतीय नाव में बैठ गए। भारतीय तट पर समीर नाम के एक अन्य ऑपरेटिव ने उनका स्वागत किया। चैनल ने जम्मू-कश्मीर के पुलिस महानिदेशक गोपाल शर्मा का भी साक्षात्कार लिया जिन्होंने कहा था- लश्कर के दो लोगों को राजौरी मे गिरफ्तार किया गया था एवं उन्होंने सूचित किया है कि आठ लोग आए थे और हां, इस मामले में समुद्री मार्ग का इस्तेमाल किया गया था।अठारह महीने से भी कम समय के बाद 26/11 की घटना में दस आतंकवादियों ने मुंबई में तबाही मचाने के लिए नकली भारतीय (हिंदू) पहचान दस्तावेजों के साथ उसी मोडस ऑपरेंडी का इस्तेमाल किया। 2007 की रिपोर्ट में कहा गया था- जमील के पास शुरू में मुंबई के चेंबूर का एक छात्र आईडी था जिसमें उसका नाम धीरज था। यहां तक कि इन लोगों के पास दिल्ली और चंडीगढ़ के फर्जी दस्तावेज थे और जम्मू में उनके पास मतदाता पहचान पत्र भी थे। इससे पता चलता है कि सूचनाओं के विश्लेषण, उनके निहित अर्थ को समझना और मामले की गंभीरता को नजरअंदाज करना तथा यह भरोसा करना कि आतंकवादी एक ही तरह की कार्यपद्धति (मोडस ऑपरेंडी) अपनाएंगे इस तरह की सोच के परिणाम कितने भयंकर हो सकते है यह हम देख चुके हैं। सुरक्षा के लिए उत्पन्न खतरों के संबंध में मिली खुफिया सूचना पूरी तरह पुख्ता करना चाहिए। सतर्कता बरतने के लिए सरकारी एजेंसियो को आतंकवादियों की कार्यप्रणाली से चार कदम आगे ही रहना चाहिए।।

संपादकीय

वक्त की आवाज़

निर्मम हत्या कर दी थी। उनकी पत्नी हिमांशी नरवाल ने अपने जीवनभर सालने वाले दुख के बावजूद अपील की है कि इस आतंकी हमले के लिये जिम्मेदार अपराधियों के अलावा किसी को कोई सजा न मिले। विनय नरवाल के जन्मदिन पर आयोजित रक्तदान शिविर में उन्होंने कहा ' हम नहीं चाहते कि लोग अल्पसंख्यकों व कश्मीरियों को अपने आक्रोश का शिकार बनाएं।' बाकायदा, उन्होंने इस मौके पर देश में शांति बनाये रखने और सांप्रदायिक सद्भाव कायम रखने की जोरदार अपील की। जो उस सोच के विपरीत है जो पहलगाम के बैसरन में हुए भयावह आतंकी हमले के बाद देश में उभारी जा रही है। दरअसल, हिमांशी ने उन उग्र सोच के लोगों को स्पष्ट संदेश देने का प्रयास किया, जो इस राष्ट्रीय त्रासदी का लाभ उठाकर सांप्रदायिक प्रतिशोध की सोच को बढ़ावा दे रहे हैं। उल्लेखनीय है कि आगरा में एक परेशान करने वाला मामला प्रकाश में आया, जहां एक बिरयानी विक्रेता की हत्या के बाद सोशल मीडिया पर प्रचारित किया गया कि यह पहलगाम त्रासदी का प्रतिशोध है। निस्संदेह, ऐसी संकीर्ण मानसिकता का राजनीतिक और धार्मिक नेताओं द्वारा विरोध न किया जाना, अक्षम्य ही कहा जाएगा। निश्चित रूप से ऐसी अप्रिय व परेशान करने वाली घटनाएं हमारे धर्मनिरपेक्ष ताने-बाने को ही नुकसान पहुंचाती हैं। खासकर उस ताने-बाने को, जो पहले से ही कमजोर पड़ रहा है। निर्विवाद रूप से कश्मीर के पहलगाम में हुई सांप्रदायिक हत्याओं के जरिये आतंकवादियों का मुख्य मकसद देश में हिंदू-मुस्लिमों के बीच तनाव पैदा करके देश की एकता को कमजोर करना था। ऐसे में यदि हम भी उसी सोच के साथ प्रतिक्रिया देने लगे तो कहीं न कहीं हम परोक्ष रूप से आतंकवादियों के मंसूबों को ही पूरा कर रहे होंगे।यह निर्विवाद तथ्य है कि हमें इसी समाज में रहना है और बेहतर होगा कि हम तमाम संकीर्णताओं को त्यागकर और मिलजुलकर ही रहें। यदि हम आतंकवादियों की सोच का प्रतिकार उनके एजेंडे के अनुरूप करेंगे तो निश्चिय ही गंगा-जमुनी संस्कृति को नुकसान पहुंचेगा। आतंकवादियों का मंसूबा जम्मू-

कश्मीर ही नहीं पूरे देश में शांति को भंग करना था। ऐसी किसी भी संकीर्ण सोच को सामूहिक संकल्प से ही नाकाम किया जा सकता है। इसी तरह की सार्थक व प्रेरक प्रतिक्रिया गुरमेहर कौर की तरफ से आई, जिनके पिता वर्ष 1999 में जम्मू-कश्मीर में आतंकवादियों से लड़ते हुए मारे गए थे। उन्होंने देशकाल-परिस्थितियों के अनुरूप प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि आतंकवाद की असली हार तब ही होती है जब हम हिंसा की प्रतिक्रिया में खुद को विभाजित करने से मना कर देते हैं। निस्संदेह, राष्ट्र के सर्वोत्तम हित में, नागरिकों को उन लोगों दृढ़ता से दूर करना चाहिए, जो आग में घी डालने काम कर रहे हैं। केंद्र और राज्य सरकारों को उन पर नकेल कसनी चाहिए, जो आतंकवादियों के ज कृत्यों की कीमत निर्दोष लोगों से वसूलने पर तुले हैं। निर्विवाद रूप से हमारी विवेकशील प्रतिक्रिया एक अखंड भारत की सोच ही आतंकवाद पर व चोट कर सकती है। वक्त की मांग है कि हम सीमा से चलाए जा रहे विभाजनकारी अभियानों को एकज् से विफल कर दें। हमारी किसी भी प्रतिक्रिया से संदेश नहीं जाना चाहिए कि हम भारत के विरोधिय मंसूबों को ही सींच रहे हैं। निस्संदेह, पहलगाम आतंकी हमला हमारे मर्म पर हमला था, लेकिन तरह की आवाज कश्मीर से आतंक के खिलाफ वैसे ही बुलंद आवाज हमें संकीर्ण सोच वाले तत्व खिलाफ मजबूती से उठानी चाहिए। देश में शांति-स के लिये जरूरी है कि हम हिमांशी नरवाल की बड़ी को विस्तार दें।

आखिर कब तक 'हिन्दू' झेलते रहेंगे प्रशासनिक भेदभाव? यदि धैर्य टूटा तो...

पाकिस्तान प्रायोजित हिन्दू धर्म विरोधी पहलगाम आतंकी हमले के बाद भारत में अधिकांश लोगों के मन में अब यह सवाल कौंध रहा है कि क्या अब असली धर्मयुद्ध यानी अगला महाभारत शुरू होने वाला है, क्योंकि अपने ऊपर अनवरत हमलों, न्यायिक और प्रशासनिक भेदभाव के चलते हिंदुओं का धैर्य अब टूटने के कगार पर खड़ा है! जानकार बताते हैं कि आजादी से पहले और आजादी के बाद की सरकारों ने और उनके अधीनस्थ उच्चतम न्यायालय ने अपनी जिस हिन्दू विरोधी मानसिकता का परिचय दिया है और उनकी कथनी और करनी में जो बहुत अंतर नजर आने लगा है, वह तो धर्मयुद्ध भड़काने जैसा ही प्रतीत होता है! यक्ष प्रश्न है कि आखिर कबतक हिन्दू झेलते रहेंगे न्यायिक और प्रशासनिक भेदभाव? और यदि धैर्य टूटा तो फिर क्या होगा?इसलिए जनमानस में चर्चा है कि अब ऐसी पक्षपाती संस्थाओं और उसके मूल स्रोत संवैधानिक व्यवस्थाओं/कानूनों के खिलाफ लीगल सर्जिकल स्ट्राइक करने का दबाव निर्वाचित जनप्रतिनिधियों पर बनाया जाए। क्योंकि यदि नेताओं को यह बात समझ में आ गई तो समझो कि इसके खिलाफ बवाल होना तय है। दरअसल, यह बात मैं नहीं कह रहा हूँ, बल्कि भाजपा सांसद डॉ. निशिकांत दुबे ने सुप्रीम कोर्ट पर आरोप लगाते हुए जो बातें कहीं हैं, उसके विश्लेषण से यह सवाल पैदा हो रहे हैं।

बता दें कि सांसद दुबे ने कहा था कि ÷इस देश में यदि कोई धर्मयुद्ध भड़काने का जिम्मेदार होगा, तो वह सुप्रीम कोर्ट और उसके न्यायाधीश ही होंगे!÷ तभी तो उनके इस आरोप से बड़ा विवाद खड़ा हो गया और विपक्ष ने उनकी तीखी आलोचना की। लेकिन प्रसिद्ध वैज्ञानिक, लेखक और वक्ता आनंद रंगनाथन ने एक वीडियो बयान जारी कर सांसद दूबे का पूर्ण समर्थन किया है और रंगनाथन ने अपनी धाराप्रवाह अंग्रेज़ी में सुप्रीम कोर्ट से जो 9 सवाल पूछे हैं, वे बहुत महत्वपूर्ण हैं। कोर्ट को अविलंब इस पर अपना पक्ष देने की पहल करनी चाहिए, अन्यथा जनमानस में फैली भ्रांति उसके अस्तित्व पर भी सवाल उठा सकतीं हैं।

दरअसल, आनंद रंगनाथन पूछते हैं कि, पहला, जब मोदी सरकार ने जम्मू-कश्मीर का विशेष दर्जा हटाने वाला अनुच्छेद 370 समाप्त किया, तो सुप्रीम कोर्ट ने विपक्ष की याचिकाओं पर तुरंत विशेष पीठ बनाकर जल्द सुनवाई की। लेकिन 1990 में कश्मीरी हिंदुओं पर हुए अत्याचारों- जैसे जबरन पलायन, घरों पर कब्जा, मंदिरों का विध्वंस, हत्याएं, बलात्कार, नौकरी से निकालना- पर दायर याचिकाओं को यह कहकर खारिज कर दिया कि ÷अब बहुत समय हो गया है, हम यह मामला नहीं

खोल सकते।÷ इस पर उन्होंने सवाल उठाया है कि क्या यह दोहरा मापदंड नहीं है? क्या इससे हिंदू समाज में आक्रोश पैदा नहीं होगा? क्या यह धर्मयुद्ध भड़काना नहीं है?दूसरा, सुप्रीम कोर्ट को आज वक्फ बोर्ड की चिंता है, लेकिन पिछले 30 वर्षों में वक्फ बोर्ड द्वारा अवैध तरीके से हड़पी गई संपत्तियां, समानांतर न्याय प्रणाली और कर नहीं भरना- क्या ये सब अदालत को दिखाई नहीं दिए? आज यदि वक्फ कानून के सुधार से इस्लाम खतरे में लगता है, तो क्या हिंदुओं की जमीनों पर मस्जिदें और मकबरे बनाना उचित है? वक्फ बोर्ड ने पिछले 10 वर्षों में 20 लाख हिंदू संपत्तियां कब्जा लींङ्कइस पर सुप्रीम कोर्ट की चुप्पी धर्मयुद्ध नहीं तो और क्या है?तीसरा, हिंदू मंदिर सरकार के अधीन क्यों हैं, उनकी आय से मदरसों, हज यात्रा, वक्फ बोर्ड, इफ्तार पार्टी, कर्ज आदि पर खर्च क्यों किया जाती है? वहीं, हिंदू धार्मिक कार्यों पर रोक, उनकी याचिकाओं को लटकाना, अल्पसंख्यकों को हमेशा प्राथमिकता देना- क्या यह न्याय है? या हिंदू समाज के मन में आक्रोश उत्पन्न करने का एक तरीका है?

चौथा, शिक्षा के अधिकार के तहत, हिंदू संस्थाओं को 25त्न सीटें अल्पसंख्यकों के लिए आरक्षित करनी होती हैं। जबकि मुस्लिम और ईसाई संस्थाओं पर कोई ऐसा नियम नहीं। इससे हजारों हिंदू स्कूल बंद हो गए और हिंदू बच्चे दूसरे धर्मों की संस्थाओं में पढ़ने लगे। क्या यह भी धर्मांतरण को बढ़ावा नहीं है? क्या सुप्रीम कोर्ट को यह पक्षपात दिखाई नहीं देता?पांचवां, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर भी दोहरी नीति- हिंदुओं की बात हेट स्पीच, और दूसरों की बात फ्री स्पीच मानी जाती है। नूपुर शर्मा ने सिर्फ हदीस का उल्लेख किया- उसे कोर्ट ने हेट स्पीच कहा। लेकिन स्टालिन और अन्य नेताओं ने सनातन धर्म को ÷रोग÷ बताया- कोर्ट ने उस पर चुप्पी साध ली। क्या यह निष्पक्ष न्याय है?छठा, सुप्रीम कोर्ट ने हिंदू परंपराओं जैसे दशहरे के बली प्रथा पर रोक लगा दी, लेकिन हलाल, ईद के दौरान सामूहिक पशुहत्या- उस पर कोई सवाल नहीं। जन्माष्टमी पर हांडी की ऊँचाई पर रोक, लेकिन मोहर्रम की हिंसा पर कोई कार्रवाई नहीं। दिवाली के पटाखे पर्यावरण के लिए बुरे, लेकिन क्रिसमस के पटाखे नहीं। क्या यह भेदभाव नहीं?सातवां,. प्लेसेस ऑफ वर्शिप एक्ट 1991 को 2019 में कठोर बना दिया गया, ताकि 15 अगस्त 1947 से पहले के धार्मिक स्थलों की स्थिति में कोई बदलाव न किया जा सके। इससे हिंदुओं की प्राचीन मंदिरों को पुनः प्राप्त करने की राह बंद हो गई। राम मंदिर के लिए वर्षों संघर्ष करना पड़ा, बाकी स्थल अब भी विधर्मियों के कब्जे में हैं। क्या यह ऐतिहासिक अन्याय नहीं?आठवां, शबरीमाला मामले में भी कोर्ट ने हिंदू भावनाओं को चोट पहुँचाई। कुछ मंदिरों में पुरुषों की, कुछ में महिलाओं की प्रवेश परंपराएं हैं- लेकिन कोर्ट ने केवल हिंदुओं को निशाना बनाया। जबकि इस्लाम में महिलाओं को मस्जिद, कुरान आदि से रोका जाता है, ईसाई धर्म में महिला पादरी नहीं बन सकती- तो उनपर कोई सवाल क्यों नहीं?

नौंवा, शाहीनबाग आंदोलन और सीएए विरोध में जो दंगे हुए, उस पर भी सुप्रीम कोर्ट की भूमिका एकतरफा थी। सार्वजनिक रास्ता रोकने वाले प्रदर्शन पर कोई ठोस कार्यवाही नहीं हुई। क्या यह कानून का मज़ाक नहीं? और क्या यह भी हिंदू समाज में आक्रोश नहीं बढ़ाता?इसलिए सवाल उठता है कि आखिर इस देश के मूल निवासियों से, इस देश के वासियों से भेदभाव क्यों करते हैं, भारत के न्यायाधीश? और इतना सबकुछ होने के बाद भी हमारा नागरिक प्रशासन चुप क्यों है? क्या पक्ष और विपक्ष के नेताओं में इतनी भी अक्ल नहीं है

कि वो इन बातों को समझ सकें और संसद में इसे उठा सकें। ऐसे न्यायाधीशों के खिलाफ संसद में महाभियोग ला सकें। इससे पहले इन सभी बातों पर संसदीय बहस होनी चाहिए, ताकि किसकी क्या राय है, भारतीय उसे समझ सकें। उनके नेता उन्हें समझा सकें।अलबत्ता, श्री रंगनाथन के सवालों से तो यही प्रतीत होता है कि सिर्फ सरकारें ही नहीं बल्कि हमारे न्यायिक प्रतिष्ठान भी अल्पसंख्यक तुष्टीकरण के परिचायक दिखाई दे चुके हैं। इसलिए सुप्रीम कोर्ट को स्वतः संज्ञान लेते हुए एक न्यायिक बैंच गठित करनी चाहिए और सभी आरोपों पर एक एक करके निर्णय स्पष्ट करना चाहिए। अन्यथा यदि हिन्दू जनमानस उद्वेलित हो गया तो उसकी न्यायिक स्वत्रंतता और संवैधानिक सर्वोच्चता की मूल भावना पर भी आंच आ सकती है!

पिथौरागढ़ यानी 'छोटा कश्मीर'

कितनी खूबसूरत ये तस्वीर है, मौसम बेमिसाल-बेनजीर है, ये कश्मीर है... ' जी हाँ कश्मीर के बारे में कुछ ऐसा ही गाया और गुनगुनाया जाता है। पर हम बात कर रहे हैं 'छोटे कश्मीर' की। आप रिवर राफ्टिंग, हेंड-ग्लाइडिंग या स्कीइंग के शौकीन हैं तो आपको यह जगह जरूर पसंद आएगी।

यहाँ आकर आप शहरी भाग-दौड़, गर्मी और उमस भरे माहौल को भूल जाएँगे। प्रकृति की गोद में चैन के कुछ पल बिताने को मिले तो मन को सुकून मिलता है। हम बात कर रहे हैं उत्तर भारत का छोटा कश्मीर कहे जाने वाले उत्तराखंड राज्य के हिल स्टेशन पिथौरागढ़ की।

यहाँ की हरी-भरी वादियों में आकर आपको हर वह चीज मिलेगी जो कश्मीर में मिल सकती है। पिथौरागढ़ के आस पास बहुत सी झीलें, हरी-भरी पहाड़ियाँ और ऊँचे-नीचे घुमावदार रास्ते मन को एक नजर में ही भा जाते हैं। ठंडी हवाओं के झोंके दिल्ली की गर्मी को भुला देते हैं। मन करता है कि यहीं बस जाएँ। रंगबिरंगे फूल-पत्तियाँ, हरी-हरी नर्म, मुलायम घास की ऊँची-नीची परत पर नंगे पैर चलने से तन और मन दोनों को ताजगी मिलती है। जोलिंगकॉग और अंछेरीताल झील विशेष तौर पर मशहूर हैं। यहाँ से 20 किलो मीटर की दूरी पर पूर्णागिरि नामक धार्मिक स्थल है। यहाँ लोग दूर-दूर से दर्शन करने के लिए आते हैं। कुछ किलोमीटर की दूर पर सिखों का धार्मिक स्थल रीठा साहिब लोहाघाट में स्थित है।

आप पिथौरागढ़ में कुछ ज्यादा दिन के लिए रुके हैं तो यहाँ से आप बलेश्वर जा सकते हैं। यह प्रसिद्ध धार्मिक स्थल है। चंपावत से 22 किमी और लोहाघाट से 9 किमी की दूरी पर स्थित है मायावती आम। यहाँ का अद्वैत आम भी अध्यात्म के लिए देश-विदेश में मशहूर है। यहाँ का 'अबूत पर्वत' पहाड़ों का सौंदर्य देखने का प्रमुख स्थल है। यहाँ से घाटी की मनोहारी झाँकी देखने को मिलती है। लोहाघाट से 45 किमी की दूरी पर स्थित देवीधारा का वराशी मंदिर मशूहर जगह है। यहाँ रक्षा बंधन के दिन हर साल दो पक्षों में परंपरागत एक दूसरे पत्थर फेंकने के खेल का आयोजन किया जाता है। यहाँ से सात किमी की दूरी पर स्थित वाणासुर का किला यहाँ के मशहूर पर्यटक स्थलों में से है।

सड़क मार्ग से दिल्ली से पिथौरागढ़ की दूरी 496 किलोमीटर है। गाजियाबाद, गजरौला, मोरादाबाद, रामपुर, बिलासपुर, रुद्रपुर, हल्द्वानी, काठगोदाम, भीमताल, पदमपुरी, शिलालेख, चिल्का चाइना आदि रास्ते में पड़ते हैं। यहाँ आकर ठहरने की समस्या नहीं है। दिल्ली, अल्मोड़ा और नैनीताल से यहाँ के लिए नियमित बस सेवाएँ हैं।

कश्मीर का सौंदर्य डल झील

पर्यटक शिकारों में बैठे डल झील की खूबसूरती को देख रहे थे। तीन दिशाओं से पहाड़ियों से घिरी डल झील जम्मू-कश्मीर की दूसरी सबसे बड़ी झील है। भारत की सबसे सुंदर झीलों में इसे शुमार किया जाता है। पर्यटक जम्मू-कश्मीर आएँ और डल झील देखने न जाएँ ऐसा हो ही नहीं सकता। पौराणिक मुगल किलों में यहाँ की संस्कृति तथा इतिहास के दर्शन होते हैं।

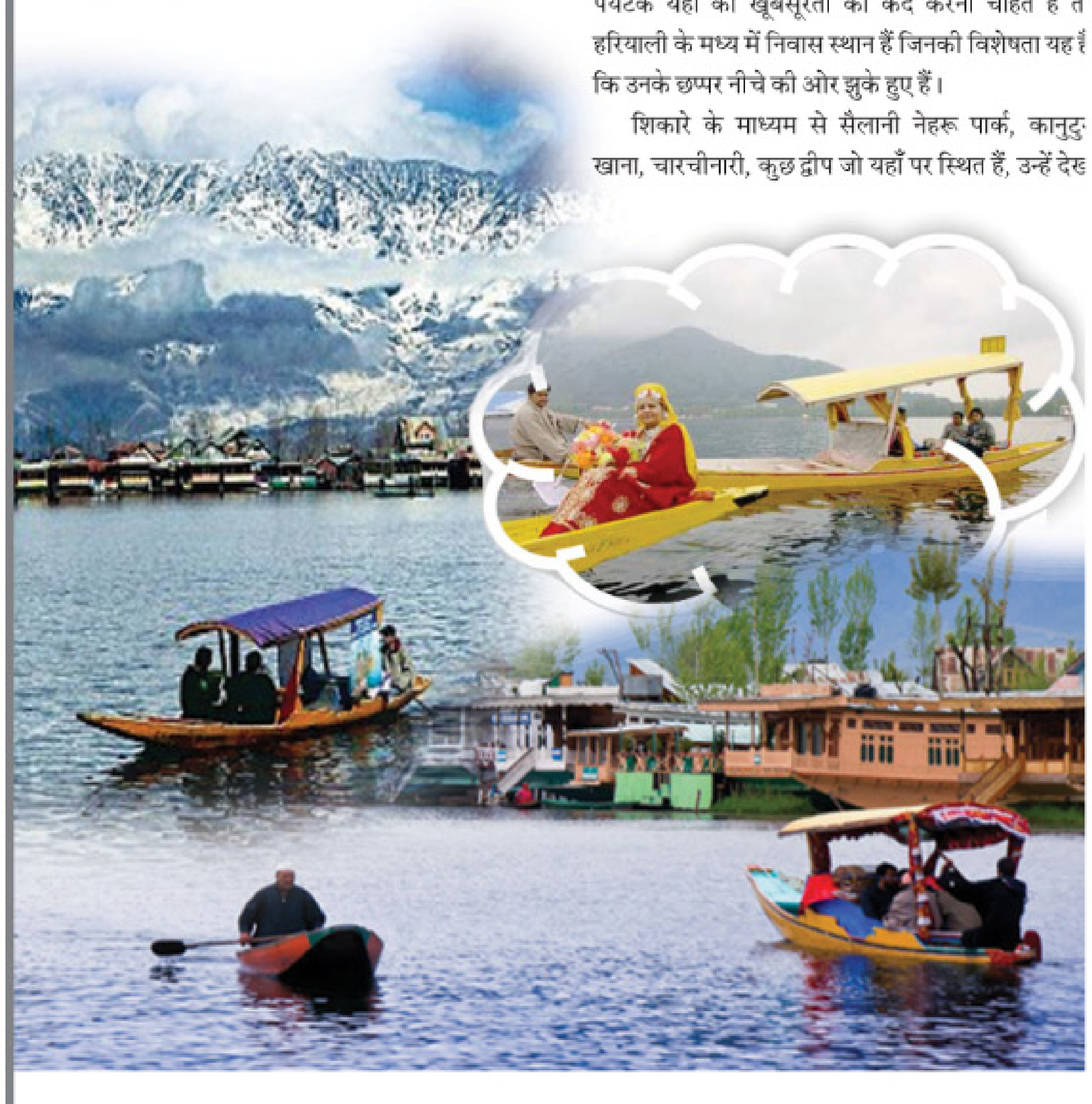

डल झील के पास ही मुगलों के सुंदर एवं प्रसिद्ध पुष्प वाटिका से डल झील की आकृति और उभरकर सामने आती है। मुख्य रूप से इस झील में मछली पकड़ने का काम होता है। डल झील के मुख्य आकर्षण का केन्द्र है यहाँ के हाउसबोट। सैलानी इन हाउसबोटों में रहकर इस खूबसूरत झील का आनंद उठा सकते हैं।

यह झील, कश्मीर की घाटियों की अन्य धाराओं के साथ मिल जाती है। झील के चार जलाशय हैं गगरीबल, लोकुट डल, बोड डल तथा नागिन। लोकुट डल के मध्य में रूप लंक द्वीप स्थित है तथा बोड डल जलधारा के मध्य में सोना लंक स्थित है।

बनस्पति डल झील की खूबसूरती को और निखार देती है। कमल के फूल, पानी में बहती कुमुदनी, झील की सुंदरता में चार चाँद लगा देती है। सैलानियों के लिए विभिन्न प्रकार के मनोरंजन के साधन यहाँ पर उपलब्ध हैं जैसे वि कायाकिंग (एक प्रकार का नौका विहार), केनोइंग (डोंगी), पानी पर सर्फिंग करना तथा ऐगलिंग (मछर्ल पकड़ना)।

कश्मीर के प्रसिद्ध विश्वविद्यालय झील के तट पर स्थिर है। हाउसबोट में रहकर सैलानी इस झील के खूबसूर वातावरण से भावविभोर हो जाते हैं। कैमरे के माध्यम र पर्यटक यहाँ की खूबसूरती को कैद करना चाहते हैं त हरियाली के मध्य में निवास स्थान हैं जिनकी विशेषता यह है कि उनके छप्पर नीचे की ओर झुके हुए हैं।

शिकारे के माध्यम से सैलानी नेहरू पार्क, कानुदु खाना, चारचीनारी, कुछ द्वीप जो यहाँ पर स्थित हैं, उन्हें देख सकते हैं। श्रद्धालुओं के लिए हज़रतबल तीर्थस्थल के दर्शन क बिना उनकी यात्रा अधूरी रह जाती है। शिकारे के माध्यम र श्रद्धालु इस तीर्थस्थल के दर्शन कर सकते हैं।

क्या आपने कभी जलाशय पर शिकारे से शॉपिंग की है आप एक शिकारे पर सवार होकर विभिन्न प्रकार की वस्तु खरीद सकते हैं। और दुकानें भी शिकारों पर ही लगी होती हैं यह मात्र खरीददारी तक ही सीमित नहीं है, परन्तु एक रोमांचि कर देने वाला खेल भी होगा। यदि पर्यटक डल झील पहुँचन चाहते हैं तो श्रीनगर जिले से 25 किमी की दूरी पर बड़गाम जिल में स्थित एयरपोर्ट पर पहुँच सकते हैं। नजदीकी रेल सेवा जम्म में स्थित है तथा वहाँ का नेशनल हाईवे एनएच1ए कश्मीर घाट को देश के अन्य भागों से जोड़ता है। इन पहाड़ी इलाकों पर यात्र करने के लिए दस से बारह घंटे लगते हैं। इस सफर के दौरा पर्यटक यहाँ के प्रसिद्ध जवाहर टनल को निहार सकते हैं।

चैल को बनाएँ गर्मियों की राजधानी

राजधानी की रिकार्ड तोड़ गर्मी से दूर ठंडी आवाओं के झोंको में हरी मखमली घास पर बैठकर शांति के कुछ पलों की तलाश में लोग पहाड़ों का रूख करने लगे हैं। आप भी दिल्ली-एनसीआर के आस पास कहीं जाना चाहते हैं तो आपके लिए'चैल' एक अच्छा ठिकाना हो सकता है। शिमला से 43 किलोमीटर दूर इस मनभावन जगह को आप अपनी गर्मियों की राजधानी बना सकते हैं।

यहाँ के शांत वातावरण में जब चिड़ियों की चहचहाहट होती है तो मन को अपार सुकून मिलता है। हिमालय की बर्फीली चोटियों से घिरा चैल जितना मनभावन है उतनी रोचक इससे जुड़ी कहानी भी है। 1891 में पटियाला के महाराजा भूपिंदर पर अंग्रेजों ने जब शिमला में घुसने पर पाबंदी लगा दी तो उन्होंने अपनी गर्मी की राजधानी के लिए चैल को चुना।

शिमला को अच्छे पहाड़ी पर्यटन केन्द्रों में से माना जाता है। पर यहाँ अब शोरगुल और गंदगी भी बढ़ने लगी है। चैल में वह सब खूबियां हैं जो इसे दूसरी जगहों से अलग करती हैं। यह जगह राजगढ़ हिल्स, पंधेवा हिल्स और सिध टीबा तीन पहाड़ियों पर बसी है। पाइन और देवदार के लंबे हरे-बरे पेड़ यहाँ की सुंदरता को और भी अधिक बढ़ाते हैं। रात के समय यहाँ से सतलुज घाटी, शिमला और कसौली बड़े रंगीन और आकर्षक दिखाई देते हैं।

आप वन्य जीवों के देखना चाहते हैं तो यहाँ के 10,854 हैक्टेयर में फैला चैल सेंचुरी आपके लिए यादगार स्थल बन सकता है। यहाँ के क्रिकेट ग्राउंड भी प्राकृतिक सुंदरता के मामले में लाजवाब है। राजगढ़ पैलेस, बच्चों के लिए चिल्ड्रन पार्क अच्छी जगह हैं तो एकांत चाहने वालों को यहाँ का 'लवर्स हिल' खूब पसंद आता है। महाराजा भूपिंदर सिंह द्वारा बनवाया गया सिद्ध बाबा का मंदिर भी बहुत प्रसिद्ध है और लोग दूर-दूर से यहाँ आते हैं। कालका-शिमला रेल मार्ग पर कालका से टॉय ट्रेन से शिमला तक पहुँचा जा सकता है। जो लोग हरी-भरी वादियों के बीच से ट्रेन में बैठकर गुजरना चाहते हैं उनके लिए यहाँ आनंद ही आनंद है। यह ट्रेन कंडाघाट तक पहुँचने में पाँच घंटे का समय लेती है। सड़क मार्ग जाने के लिए कालका-कंडाघाट के रास्ते जाया जा सकता है।

यहाँ ठहरने की कोई समस्या नहीं है। बड़े होटलों के साथ हिमाचल प्रदेश पर्यटन विकास निगम के बजट होटल भी मौजूद हैं। कॉटेज, टूरिस्ट लॉज आदि ठीक-ठाक दामों पर मिल जाते हैं। अगर आप बर्फ का नजारा देखना चाहते हैं तो दिसंबर-जनवरी के महीने में यहाँ आकर ठंडी नर्म सफेद बर्फ का मजा लिया जा सकता है। वैसे गर्मी के मौसम में ही यहाँ ज्यादा संख्या में सैलानी आते हैं। 'क्लिक टू ट्रैवल' एजेंसी के मालिक सिद्धार्थ जैन बताते हैं कि विभिन्न ट्रैवल एजेंसियाँ 'टूर पैकेज' तैयार करके दे रही हैं। लोग अपनी पसंद और बजट के हिसाब से भी पैकेज तैयार करा सकते हैं। इसमें यह सुविधा है कि आप भुगतान कीजिए और बाकी सभी जिम्मेदारियों से छुट्टी।

वह बताते हैं कि हिमाचल प्रदेश के 2250 मीटर की ऊँचाई पर बसे इस पहाड़ी पर्यटक स्थल पर आने के बाद साधु पुल देखे बगैर आपको वापस नहीं लौटना चाहिए। नहीं तो आपको इस अद्भुत और प्राकृतिक सुंदरता के खजाने को देखने के लिए दोबारा जल्दी वापस आना पड़ेगा।

सोशल मीडिया पर ज्यादा समय बिताने से लड़कियों में डिप्रेशन का खतरा

सोशल मीडिया पर बहुत ज्यादा समय बिताने वाली लड़कियों में उनके हमउम्र लड़कों की तुलना में डिप्रेशन का खतरा दोगुना होता है। एक नए अध्ययन में ऐसा दावा किया गया है। अपनी तरह के पहले इस अध्ययन में सोशल मीडिया और डिप्रेशन के लक्षणों के बीच संबंध देखा गया।

ब्रिटेन की यूनिवर्सिटी कॉलेज लंदन (यूसीएल) के शोधकर्ताओं ने करीब 11,000 युवाओं से मिले डेटा का विश्लेषण किया और पाया कि 14 साल की लड़कियां सोशल मीडिया का बहुत ज्यादा इस्तेमाल करती हैं। उनमें हर पांच में से दो किशोरियां सोशल मीडिया का हर पांच में से एक किशोर के मुकाबले प्रतिदिन तीन घंटे ज्यादा इस्तेमाल करती हैं। वहीं 10 प्रतिशत लड़कों के मुकाबले केवल चार प्रतिशत लड़कियां ऐसी पाई गईं जो सोशल मीडिया का इस्तेमाल नहीं करती।

अध्ययन के परिणामों में पाया गया कि सोशल मीडिया का मामूली इस्तेमाल करने वाली 12 प्रतिशत और अधिक इस्तेमाल (प्रतिदिन पांच या उससे ज्यादा घंटे) करने वाली 38 प्रतिशत लड़कियों में गंभीर स्तर के अवसाद के लक्षण देखे गए। यूसीएल के एक प्रोफेसर वोन्ने केली ने बताया लड़कों की तुलना में लड़कियों में सोशल मीडिया के प्रयोग और अवसाद के लक्षणों के बीच संबंध ज्यादा मजबूत देखा गया। यह अध्ययन ईक्लिनिकल मेडिसिन पत्रिका में प्रकाशित हुआ है।

प्रेग्नेंसी में ऐसा होना चाहिए आपका डाइट प्लान

नहीं बढ़ेगा वजन

प्रेग्नेंसी ऐसा समय है जब मां को अच्छे पोषण की जरूरत होती है। इस दौरान सही पोषण बच्चे के विकास और मां के स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए जरूरी है। प्रेग्नेंट महिलाओं को ध्यान रखना चाहिए कि उनके पोषण में विटामिन और मिनरल्स की कमी न हो। प्रेग्नेंसी के दौरान सही डाइट चार्ट बनाना और उसका पालन करना जरूरी है।

डॉक्टर के अनुसार प्रेग्नेंसी के दौरान आप जो भी आहार लेती हैं, उससे न केवल आपके शरीर को पोषण मिलता है, बल्कि आपके पेट में पल रहे बच्चे का भी विकास होता है। हर दिन के साथ आपकी मैक्रो एवं माइक्रो न्यूट्रिएन्ट्स की जरूरत बढ़ती जाती है। आपको हर ग्रुप का भोजन अपने आहार में शामिल करना चाहिए।

प्रेग्नेंसी में जंक फूड के सेवन से बचें। आमतौर पर हमारे देश में प्रेग्नेंसी के दौरान ऐसा खाना खाने की सलाह दी जाती है, जो बहुत सारे घी में बना हो, लेकिन इसका सेवन सीमित मात्रा में ही करना चाहिए। नहीं तो वजन तेजी से बढ़ता है और बच्चे के जन्म के बाद वजन कम करना बहुत मुश्किल हो जाता है। इस दौरान सक्रिय रहें और सेहतमंद आहार लें। प्रेग्नेंसी में पोषक पदार्थ जैसे काबोहाईड्रेट, प्रोटीन, विटामिन एवं मिनरल्स और डेयरी उत्पाद आपकी डाइट में शामिल हों। दिन में दो से तीन बार भरपेट खाने के बजाए कम मात्रा में बार-बार खाएं। इससे पाचन की समस्या भी नहीं होगी। इसके अलावा नियमित रूप से थोड़ा बहुत व्यायाम करें, जिससे शरीर में हॉर्मोनों का संतुलन बना रहेगा और आप फिट और चुस्त रहेंगी।

अपने शिशु की अच्छी सेहत के लिए महिलाओं को जरूर खानी चाहिए यह 4 सब्जियां

महिलाओं को अपनी खुद की सेहत के साथ ही नवजात शिशु की सेहत का भी ध्यान रखना होता है। उन्हें ऐसी चीजें अपनी डाइट में शामिल करनी चाहिए जिनके जरिए उनके बच्चों को पूरा पोषण मिलता रहे। इसलिए स्तनपान कराने के दौरान महिलाओं को विटामिन, मिनरल और आयरन युक्त खाद्य पदार्थों के सेवन की जरूरत होती है, ताकि मां के साथ-साथ बच्चे को भी ताकत मिले। स्वस्थ आहार का सेवन करने वाली महिलाओं के बच्चे स्वस्थ रहते हैं, क्योंकि उनके दूध के दरिए बच्चे को पोषण मिलता है।

भिंडी : बहुत से लोगों को लगेगा कि भिंडी से क्या पोषण मिल सकता है। आपकी जानकारी के लिए बता दें कि भिंडी में कैल्शियम और फोलेट होता है जो मां की हड्डियों को मजबूती प्रदान करने के साथ-साथ बच्चे की हड्डियों को भी मजबूत करता है।

टमाटर : टमाटर कई लोगों को नापसंद होता है। मगर यह पोटेशियम और विटामिन सी का अच्छा स्रोत होता है। इसलिए स्तनपान करने वाली महिलाओं को इसका सेवन जरूर करना चाहिए।

आलू : आलू में विटामिन-सी, फाइबर और एंटीऑक्सीडेंट उच्च मात्रा में मौजूद होता है, जो गैस की समस्या को कम करने में मदद करता है। इसे खाने से मां और बच्चे दोनों की सेहत दुरुस्त रहती है। हालांकि इसका अत्यधिक सेवन नहीं करना चाहिए।

ब्रोकली : ब्रोकली में आयरन, पोटेशियम, जिंक और विटामिन होता है, जो बच्चे के मानसिक स्वास्थ्य के लिए लाभकारी होता है। यह मां के शरीर को भी ताकत और ऊर्जा प्रदान करता है। इसके अलावा ब्रोकली में कैलोरी भी कम मात्रा में होती है।

रेसिपी

पनीर की खीर

- फुल क्रीम दूध:1 लीटर
- पनीर: 100 ग्राम (कद्दूकस किया हुआ)
- शक्कर: 200 ग्राम,
- कस्टर्ड पाउडर
- बादाम
- पिस्ता
- चिरौंजी: छोटा चम्मच
- केसर: 01 चुटकी

विधि

सबसे पहले सभी ड्राई फ्रुट्स जैसे बादाम, पिस्ता और पनीर को बारीक-बारीक टुकड़ों में काट लें या कद्दूकस कर लें। इसके बाद दूध को गाढ़ा होने तक गर्म करें। जब दूध उबलने लगे, इसमें कस्टर्ड पाउडर का घोल डाल दें। अब इसमें शक्कर मिला लें। इसके बाद कद्दूकस किया हुआ पनीर मिलाएं। इसे अच्छे से चलाते रहें ताकि यह नीचे लग न जाए। इसे बाद ड्राई फ्रुट्स डालकर सर्व करें।

बेसन गोभी

■ फूलगोभी ■ बेसन: आधा कप ■ प्याज:1 बारीक कटी हुई ■ अदरक: बारीक कटी हुई ■ लहसुन: बारीक कटा हुआ ■ एक छोटी चम्मच हल्दी ■ धनिया ■ जीरा ■ अमचूर ■ हींग ■ गर्म मसाला ■ मिर्च पाउडर ■ दो चम्मच तेल

विधि

सबसे पहले धीमी आंच में कढ़ाही रखिए और तेल गर्म करें। इसके बाद इसमें जीरा, अदरक, लहसुन मीडियम आंच में एक पैन में तेल गरम करने रखें। इसके बाद इसमें प्याज भूनें और हल्का फ्राई होने पर इसमें बेसन डाल दें। जब बेसन फ्राई हो जाए तो इसमें हींग धनिया पाउडर, हल्दी, लाल मिर्च और नमक मिलाएं। इसके बाद हल्का पकने पर इसमें अमचूर डालें और इसके बाद गर्म करें। बेसन गोभी तैयार है।

टाईम पास

आज का राशिफल

मेष (चू चे चो ला ली लू ले लो आ): बुद्धि व धन का दुरुपयोग न करें। व्यापार में स्थिति नरम रहेगी। भ्रातृपक्ष में विरोध की संभावना है। आय-व्यय समान रहेगा। स्वास्थ्य ठीक रहेगा। व्यर्थ प्रपंच में समय न गंवाकर काम पर ध्यान दीजिए। मेल-मिलाप से काम बनाने की कोशिश सफल होगी। मान-सम्मान में वृद्धि होगी। शुभांक-2-5-7

वृष (इ उ ए ओ वा वी वू वे वो): कामकाज में आ रहा अवरोध दूर होकर प्रगति का रास्ता मिल जाएगा। मान-सम्मान में वृद्धि होगी। अच्छे कार्य के लिए रास्ते बना लेंगे। अपने हित के काम सुबह-सवेरे ही निपटा लें क्योंकि आगे कामकाज सीमित तौर पर ही बन पाएंगे। स्वास्थ्य का पाया भी कमजोर बना रहेगा। शुभांक-2-3-5

मिथुन (का की कू घ ङ छ के को हा): यात्रा प्रवास का सार्थक परिणाम मिलेगा। मेल-मिलाप से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी। अपने काम में सुविधा मिल जाने से प्रगति होगी। समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। नवीन जिम्मेदारी बढ़ने के आसार रहेंगे। अपने काम को प्राथमिकता से करें। चिंतनीय वातावरण से मुक्ति मिलेगी। शुभांक-2-3-8

कर्क (ही हू हे हो डा डी डू डे डो): मेहमानों का आगमन होगा। राजकीय कार्यों से लाभ। पैतृक सम्पत्ति से लाभ। मेहमानों का आगमन होगा। पुरानी गलती का पश्चाताप होगा। विद्यार्थियों को लाभ। दाम्पत्य जीवन सुखद रहेगा। वाहन चालन में सावधानी बरतें। बातचीत में संयम बरतें। आय के अच्छे योग बनेंगे। शुभांक-2-5-8

सिंह (मा मी मू मे मो टा टी टू टे): परिवारजन का सहयोग व समन्वय काम को बनाना आसान करेगा। समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। आय-व्यय की स्थिति समान रहेगी। शैक्षणिक कार्य आसानी से पूरे होते रहेंगे। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। व्यापार व व्यवसाय में ध्यान देने से सफलता मिलेगी। संतोषजनक सफलता मिलेगी। शुभांक-4-8-9

कन्या (टो पा पी पू ष ण ठ पे पो): अपनों का सहयोग मिलेगा। पत्नी व संतान पक्ष से थोड़ी चिंता रहेगी। शिक्षा में आशानुकूल कार्य होने में संदेह है। व्यापार व व्यवसाय में स्थिति ठीक रहेगी। नौकरी में पदोन्नति की संभावना है। मित्रों से सावधान रहें। शारीरिक सुख के लिए व्यसनों का त्याग करें। कार्य सफल होंगे। शुभांक-2-8-9

तुला (रा री रु रे रो ता ती तू ते): मन प्रसन्न बना रहेगा। अचल संपत्ति की खरीद अथवा कृषि उद्यम में रुचि पैदा होगी। आपसी प्रेम-भाव में बढ़ोतरी होगी। भविष्य की योजनाओं पर विचार विमर्श होगा। सहयोग प्राप्त होगा। अपने आपको अधिक सक्रिय पाएंगे। परामर्श आदि सभी का सहयोग मिलेगा। शुभांक-5-7-9

वृश्चिक (तो ना नी नू ने नो य यी यू): दिन-भर का माहौल आडंबरपूर्ण और व्ययकारी होगा। वरिष्ठ लोगों से कहासुनी वातावरण में तनाव पैदा करेंगे। उतावलेपन से बचें। संयमित भाषा का इस्तेमाल करें। कुछ कार्यक्रम बदलने होंगे। किसी को हानि पंहुचाने की चेष्टा न करें अन्यथा हानि संभव है। स्वविवेक से कार्य करे। शुभांक-1-2-7

धनु (ये यो भा भी भू धा फा ढा भे): घर के सदस्य मदद करेंगे और साथ ही आर्थिक बदहाली से भी मुक्ति मिलने लगेगी। प्रियजनों से समागम का अवसर मिलेगा। अवरुद्ध कार्य संपन्न हो जाएंगे। सभा-सोसायटी में सम्मान मिलेगा। पद-प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए कुछ सामाजिक कार्य संपन्न होंगे। पसंदीदा भोज्य पदार्थों की प्राप्ति होगी। शुभांक-1-4-8

मकर (भो जा जी खी खू खे खो गा गी): प्रतिष्ठा बढ़ाने वाले कुछ सामाजिक कार्य संपन्न होंगे। आमोद-प्रमोद का दिन होगा और व्यावसायिक प्रगति भी होगी। जीवन स्तर में सुधार की अपेक्षा रहेगी। ज्ञान-विज्ञान की वृद्धि होगी और सज्जनों का साथ भी रहेगा। मनोरथ सिद्धि का योग है। स्त्री-संतान पक्ष का सहयोग मिलेगा। शुभांक-5-6-8

कुंभ (गू गे गो सा सी सू से सो दा): कुछ कार्य भी सिद्ध होंगे। व्यर्थ की भाग-दौड़ से यदि बचा ही जाए तो अच्छा है। प्रियजनों से समागम का अवसर मिलेगा। अवरुद्ध कार्य संपन्न हो जाएंगे। कुछ तनाव हो सकता है। महत्वपूर्ण कार्य को समय पर बना लें तो अच्छा ही होगा। भाई-बहनों का प्रेम बढ़ेगा। स्वविवेक से कार्य करें। शुभांक-5-7-8

मीन (दी दू थ झ ञ दे दो चा ची): आशा और उत्साह के कारण सक्रियता बढ़ेगी। आगे बढ़ने के अवसर लाभकारी सिद्ध हो रहे हैं। कोई प्रिय वस्तु अथवा नवीन वस्त्राभूषण प्राप्त होंगे। सभा-गोष्ठियों में मान-सम्मान बढ़ेगा। धार्मिक आस्थाएं फलीभूत होंगी। सुख-आनंद कारक समय है। यात्रा सुखद रहेगी। शुभांक-3-5-7

हंसी के फूव्वारें

एक अभिनेत्री ने ब्यूटी-क्लीनिक की मालकिन से अपने चेहरे के दाग को मिटाने का रेट पूछा.

'पांच सौ रुपये लगेंगे !'

'पांच सौ तो ज्यादा हैं !'

'फिर ?'

'कोई सस्ता तरीका बताइए !'

'सस्ता नहीं मुफ्त का तरीका है.'

'कृपया जल्दी बताइये !'

' घूंघट निकालना शुरू कर दीजिए! आपका काम मुफ्त में बन जायेगा.'

▯ ▯ ▯

एक आंखों के डाक्टर ने अपने एक सर्जन मित्र को नजर का चश्मा बनाकर दिया. संयोग से उसी दिन आंखों के डाक्टर को उसी सर्जन से अपना ऑपरेशन करवाना पड़ा.

फिर जब वह ऑपरेशन टेबल पर लेट गया तो सर्जन चश्मा लगाकर बोला- 'रेडी ! मैं तैयार हो गया हूँ ! अब तुम बताओ कि तुम कहां हो?'

आंखों का डाक्टर तुरन्त मेज से कूद पड़ा.

▯ ▯ ▯

प्रशंसिका: ''आपके उपन्यास का अंतिम सीन बहुत अच्छा है.''

उपन्यासकार: ''उपन्यास के आरंभ के विषय में आपका क्या विचार है?''

प्रशंसिका: ''मैं उसे अभी पढ़ना शुरू करने वाली हूँ.''

▯ ▯ ▯

काकुरो पहेली - 4045

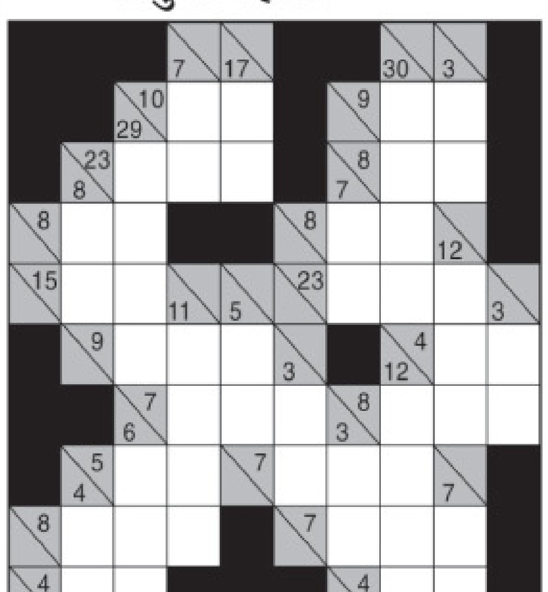

खाली वर्गों में 1 से 9 तक के अंक लिखकर नीचे से ऊपर व दाएं से बाएं की जोड़ हल्के रंग के आधे वर्ग की संख्या से मेल खानी चाहिए,किसी भी अंक का उस जोड़ में पुनः उपयोग नहीं किया जा सकता.

उदाहरणतः

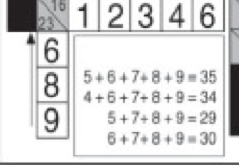

काकुरो - 4044 का हल

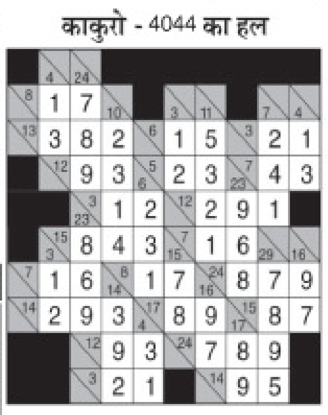

फिल्म वर्ग पहेली - 4045

बायें से दायें:-

१. सलमान, आयशा की 'बैठा नीली झील किनारे' गीत वाली फिल्म-३
३. 'और हम तुम' गीत वाली नाना पाटेकर, माधुरी की फिल्म-३
६. जीतेंद्र, रीना, रामेश्वरी की 'तूने मुझे बुलाया' गीत वाली फिल्म-२
७. 'जब भी ये दिल उदास' गीत वाली राकेश रोशन, सिम्मी की फिल्म-२
८. 'आज नाचूं ऐसे' गीत वाली आशा पारेख, सुनील दत्त की फिल्म-२
९. फिल्म 'कसक' की नायिका कौन थी-३
१२. 'शहर की लड़की' गीत वाली फिल्म-३
१४. अमिताभ, परवीन की 'अंग्रेजी में कहते हैं' गीत वाली फिल्म-३
१७. 'घर आजा परदेसी' गीत वाली सनी देओल, अमीषा की फिल्म-३
१८. हिंदी फिल्मों का पहला 'ही-मैन' किसे कहा जाता है-४
२०. 'छुपा रुस्तम' में नायिका कौन -२
२१. फिल्म 'अंत' में नायिका कौन थी-२
२२. अजय देवगन, ट्विंकल की 'मेरे सीने में तेरा' गीत वाली फिल्म-२
२३. 'दर्दे दिल दर्दे जिगर' गीत वाली फिल्म-२
२४. 'चाइना टाउन' के संगीतकार कौन-२
२६. 'कभी खुशी कभी गम' में अमिताभ की पत्नी की भूमिका किसने की है-२
२७. 'फूल और कांटे' में अजय देवगन के साथ नायिका कौन थी-२
२८. 'नी मैं यार मनाना नी' गीत वाली राजेश, राखी, शर्मिला की फिल्म-२
३०. राजकुमार, राजेश, माला की 'गुस्सा इतना हसीन' गीत वाली फिल्म-३
३१. 'सारे मोहल्ले में हल्ला' गीत वाली फिल्म-२
३३. 'मनोरंजन' में शम्मी व संजीव कुमार के साथ नायिका कौन थी-३
३४. 'सजना साथ निभाना' गीत वाली फिल्म-२

ऊपर से नीचे:-

१. फिरोज खान, जीनत की 'हम तुम्हें चाहते हैं' गीत वाली फिल्म-३
२. 'कभी-कभी' में ऋषि की नायिका -३
४. 'बंदिश' में जैकी की नायिका-२
५. ऋषिकपूर, अरबाज, जूही की 'ऐसे मिली निगाहें' गीत वाली फिल्म-३
६. 'ओ मेरे ढोलना' गीत वाली बॉबी देओल, करिश्मा की फिल्म-३
१०. 'मोहे छेड़ो ना' गीत वाली फिल्म-२
११. 'दिल मेरा कहता है' गीत वाली सुनील, हरीश, सोनाली की फिल्म-३
१३. सनी, संजय, रवीना, दिव्या की 'दिल ना किसी का' गीत वाली फिल्म-३
१४. 'मय से मीना से ना' गीतवाली फिल्म-४
१५. 'कसम से तेरी आँखें' गीतवाली फिल्म-४
१६. 'जिस दिल में बसा था' गीत वाली प्रदीपकुमार, कल्पना की फिल्म-३
१८. अमिताभ, विनोद, सायरा की 'तुम भी चलो' गीत वाली फिल्म-३
१९. 'फूल माँगू ना बहार' गीत वाली संजयकपूर, माधुरी की फिल्म-२
२३. 'उधर से जो तुमको मिले फुरसत' गीत वाली फिल्म-४
२५. 'देखो देखो जी, ये है मेरी' गीत वाली जीतेंद्र, लीना की फिल्म-३
२७ रंजन, चित्रा, जयश्री की 'दिल लूटने वाले जादूगर' गीत वाली फिल्म-३
२९.'तदबीर से बिगड़ी हुई' गीतवाली फिल्म-२
३१. गोविंदा, जूही की 'आ जाना जरा' गीत वाली फिल्म-२
३२. 'माई हार्ट इज बीटिंग' गीतवाली फिल्म-२

फिल्म वर्ग पहेली 4044

सूडोकु -4045

4			9		6	1		8
6	8					9	2	3
	1	7	3	8		4		
3	4		6		7			9
5		1	8			2		7
2			5		1		8	4
		3		7	5	8	6	
							9	5
7		6	2		8			1

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते .
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु 4044 हल

2	9	8	3	5	6	1	7	4
4	5	3	2	1	7	9	8	6
7	1	6	4	8	9	2	5	3
8	2	5	6	9	1	3	4	7
3	6	4	7	2	5	8	1	9
1	7	9	8	3	4	5	6	2
5	4	1	9	7	2	6	3	8
6	3	2	1	4	8	7	9	5
9	8	7	5	6	3	4	2	1

शब्द पहेली - 4045

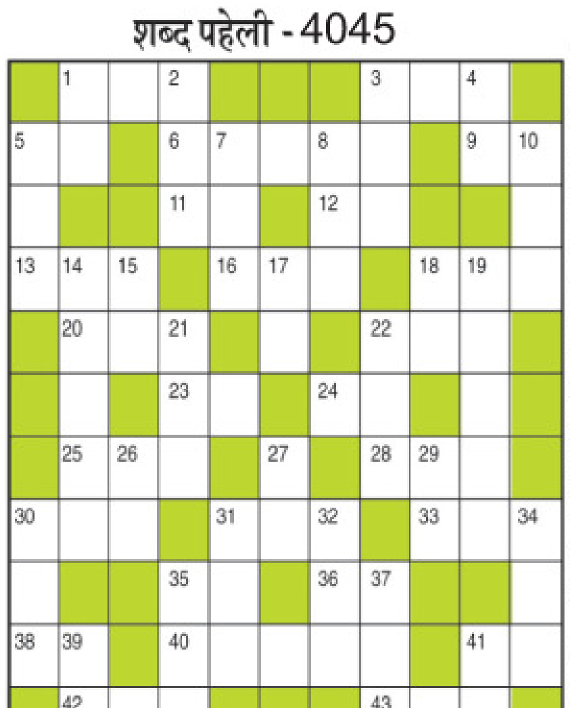

बाएँ से दाएँ

1.सेवक,दास-3
3.निवास करना-3
5.खुजली-2
6.परोपकारी-5
9.प्याला,जाम-2
11.टोंटी,नलका-2
12.आनंद,जूस-2
13.प्रतिज्ञा,शपथ-3
16.सिमरन,सुमरन-3
18.सुअर-3
20.पेन,लेखनी-3
22.कमल,जलज-3
23.क्रोध,गुस्सा-2
24.पाश,फंदा-2
25.शोषण करना-3
28.गौरव,प्रशंसा-3
30.सूत कातने का साधन-3
31.गौरव-3
33.देवर्षि-3
35.अंधकार-2
36.यमराज-2
38.अलमस्त-2
40.सलाह देने वाला-5
41.बीता दिन-2
42.रसदार-3
43.इंद्रियों को जीतने वाला-3

ऊपर से नीचे

1.उर्वरक-2
2.विशाल,श्रेष्ठ-3
3.धनवान,संपन्न-3
4.घ्राणेंद्रिय,इज्जत-2
5.दैत्य,असुर-3
7.मायाजाल-3
8.उद्धार,पार लगाना-3
10.शरण,आश्रय-3
14.चूर-चूर,ढहा-5
15.टोंटी,नलका-2
17.युद्ध,संग्राम-2
18.दूल्हा-2
19.राजपुत्र-5
21.मद्रास का समुद्र तट-3
22.नीले रंग का बहुमूल्य रत्न-3
26.मित्र,दोस्त.मीत-2
27.हूर,अप्सरा
29.मेहंदी-2
30.शीर्ष,पराकाष्ठा-3
31.इसमें पौधा लगाते हैं-3
32.पीहर,नैहर-3
34.युक्तिवाद,पैरवी-3
35.टब,परात,तगारी-3
37.इच्छा-3
39.परत,तह-2
41.कद्र,सम्मान-2

शब्द पहेली 4044 का हल

महागठबंधन के नेताओं ने बनाई चुनावी रणनीति, 20 मई को भारत बंद का ऐलान

एजेंसी

पटना। बिहार विधानसभा चुनाव को लेकर विपक्षी दलों के महागठबंधन ने बैठक कर 20 मई को भारत बंद का फैसला किया है। पटना के आशियाना दीघा में आयोजित बैठक में राष्ट्रीय जनता दल नेता तेजस्वी यादव ने कहा कि 20 मई को वामदलों की ओर से बंद का आह्वान किया गया है, जिसे महागठबंधन के सभी दल समर्थन देंगे। भाकपा माले के महासचिव दीपांकर भट्टाचार्य ने बताया कि मजदूरों के अधिकारों की मांग को लेकर 20 मई को भारत बंद का आह्वान किया गया है। बैठक में कांग्रेस विधायक दल के नेता डॉ शकील अहमद खान ने नीतीश सरकार की नीतियों को जनविरोधी बताते हुए इसके खिलाफ रणनीति बनाकर जनता के बीच जाने की बातें कही। विकासशील पार्टी के अध्यक्ष मुकेश सहनी ने महागठबंधन के नेताओं से चुनावी रणनीति, साझा चुनावी घोषणा पत्र और प्रचार को एकजुटता के साथ रणनीति बनाकर आगे बढ़ने पर जोर दिया।

पाकिस्तान की सेना ने जम्मू-कश्मीर में फिर किया संघर्ष विराम का उल्लंघन

श्रीनगर। पहलगाम में बाईस अप्रैल को पर्यटकों पर हुए आतंकी हमले के बाद पाकिस्तान नियंत्रण रेखा और अंतरराष्ट्रीय सीमा पर लगातार संघर्ष विराम उल्लंघन कर रहा है। पाकिस्तान की फौज बिना उकसावे के जम्मू-कश्मीर के क्षेत्र में गोलीबारी कर रही है। भारतीय सेना के एक शीर्ष अधिकारी के अनुसार, चार-पांच मई की रात पाकिस्तान की सेना ने फिर ऐसी हरकत की। शीर्ष सैन्य अधिकारी ने बताया कि रात को पाकिस्तान सेना की चौकियों ने जम्मू-कश्मीर के कुपवाड़ा, बारामूला, पुंछ, राजौरी, मेंढर, नौशेरा, सुंदरबनी और अखनूर के आसपास के इलाकों में नियंत्रण रेखा के पार बिना उकसावे के छोटे हथियारों से गोलीबारी की। पाकिस्तान की सेना की इस हरकत का भारतीय सेना ने तुरंत और उचित जवाब दिया।

ममता बनर्जी के मुर्शिदाबाद दौरे पर दिलीप घोष ने उठाए सवाल, बोले- 'पहले क्यों नहीं गईं'

कोलकाता । पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के प्रस्तावित मुर्शिदाबाद दौरे को लेकर बीजेपी ने तीखा हमला बोला है। बीजेपी नेता और पूर्व प्रदेश अध्यक्ष दिलीप घोष ने ममता बनर्जी पर मुर्शिदाबाद हिंसा में हिंदू पीड़ितों की अनदेखी करने का आरोप लगाया है। घोष ने कहा कि ममता को हिंसा प्रभावित इलाकों में पहले ही जाना चाहिए था, लेकिन उन्होंने इमामों के साथ बैठकें और मंदिरों के उद्घाटन को प्राथमिकता दी। दिलीप घोष ने ममता बनर्जी की मंशा पर सवाल उठाते हुए कहा, ममता बनर्जी को मुर्शिदाबाद पहले ही जाना चाहिए था। वह क्यों नहीं गईं? उन्होंने इमामों को बुलाया, बैठकें कीं, उनकी प्रशंसा की और मंदिरों का उद्घाटन किया, लेकिन वह उन जगहों पर कभी नहीं गईं जहां हिंदू पीड़ित थे। मुर्शिदाबाद और मालदा में हिंदुओं को बार-बार उत्पीड़न का सामना करना पड़ रहा है। उनके घर नष्ट कर दिए गए, संपत्ति जला दी गई और उन्हें वहां से पलायन करना पड़ा। ममता ने इसके बारे में कभी कुछ नहीं कहा। अब वह इतनी देर से जा रही हैं कि सारे सबूत मिटा दिए जाएंगे और वहां कुछ भी नहीं बचेगा। उन्हें वहां पहले ही जाना चाहिए था। वह क्यों नहीं गईं? मुर्शिदाबाद में 11 और 12 अप्रैल को वक्फ कानून के खिलाफ प्रदर्शन के दौरान हिंसा भड़क उठी थी, जिसमें तीन लोगों की मौत हो गई थी और सैकड़ों लोग बेघर हो गए थे। बीजेपी ने दावा किया है कि इस हिंसा में हिंदुओं को निशाना बनाया गया और करीब 400 हिंदू परिवारों को अपने घर छोड़कर मालदा और झारखंड के पकुर जिले में शरण लेनी पड़ी। बीजेपी ने ममता सरकार पर अल्पसंख्यक तुष्टीकरण का आरोप लगाते हुए कहा कि वह हिंसा के पीड़ित हिंदुओं के प्रति उदासीन रही हैं।

राजस्थान में दिखा पश्चिम विक्षोभ का असर, बारिश को लेकर अलर्ट जारी

जयपुर । देश के कई राज्यों में पश्चिम विक्षोभ का असर दिखाई दे रहा है। राजस्थान में सुबह से ही तेज आंधी, बारिश और ओलावृष्टि हो रही है। इस दौरान ब्यावर, चित्तौड़गढ़, राजसमंद में मौसम का खास असर दिखाई दिया। सवेरे से ही तेज आंधी और अंधड़ के साथ बारिश शुरू हुई। मौसम विभाग ने प्रदेश के कई जिलों में आंधी, वज्रपात और मेघगर्जन को लेकर ऑरेंज और येलो अलर्ट जारी किया है। सोमवार की सुबह से ब्यावर शहर सहित आसपास के क्षेत्रों में तेज बारिश हो रही है। अचानक हुई बारिश और तेज ठंडी हवा से तापमान में गिरावट दर्ज की गई। बादलों की गर्जना के साथ रुक-रुक कर बारिश हो रही है। तेज बारिश के कारण आसपास के क्षेत्रों में बिजली कटौती की गई है। मौसम विभाग ने कई इलाकों में बारिश और तेज आंधी का अलर्ट जारी किया है। वहीं, चित्तौड़गढ़ में भी पश्चिमी विक्षोभ का देखने को मिला। सवेरे से ही तेज आंधी और अंधड़ के साथ बारिश का दौर शुरू हुआ। सोमवार को भी राजस्थान के कुछ इलाकों में बादल छाए हुए हैं। जिसे लेकर मौसम विभाग ने आज भी 11 जिलों में बारिश, वज्रपात और तेज आंधी को लेकर ऑरेंज अलर्ट जारी किया है।

इधर, मौसम विभाग की ओर से जारी रिपोर्ट के मुताबिक राज्य के चूरू जिले में ओला वृष्टि और राज्य में मेघगर्जन के साथ हुई हल्की से मध्यम वर्षा दर्ज की गई। सबसे ज्यादा वर्षा शेरगढ़ (जोधपुर) में 63 मिमी दर्ज की गई। इसके अलावा कुछ जिलों में हीट वेव का असर भी रहा। तापमान की बात करें तो राज्य में सर्वाधिक अधिकतम तापमान चित्तौड़गढ़ में 39.7 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान चित्तौड़गढ़ में 26.6 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया।

दुश्मन को उसी की भाषा में मिलेगा जवाब, जैसा आप चाहते हैं, वैसा होकर रहेगा : राजनाथ सिंह

एजेंसी

नई दिल्ली। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में 22 अप्रैल को हुए आतंकवादी हमले के परिप्रेक्ष्य में रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने देश के दुश्मनों को चेतावनी देते हुए कहा कि देश की तरफ आंख उठाने वालों को मुंहतोड़ जवाब दिया जाएगा। रक्षा मंत्री ने कहा, मैं आपको आश्वस्त करना चाहता हूं कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में जैसा आप चाहते हैं, वैसा होकर रहेगा।÷ रक्षा मंत्री के मुताबिक, देश के लोग जो चाहते हैं, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी दुश्मनों को उसी भाषा में जवाब देंगे। उन्होंने कहा कि रक्षा मंत्री के रूप में उनका यह दायित्व है कि अपनी सेना के साथ मिलकर देश की सीमाओं की रक्षा करें। साथ ही, देश की तरफ आंख उठाकर देखने वालों को जवाब दिया जाए। उन्होंने कहा, आप सभी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और उनकी कार्यशैली से भलीभांति परिचित हैं। उनकी दृढ़ता से भी भलीभांति परिचित हैं। जोखिम उठाने का भाव उन्होंने सीखा है, उससे भी आप परिचित हैं। रक्षा मंत्री दिल्ली में संस्कृति जागरण महोत्सव में साधु संतों के बीच बोल रहे थे। उन्होंने

कहा कि भारत अमर रहेगा। दुनिया की कोई ताकत भारत को मिटा नहीं सकती। राजनाथ सिंह ने कहा कि भारत की शक्ति केवल उसकी सैन्य ताकत में नहीं, बल्कि यह शक्ति संस्कृति और अध्यात्म में भी निहित है। उल्लेखनीय है कि 22 अप्रैल को जम्मू कश्मीर के पहलगाम में आतंकवादी हमला हुआ था। इस आतंकवादी हमले में आतंकियों ने 26 निर्दोष लोगों की हत्या कर दी थी। आतंकवादी हमले के बाद पूरी स्थिति की समीक्षा करने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, तीनों सेनाओं के प्रमुखों, चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ और राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार के साथ महत्वपूर्ण बैठक की थी। इस दौरान सरकार ने सेना को स्थिति से निपटने के लिए खुली छूट देने का निर्णय किया था। पहलगाम में हुए आतंकवादी हमले के बाद सेना ने इलाके की घेराबंदी कर आतंकवादियों पर शिकंजा कस दिया है। इससे तिलमिलाया पाकिस्तान नियंत्रण रेखा पर संघर्ष विराम का उल्लंघन कर रहा है। पाकिस्तान बीते 10 दिन से नियंत्रण रेखा पर गोलीबारी कर रहा है। इस बीच, प्रधानमंत्री ने शनिवार को नौसेना प्रमुख और वायु सेना प्रमुख से मुलाकात की है। मौजूदा स्थिति को देखते हुए ये मुलाकातें काफी महत्वपूर्ण मानी जा रही हैं। रक्षा मंत्री ने कहा कि पीएम मोदी ने देश को 2047 तक एक विकसित राष्ट्र बनाने का लक्ष्य समस्त देशवासियों के समक्ष रखा है। यह कोई छोटा लक्ष्य नहीं है, लेकिन पूरा होकर रहेगा। उन्होंने यह भी कहा कि आज विश्व में भारत की बात सुनी जाती है। पहलगाम हमले के बाद भारत ने विश्व के कई महत्वपूर्ण देशों के साथ चर्चा की है। अमेरिका समेत कई देशों ने भारत का समर्थन किया है। अब भारत और जापान एक महत्वपूर्ण द्विपक्षीय चर्चा करने जा रहे हैं। इस चर्चा में अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा की मौजूदा स्थिति पर विचार-विमर्श किया जाएगा। हाल ही में हुए पहलगाम आतंकवादी हमले के बाद दोनों देशों के बीच होने वाली ये चर्चा काफी महत्वपूर्ण है।

जम्मू-कश्मीर के रामबन में सेना का वाहन खाई में गिरा, तीन जवान बलिदान

एजेंसी

रामबन। जम्मू-कश्मीर के रामबन जिले में जम्मू-श्रीनगर राष्ट्रीय राजमार्ग पर बैटरी चश्मा इलाके के पास सेना का एक वाहन सड़क से फिसलकर 700 फीट गहरी खाई में गिर गया। इसमें सेना के तीन जवानों का बलिदान हो गया। अधिकारियों ने बताया कि सेना का एक ट्रक राष्ट्रीय राजमार्ग 44 पर जम्मू से श्रीनगर जा रहे काफिले का हिस्सा था और जब वह बैटरी चश्मा के पास सुबह करीब 11.30 बजे पहुंचा तो यह दुर्घटना हुई। उन्होंने बताया कि इस हादसे के बाद सेना, पुलिस, एसडीआरएफ और स्थानीय स्वयंसेवकों ने तत्काल संयुक्त बचाव अभियान शुरू किया और वाहन में सवार जवानों का रेस्क्यू किया लेकिन तब तक तीनों जवान की मौत हो गई थी। अधिकारियों ने बताया कि मृतकों की पहचान सिपाही अमित कुमार, सुजीत कुमार और मन बहादुर के रूप में हुई है और उनके पार्थिव देह को खाई से निकाल लिया गया है। उन्होंने बताया कि दुर्घटना के कारण वाहन धातु के ढेर में तब्दील हो गया है। पुलिस ने इस संबंध में मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

कानपुर में एक ही परिवार के 5 सदस्यों की जलकर मौत, मां-बाप और 3 बेटियां जिंदा जलीं

एजेंसी

लखनऊ । उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कानपुर के चमनगंज स्थित पांच मंजिला इमारत में लगी आग में एक ही परिवार के 5 लोगों की मौत पर दुख जताया है। मृतकों के प्रति संवेदना व्यक्त करते हुए राहत और बचाव के कार्यों में तेजी लाने और घायलों के समुचित उपचार का प्रशासन को निर्देश भी दिया है।

कानपुर के चमनगंज इलाके के गांधी नगर स्थित एक पांच मंजिला इमारत में रविवार रात भीषण आग लग गई थी। इस इमारत में रहने वाले एक परिवार के पांच लोग फंस गए थे, जिनमें पति-पत्नी और उनकी तीन बच्चियां शामिल थीं। 8 घंटे के रेस्क्यू ऑपरेशन के बाद पांचों के झुलसे शव बरामद कर लिए गए। कड़ी मशक्कत के बाद फायर ब्रिगेड ने आग पर काबू पाया। इमारत में लगी आग को बुझाने की कोशिशों में दमकल की एक दर्जन से ज्यादा गाड़ियां रात को ही मौके पर पहुंची थीं। सेंट्रल कानपुर के एडीसीपी

राजेश श्रीवास्तव ने बताया कि मौके पर दमकल विभाग, पुलिस और एसडीआरएफ पहुंचा। रात 8 बजे से सुबह साढ़े पांच बजे तक बचाव कार्य चला। पांच लोगों को झुलसी हालत में उर्सुला अस्पताल की बर्न यूनिट भेजा गया। मुख्यमंत्री ने इसी घटना का संज्ञान लिया। मृतकों के प्रति संवेदना व्यक्त करते हुए राहत और बचाव के कार्यों में तेजी लाने का निर्देश दिया। जानकारी के मुताबिक, इमारत की निचली मंजिल पर जूते का कारखाना था और ऊपर की मंजिलों पर लोग रहते थे। प्राथमिक तौर पर इसे शॉर्ट सर्किट के कारण लगी आग बताया जा रहा है, जिसने देखते ही देखते पूरी इमारत को अपनी चपेट में ले लिया।

भोपाल के लव जिहाद मामले में महिला आयोग की टीम ने पुलिस पर उठाए सवाल

एजेंसी

भोपाल। मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल में हिंदू लड़कियों से दुष्कर्म और वीडियो बनाकर ब्लैकमेलिंग करने के प्रकरण की जांच के लिए भोपाल पहुंची राष्ट्रीय महिला आयोग की टीम ने पुलिस की अब तक की कार्रवाई पर सवाल उठाए हैं। इस टीम ने विशेष जांच दल (एसआइटी) के अधिकारियों को तलब करके अब तक हुई एफआईआर, उनकी जांच व कार्रवाई की स्थिति जानी। एक पीड़ित छात्रा से मुलाकात करके उसके बयान दर्ज किए। झारखंड की पूर्व डीजीपी निर्मल कौर के नेतृत्व वाली इस तीन सदस्यीय आयोग की जांच टीम ने अधिकारियों से पूछा कि इस प्रकरण में गिरोह सामने आने के बाद भी संगठित अपराध की धारा क्यों नहीं लगाई गई। टीम ने इस गिरोह को फंडिंग (वित्तीय मदद) मुहैया कराने वालों की भी जांच करने के लिए कहा है। टीम के सदस्यों ने अधिकारियों और पीड़िता से बातचीत के बाद पाया कि हिंदू युवतियों को निशाना बनाकर उन्हें सुनियोजित ढंग से फंसाया गया। उनसे दुष्कर्म कर उसका वीडियो बनाकर ब्लैकमेल किया गया। जांच के बाद टीम के सदस्यों ने मामले की जांच कर रहे पुलिस अधिकारियों की बैठक ली। इसमें टीम के सदस्यों ने निर्देश दिए कि पूरा गिरोह संगठित रूप से काम कर रहा था। ऐसे में उन पर संगठित अपराध की धाराएं बढ़ाई जानी चाहिए। आयोग की जांच टीम के सदस्यों ने कहा कि कहा कि सभी आरोपितों की पृष्ठभूमि आर्थिक रूप से बेहद कमजोर है।

ऐसे में उनके पास महंगी बाइक, कार, किराए पर कई जगह लिए कमरे और रोजाना क्लब में ले जाने के रुपये कहीं से तो आए। इससे साफ होता है कि उन्हें किसी ने फंडिंग की है। पुलिस को आरोपियों को किसी की ओर से वित्तीय मदद पहुंचाने की संभावना की भी जांच बारीकी से करनी चाहिए, ताकि उन्हें आर्थिक रूप से सहयोग करने वालों को भी बेनकाब किया जा सके। फंडिंग करने वालों पर भी कार्रवाई होनी चाहिए। उन्हें अपराध में सहयोगी माना जाना चाहिए।

सोमवार को टीम के सदस्य तीन पीड़ित छात्राओं के बयान दर्ज करेंगे। इसके साथ ही वे टीआइटी कॉलेज व क्लब 90 में भी जाएंगे, जहां आरोपियों ने छात्राओं को निशाना बनाया। टीम के सदस्यों ने बागसेवनिया थाना प्रभारी व अशोका गार्डन थाना प्रभारी को बुलाया। उनसे तथ्य समझने के बाद कहा कि पुलिस को टीआइटी कॉलेज की भी जांच करनी चाहिए। यहां की छात्राओं को आरोपियों ने झांसे में लिया।

उपराष्ट्रपति धनखड़ ने किया 'प्राकृतिक खेती इकाई एवं मॉडल गौशाला' का लोकार्पण

एजेंसी

भोपाल। उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने ग्वालियर प्रवास के दौरान यहां राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय में 'प्राकृतिक खेती इकाई एवं मॉडल गौशाला' का लोकार्पण किया। लोकार्पण कार्यक्रम में राज्यपाल मंगुभाई पटेल, मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव, केन्द्रीय संचार एवं पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया भी शामिल हुए। लोकार्पण के बाद सभी अतिथियों ने यहां लगाई गई गौ उत्पादों पर केन्द्रित प्रदर्शनी का अवलोकन किया और गौ-माताओं को चारा खिलाया। उपराष्ट्रपति धनखड़ सहित सभी अतिथियों ने 'प्राकृतिक खेती इकाई एवं मॉडल गौशाला' के उद्घाटन के बाद एक पेड़ माँ के नाम अभियान के तहत विभिन्न प्रजातियों के पौधे भी रोपे। पौधरोपण के बाद उप राष्ट्रपति

धनखड़ ने कहा कि वृक्षारोपण को और तेज करें। हम सब न केवल पेड़ लगाएं बल्कि उनका संरक्षण भी करें। इससे पहले उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ शाम लगभग 5.45 बजे वायुसेना के विमान से महाराजपुरा एयरफोर्स विमानतल पर पधारे। विमानतल पर उपराष्ट्रपति का आत्मीय स्वागत किया गया। राज्यपाल मंगुभाई पटेल एवं मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने पुष्प-गुच्छ भेंट कर उनकी अगवानी की। उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ के साथ दिल्ली से केन्द्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान एवं केन्द्रीय संचार एवं पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया भी आए। विमानतल पर उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ का प्रदेश के उद्यानिकी एवं सामाजिक न्याय मंत्री नारायण सिंह कुशवाह, क्षेत्रीय सांसद भारत सिंह कुशवाह, विधायक मोहन सिंह राठौर व जनप्रतिनिधि सुरेन्द्र शर्मा ने भी स्वागत किया। विमानतल पर अपर मुख्य सचिव जेएन कंसौटिया, संभागीय आयुक्त मनोज खत्री, आईजी अरविंद सक्सेना, कलेक्टर रुचिका चौहान, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक धर्मवीर सिंह, नगर निगम आयुक्त संघ प्रिय एवं वायु सेना के अधिकारी एवं प्रशासनिक अधिकारी भी उपस्थित थे।

सांसद एंटनी को मिल सकती है केरल कांग्रेस की कमान

एजेंसी

तिरुवनंतपुरम। केरल कांग्रेस में जल्द ही बड़ा बदलाव देखने को मिल सकता है। प्रदेश के पठानमथिट्टा लोकसभा क्षेत्र से सांसद एंटो एंटनी को केरल प्रदेश कांग्रेस का अध्यक्ष बनाया जा सकता है। एंटनी के पीछे विवादास्पद अप्रवासी भारतीय व्यवसायी और रावर्ट वाड्रा के करीबी सीसी थंपी की महत्वपूर्ण भूमिका बताई जा रही है। बताया जा रहा है कि थंपी ने ही एंटनी के नाम को आगे बढ़ाया है केरल कांग्रेस सूत्रों के अनुसार, प्रियंका गांधी ने भी स्पष्ट रूप से सांसद एंटो एंटनी का केरल कांग्रेस के शीर्ष पद के लिए समर्थन किया है, जिसे थंपी के प्रभाव से जोड़ा जा रहा है। केरल कांग्रेस के अध्यक्ष फिलहाल के. सुधाकरण हैं।खास बात यह है कि एंटनी अगर प्रदेश में पार्टी की कमान संभालते हैं तो इसमें थंपी की भूमिका महत्वपूर्ण होगी। कांग्रेस के पहले परिवार के साथ उनके निकट संबंधों का इस्तेमाल पार्टी के सबसे प्रभावशाली पद को केरल में एंटनी के लिए सुरक्षित करने के लिए किया जा रहा है। पार्टी सूत्र भी पुष्टि करते हैं कि प्रियंका गांधी का एंटनी के प्रति सार्वजनिक समर्थन वाड्रा के थंपी के माध्यम से लॉबिंग का परिणाम है। सीसी थंपी वही शख्स हैं जो भारतीय एजेंसियों द्वारा कई जांचों का सामना कर रहे हैं। प्रवर्तन निदेशालय ने हाल ही में एक चार्जशीट में सोनिया गांधी के दामाद रॉबर्ट वाड्रा के साथ सीसी थंपी के गहरे व्यक्तिगत और व्यावसायिक संबंधों की पुष्टि की है। थंपी मूल रूप से त्रिशूर के पझांजी में कुट्टोल का रहने वाला है। 1970 के दशक में यूएई में एक प्रवासी श्रमिक के रूप में शुरुआत करने वाले थंपी आज यूएई के रियल एस्टेट और शराब उद्योगों में एक बड़ा नाम है।

पाकिस्तान सुधरने वाला नही,प्रधानमंत्री मोदी कारवाई करे हम साथ है: औबैसी

एजेंसी

पूर्वी चंपारण। सीमांचल के बाद चंपारण के मुस्लिम बहुल क्षेत्रों में अपनी पैठ बढ़ाने को लेकर एआईएमआईएम प्रमुख असदुद्दीन ओवैसी पूर्वी चंपारण जिले के ढाका पहुंचे, जहां उन्होने सिर पर तिरंगे की पगड़ी पहने एक जनसभा को संबोधित करते केंद्र सरकार से पहलगाम हमले में मारे गए 27 लोगों को शहीद का दर्जा देने की मांग की। इस दौरान उन्होंने पीएम मोदी से आतंकियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करने की मांग करते कहा कि यह वक्त सोचने का नही जबाब देने का है। पाकिस्तान एक ऐसा देश है,जो सुधरने वाला नहीं है । भारत पर बार बार हमला कर रहा है।ऐसे में प्रधानमंत्री को इसके खिलाफ कड़े फैसले लेने चाहिए।उन्होने कहा कि

मुझे उम्मीद है कि पाकिस्तान के खिलाफ प्रधानमंत्री मोदी ऐसी कार्रवाई करेंगे, जिससे पाकिस्तान दोबारा भारत पर हमले करने के पहले सौ बार सोचेगा। औबैसी ने कहा कि हर 2-6 महीने के बाद आतंकवादी यहां आते हैं। हमारी फौज के जवानों और निरीह लोगो को निशाना बनाकर चले जाते हैं। मैं पाकिस्तान के खिलाफ भारत सरकार के साथ हूं। भारत सरकार जो भी फैसला लेगी मैं हर फैसले में साथ हूं। उन्होने वक्फ संशोधन कानून को लेकर मोदी सरकार पर हमला बोलते हुए कहा कि केंद्र ने यह कानून जबरन थोप दिया है। हमने संसद से लेकर सड़क तक इसका विरोध किया है और आगे भी करते रहेंगे। यह कानून मुसलमानों की संपत्ति पर अधिकार खत्म करने की साजिश है। ओवैसी ने बातो बातो में प्रतिपक्ष के नेता तेजस्वी यादव पर जमकर निशाना साधते हुए कहा वो हमारे 4 विधायक ले गए। इस बार हम 24 विधायक लाएंगे।

बागीदौरा के विधायक जयकृष्ण पटेल 20 लाख की रिश्वत लेते रंगे हाथों गिरफ्तार

एजेंसी

जयपुर। राजस्थान भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो (एसीबी) ने बांसवाड़ा जिले के बागीदौरा से विधायक जयकृष्ण पटेल को 20 लाख रुपये की रिश्वत लेते हुए रंगे हाथों गिरफ्तार किया है। यह राज्य में पहली बार है जब किसी विधायक को रिश्वत लेते हुए गिरफ्तार किया गया है। भारत आदिवासी पार्टी (बीएपी) के विधायक पटेल पर आरोप है कि उन्होंने विधानसभा में खनन विभाग से जुड़े सवालों को वापस लेने के लिए एक कंपनी से पहले 10 करोड़ रुपये की मांग की थी, जो बाद में 2.5 करोड़ में तय हुई।

एसीबी ने जयपुर स्थित उनके सरकारी आवास से उन्हें गिरफ्तार किया। एसीबी के महानिदेशक डॉ. रवि प्रकाश मेहरड़ा ने बताया कि विधायक को रिश्वत लेते समय रंगे हाथों पकड़ा गया। उनके हाथों पर रासायनिक परीक्षण में रंग आने की पुष्टि हुई है। साथ ही आरोपी के खिलाफ वीडियो सबूत भी मौजूद हैं। शिकायतकर्ता रविन्द्र कुमार मीना

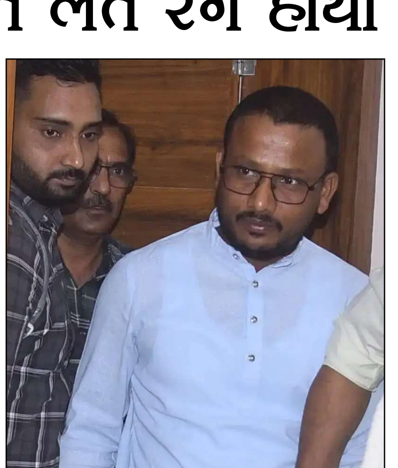

ने एसीबी को बताया कि विधायक पटेल बार-बार विधानसभा में अवैध खनन से संबंधित प्रश्न लगाकर उन पर दबाव बना रहे थे और रिश्वत की मांग कर रहे थे। शिकायत की पुष्टि के बाद एसीबी ने उनके खिलाफ जाल बिछाया। दोपहर 1:30 बजे एसीबी की टीम विधायक के ज्योति नगर स्थित आवास पर पहुंची। वहां शिकायतकर्ता की उपस्थिति में ट्रैप कार्रवाई की गई।

इस दौरान विधायक के सहयोगी ने रिश्वत की रकम ली और भागने की कोशिश की, लेकिन टीम ने मौके पर कार्रवाई कर विधायक व दलाल विजय कुमार को गिरफ्तार कर लिया। उन्होंने बताया कि खनन को लेकर 3 सवालों को ड्रॉप करने की बदले में बाप विधायक ने रिश्वत मांगी थी, जिनमें तीन सवाल -प्रश्न संख्या- 5998 और 6284 ये दोनों सवाल तारांकित हैं और प्रश्न संख्या- 950, ये सवाल अतारांकित है। ये तीनों सवाल अभी विधानसभा में टेबल नहीं हुए हैं, सिर्फ लगाए गए हैं। डॉ. मेहरड़ा ने बताया कि गिरफ्तारी से पहले विधानसभा अध्यक्ष और मुख्यमंत्री को पूरे मामले की जानकारी दी गई थी।

नेपाल के पश्चिम प्रांत के मुख्यमंत्री ने किए रामलला के दर्शन

एजेंसी

अयोध्या। पड़ोसी देश नेपाल के सुदूर पश्चिम प्रांत के मुख्यमंत्री कमल बहादुर शाह ने श्रीराम जन्मभूमि में राम लला के दर्शन किए। कमल बहादुर शाह ने महर्षि वाल्मीकि एयरपोर्ट पर मीडिया से की बातचीत में कहा कि भगवान राम लला की जन्मभूमि पहुंचा हूं, उनके दर्शन करने की कामना थी।अयोध्या और नेपाल के संबंध के एक सवाल के जवाब में उन्होंने कहा कि सिर्फ नेपाल अयोध्या ही नहीं नेपाल भारत का बहुत पुराना संबंध है, नेपाल अयोध्या के संबंध को और मजबूत करना चाहता है। कमल बहादुर शाह ने कहा कि भारत नेपाल की कनेक्टिविटी बहुत जरूरी है, जिन सड़कों की जरूरत है, उसको ठीक किया जा रहा है। पहलगाम आतंकी हमले को लेकर उन्होंने कहा कि किसी भी तरह की आंतकी गतिविधियां नेपाल को मंजूर नहीं है। नेपाल की सरकार नेपाल के लोग आतंकवादी गतिविधियों के खिलाफ हैं।

पहलगाम की घटना दुखदाई है, मैं मारे गए लोगों को श्रद्धांजलि देता हूं। आतंकियों के खिलाफ भारत की कार्रवाई की आशंका पर उन्होंने कहा कि इस तरह की टेररिस्ट एक्टिविटीज को मिलजुल कर खत्म करना चाहिए। नेपाल के बॉर्डर पर इस तरह की टेररिस्ट एक्टिविटीज नहीं होने देंगे, जितने भी हमारे जवान हैं, पूरी शक्ति लगाकर कंट्रोल करने के लिए तैयार हैं।

विधानसभा अध्यक्ष तोमर के सुपुत्र के आशीर्वाद समारोह में शामिल हुए उपराष्ट्रपति

एजेंसी

भोपाल। उप राष्ट्रपति जगदीप धनखड़ रात ग्वालियर प्रवास के दौरान मध्य प्रदेश विधानसभा अध्यक्ष नरेंद्र सिंह तोमर के बेटे प्रबल प्रताप सिंह तोमर की शादी के पश्चात आशीर्वाद समारोह (रिसेप्शन) में शामिल हुए। इस मौके पर उनकी धर्मपत्नी डॉ. सुदेश धनखड़ भी मौजूद रहीं।

उन्होंने समारोह में वर-वधु को आशीर्वाद प्रदान किया। केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान, ज्योतिरादित्य सिंधिया, उत्तर प्रदेश

के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, राज्यपाल मंगुभाई पटेल एवं मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव, विभिन्न राज्यों के राज्यपाल और मुख्यमंत्री, मध्य प्रदेश व अन्य प्रदेशों के मंत्रिगण सहित अन्य जनप्रतिनिधिगणों ने मध्य प्रदेश विधानसभा अध्यक्ष नरेन्द्र सिंह तोमर के सुपुत्र प्रबल प्रताप सिंह तोमर के विवाह पश्चात ग्वालियर के मेला मैदान में आयोजित हुए आशीर्वाद समारोह में पहुँचकर वर-वधु को आशीर्वाद प्रदान किया। फिल्म अभिनेता सुनील शेट्टी, सोनू सूद और प्राची देसाई भी ग्वालियर पहुंचकर समारोह में शामिल हुए। दरअसल, नरेंद्र सिंह तोमर के बेटे प्रबल प्रताप सिंह तोमर की मंगलवार रात को जयपुर में शादी हुई। जय महल पैलेस में रात को दूल्हे प्रबल प्रताप और दुल्हन भरतपुर की अरुंधति सिंह ने एक-दूसरे को वरमाला पहनाई। शादी में राजस्थान समेत कई राज्यों के मुख्यमंत्री, मंत्री और राजनेता शामिल हुए थे। कई बॉलीवुड सेलिब्रिटी भी शादी में शामिल होने पहुंचे थे।

रात के खाने में ना खाएं दही

हम सभी जानते हैं कि दही खाना सेहत के लिए बहुत अधिक लाभकारी होता है। दही एक सुपर फूड है, जिसे हर दिन खाया जा सकता है और यह सेहत को सिर्फ एक नहीं अनेक तरीकों से लाभ पहुंचाती है। पाचन से लेकर त्वचा और बाल सबको हेल्दी रखती है। इस विषय पर नए सिरे से बात करने की जरूरत नहीं है। आज हम इस विषय पर बात करेंगे कि आखिर रात के खाने में दही खाने को क्यों मना किया जाता है.

लाभकारी दही हानि क्यों करने लगती है ?

- आपने अपने पैरंट्स से अक्सर सुना होगा कि रात के समय दही या दही से बना रायता नहीं खाना चाहिए। लेकिन आज कल शादी-पार्टीज में यह ट्रेंड है कि आप रात के 12 बजे भी डिनर ले रहे होंगे तो आपको रायता जरूर मिलेगा खाने में.। खैर, सर्व करनेवाले तो सर्व करते है। यह तो आपको निर्णय लेना है कि रात में रायता या दही खाकर आप बीमार पड़ना चाहते हैं या नहीं।
- दही पाचनतंत्र को ऊर्जा देने का काम करती है। साथ ही हमारे शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता भी बढ़ाती है। लेकिन यदि दही का सेवन रात में किया जा तो पाचनतंत्र भी डिस्टर्ब होता है और रोग प्रतिरोधक क्षमता पर भी बुरा असर पड़ता है।

पाचकाग्नि को मंद हो जाती है

- अब आपके मन में यह सवाल आ रहा होगा कि आखिर रात में दही खाने पर ऐसा क्या हो जाता है? तो जान लीजिए कि रात को दही खाने पर पाचनतंत्र मंद हो जाता है। आयुर्वेद की भाषा में बात करें तो जठराग्नि मंद हो जाती है और शरीर की वायु कुपित हो जाती है। इस कारण रात में दही का सेवन करने पर हाथ, पैर, सिर, कमर या शरीर के किसी भी हिस्से में दर्द की समस्या हो सकती है।

जुकाम लगा सकती है दही

- इसके साथ ही दही खाने पर रोग प्रतिरोधक क्षमता पर इस लिए बुरा असर पड़ता है, क्योंकि दही तासीर में ठंडी होती है। यदि रात में दही खाई जाती है तो शरीर में कफ की मात्रा में वृद्धि हो सकती है। इससे गले में दर्द, खराश, बलगम वाली खांसी, सिर में भारीपन, जुकाम आदि की समस्या हो सकती है।

जोड़ों का दर्द बढ़ सकता है

- जिन लोगों को जोड़ों के दर्द की शिकायत होती है यदि वे लोग रात के समय दही खाना शुरू कर दें तो यकीन मानिए कि जल्द ही ऐसा समय आएगा जब उनके जोड़ों का दर्द इस कदर बढ़ जाएगा कि दिन-रात का चैन खो सकता है।

सो नहीं पाते ऐसे लोग

- जिन लोगों को अस्थमा की शिकायत है, उन्हें रात के समय भूल से भी दही का सेवन नहीं करना चाहिए। नहीं रात के समय अस्थमा अटैक के कारण सांस लेना मुश्किल हो सकता है। हालांकि सभी लोगों को इस बात की जानकारी भी होनी चाहिए खट्टी दही और मीठी दही दोनों के शरीर पर अलग-अलग प्रभाव होते हैं। लेकिन रात के समय आपको किसी भी प्रकार की दही लेने से बचना चाहिए।

आ सकता है बुखार

- रात के समय दही खाना आपको बुखार आने का कारण भी बन सकता है। इसकी वजह ऊपर बताए गए कारणों को मिलाकर तैयार हो जाती है। क्योंकि शरीर में पित्त और वायु का कुपित होना, जुकाम लगना, शरीर में दर्द होना जैसी समस्याएं शरीर के सामान्य तापमान को स्थिर नहीं रहने देती हैं। इससे बुखार आने की समस्या हो सकती है।

रात को दही खाने से बढ़ती है सूजन

- रात को दही खाने से शरीर में सूजन बढ़ने की समस्या बढ़ सकती है। क्योंकि रात में दही का सेवन करने से पित्त की मात्रा में बढ़ोतरी हो सकती है, जो आपके शरीर में सूजन बढ़ाने का काम करेगा।
- अगर आपके शरीर में सूजन की समस्या पहले से है या कोई चोट लगी हुई है तो रात के समय दही खाना आपके शरीर को अंदर से कमजोर करने का काम करेगा। इससे आपके शरीर में दर्द और पीड़ा कई गुना बढ़ सकती है।

जरूरी नहीं अगले दिन ही दिखे रिजल्ट

- अगर आपको लगता है कि आपने तो रात को दही खाई थी, आपको तो कोई समस्या नहीं हुई। तो यह जरूरी नहीं है कि आपने रात में दही खाई है तो अगले दिन सुबह के समय ही आपके शरीर में बीमारी के लक्षण दिखने लगेंगे। ये लक्षण दिन में किसी समय, अगली रात में या एक-दो दिन बाद भी नजर आ सकते हैं।
- ऐसा इसलिए होता है क्योंकि हर किसी की रोग प्रतिरोधक क्षमता अलग-अलग होती है। एक तरफ जहां किसी में एक बार रात को दही खाने के बाद कुछ ही घंटे में तबीयत खराब हो सकती है तो किसी अन्य व्यक्ति के शरीर में इसका असर 3 दिन बाद भी दिख सकता है।

खून के थक्के बनने से रोकने की दवा लेते हैं तो न खाएं हरा साग

हरा साग जैसे पालक क्लॉटिंग रोकने वाली वार्फरिन या कुमारिन दवाओं के असर को काफी हद तक कर देता है बेअसर इसलिए ऐसे लोग जो इन दवाओं को प्रयोग करते हैं उन्हें सलाह दी जाती है कि हरा साग न खाएं।

जिन रोगियों में खून के असामान्य थक्कों के बनने और खून जमने की समस्या होती है, उन्हें एक विशेष दवा के सेवन के कारण कई बार हरा साग खाने से मना किया जाता है। यह दवा वार्फरिन है। यह और इसके जैसी अनेक दवाएं, जिन्हें कुमारिन-परिवार की दवाएं कहते हैं, विटमिन-के का प्रतिरोध करती हैं। इम्यूनोलॉजिस्ट एवं यूमैटॉलजिस्ट कहते हैं, विटमिन-के का काम खून की क्लॉटिंग से होता है। यह विटमिन यकृत में जमा होता है और इसी कारण हमारा खून सही ढंग से जमता है। यह विटमिन शरीर में क्लॉटिंग फैक्टरों का निर्माण करता है। विटमिन-ख न हो तो न जाने कितने ही लोगों की रक्तस्राव से मौत हो जाए, लेकिन फिर अनेक रोगियों में खून का जमना हानिकारक हो जाता है। मान लीजिए किसी रोगी में हृदयवॉल्व की सर्जरी हुई है या उसे कोई ऐसा रोग है, जिसमें खून बार-बार और जल्दी-जल्दी जमा करता है। ऐसे में अगर विटमिन-के का प्रतिरोध न किया गया, तो फिर खून का लगातार जमना हानिकारक या कभी-कभी जानलेवा साबित होगा। इसलिए ऐसे रोगियों में खून को पतला करने वाली दवाएं चलाई जाती हैं। इन्हीं दवाओं में कुमारिन-परिवार की सदस्य दवाएं भी शामिल हैं, जिनमें वार्फरिन प्रमुख है। हरा साग विटमिन-के का प्रमुख स्रोत है। इसे खाने से शरीर को विटमिन-ख की प्राप्ति होती है। लेकिन फिर जिन रोगियों को विटमिन-ख नहीं चाहिए या जिनके लिए विटामिन-के की प्रचुरता हानिकारक है, वे क्या करें? वह ब्लड की क्लॉटिंग (स्तम्भन) को रोकने के लिए वार्फरिन जैसी दवाओं पर निर्भर रहते हैं। और हरे साग का सेवन वार्फरिन को समुचित कार्य करने से रोकेगा।

आयरन की गोलियां खाएं

इसलिए डॉक्टर की सलाह होती है कि अगर आप वार्फरिन या अन्य कुमारिन-दवाएं खाते हैं, तो हरा साग कम-से कम खाएं या न खाएं। हां, यह जरूर है कि ऐसा करने से आपको आवश्यक आयरन नहीं मिलेगा और अनीमिया की आशंका बढ़ जाएगी, लेकिन ऐसी परिस्थिति में वार्फरिन के साथ हरे साग की बजाय आयरन की गोलियों का सेवन कहीं बेहतर है।

कोलेस्ट्रॉल बढ़ने या घटने से हो सकते हैं मानसिक दिव्यांगता का शिकार

कोलेस्ट्रॉल बढ़ने या घटने से ऑटिज्म जैसी मानसिक दिव्यांगता विकसित हो सकती है। हार्वर्ड विश्वविद्यालय समेत तीन संस्थानों के अध्ययन में यह जानकारी सामने आई है। ऑटिज्म के मरीज न तो अपनी बात ठीक से कह पाता है ना ही दूसरों की बात समझ पाता है और न उनसे संवाद स्थापित कर सकता है। यदि इन लक्षणों को समय रहते भांप लिया जाए, तो काबू पाया जा सकता है। प्रतिष्ठित नेचर पत्रिका में प्रकाशित इस रिपोर्ट के मुताबिक, बच्चे के धीमे मानसिक व शारीरिक विकास से जुड़ी इस बीमारी के लक्षण बचपन में ही दिखने लगते हैं। हार्वर्ड विश्वविद्यालय, मैसाचुएट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी और नॉर्थवेस्टर्न यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिकों ने कोलेस्ट्रॉल और ऑटिज्म के संबंध के बारे में जानने के लिए वैज्ञानिक अध्ययन किया। शोधकर्ताओं ने पाया कि ऑटिज्म के सबटाइप वाली एक बीमारी उन्हीं अनुवांशिक तत्वों से होती है जो शरीर में कोलेस्ट्रोल मेटाबोलिज्म और मस्तिष्क विकास को नियंत्रित करते हैं। वैज्ञानिकों ने मस्तिष्क के नमूनों के डीएनए अध्ययन से पाया कि लिपिड डायफंक्शन और ऑटिज्म के बीच साझा आणुविक जड़ें होती हैं। फिर वैज्ञानिकों ने ऑटिज्म पीड़ित लोगों के मेडिकल रिकॉर्ड का अध्ययन करके इस बात की पुष्टि की। लिपिड जीवित कोशिकाओं में एक महत्वपूर्ण अवयव होता है जो एल्कोहल में घुलनशील है। अध्ययनकर्ता इसहाक कोहेन का कहना है कि शोध के निष्कर्ष बताते हैं कि यह बहुत जटिल बीमारी है और इसके विभिन्न प्रकार अलग-अलग कारणों से उत्पन्न होते हैं।

खर्राटों की समस्या से निजात दिलाएगा चुंबक

अगर आपको भी खर्राटे लेने की समस्या है तो आपके लिए एक खुशखबरी है। माउंट जियॉन यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं ने चुंबक की मदद से एक ऐसा उपकरण बनाया है जो खर्राटों की समस्या से निजात दिला सकता है। दो चंबुकों के खींचने की क्षमता की मदद से हवा की नली को रात में सोने के दौरान खुला रखकर खर्राटों की समस्या को ठीक किया जा सकता है।

इस समस्या से दुनियाभर में लाखों लोग जूझ रहे हैं। इस बीमारी के कारण रात को सोते वक्त हवा की नली संकरी हो जाती है और सांस लेने में अवरोध पैदा होता है। इसके लक्षणों में खर्राटे लेना और मुंह से अजीब आवाजें निकालना भी शामिल है। यह बीमारी 40 साल की उम्र से ऊपर के पुरुषों में ज्यादा होती है। मोटापा, शराब की लत और धूम्रपान इसके जोखिम कारक हैं। इससे हार्ट अटैक और स्ट्रोक का खतरा बढ़ जाता है। मैग्नेटिक एपनोइया प्रीवेंशन (मैगनैप) उपकरण में उस तरह के चुंबक का इस्तेमाल होता है जो कंप्यूटर हार्ड ड्राइव और साइकिल के डायनेमो में पाए जाते हैं। यह उपकरण सांस की नली को खुला रखने में मदद करता है। चुंबक में एक क्षरण-प्रूफ टाइटेनियम कोटिंग है और यह दावा किया जाता है कि इन्हें एक बार प्रतिरोपित करने के बाद सालों तक सुरक्षित रूप से शरीर में छोड़ा जा सकता है।

इस उपकरण का आकार पचास पैसे के सिक्के के जितना है और इसे सर्जरी के द्वारा गले के हायोड बोन में फिट किया जा सकता है। यह हड्डी जीभ के ठीक नीचे गले में होती है। इस चुंबक को फिट करने की सर्जरी को करने में एक घंटे का समय लगेगा। सर्जरी के चार हफ्ते के बाद एक और चुंबक गले में लगाया जाएगा।

यह दूसरा चुंबक पहले से गले में लगाए गए चुंबक को आकर्षित करेगा जिससे एक हल्का खिंचाव तैयार होगा और हवा की नली खुल जाएगी। मरीज के गले और हवा की नली के आकार के अनुसार विभिन्न आकार के चुंबकों का प्रयोग किया जा सकेगा। अब तक माउंट जियॉन यूनिवर्सिटी हॉस्पिटल में छह लोगों के गले में इस उपकरण को प्रतिरोपित किया गया है। उनकी निगरानी की जा रही है ताकि इस उपकरण की उपयोगिता का पता लगाया जा सके।

दिल का रखेंगे ध्यान ब्रोकली और पत्तागोभी

क्या आपको भी ब्रोकली, पत्तागोभी और ब्रसल्स स्प्राउट जैसी सब्जियां अच्छी नहीं लगतीं। अगर आप भी इन सब्जियों को खाने से परहेज करते हैं तो आप अनजाने में दिल की बीमारियों को न्योता दे रहे हैं। एक हालिया शोध के अनुसार ये सब्जियां रक्त धमनियों और वाहिकाओं की बीमारियों के जोखिम को कम करने में मदद करती हैं। रक्त धमनियों में अवरोध पैदा होने से हार्ट अटैक और स्ट्रोक का जोखिम बढ़ जाता है। ब्रिटिश जर्नल ऑफ न्यूट्रिशन में प्रकाशित शोध में पाया गया कि पत्तेदार हरी सब्जियों जैसे ब्रोकली, ब्रसल्स स्प्राउट और पत्तागोभी का सेवन करने का संबंध बुजुर्गों में रक्त वाहिकाओं की बीमारियों के कम जोखिम के साथ था। ईसीयू स्कूल ऑफ मेडिसिन और द यूनिवर्सिटी ऑफ वेस्टर्न ऑस्ट्रेलिया के शोधकर्ताओं ने 684 बुजुर्ग महिलाओं पर अध्ययन किया। शोधकर्ताओं ने देखा कि जिन महिलाओं ने ज्यादा हरी पत्तेदार सब्जियों का सेवन किया उनकी महाधमनी में कैल्शियम के जमाव का खतरा कम पाया गया। यह रक्त वाहिकाओं में होने वाली बीमारियों का पहला संकेत होता है।

हार्ट अटैक हो सकता है

रक्त वाहिकाओं की बीमारियां धमनियों और नसों को प्रभावित करती हैं। धमनियों और नसों में कैल्शियम का जमाव होने से रक्त के प्रवाह में बाधा आती है जिससे हार्ट अटैक और स्ट्रोक का खतरा बढ़ जाता है।

ब्रोकली और स्प्राउट है बेहद फायदेमंद

प्रमुख शोधकर्ता डॉक्टर लाउरेन ब्लेकिनहोर्स्ट ने कहा, हरी पत्तेदर सब्जियों के बारे में कुछ पेचीदा था, जिस पर इस अध्ययन ने अधिक प्रकाश डाला है। हमारे पूर्व शोधों में हमने पाया कि जिन लोगों ने हरी पत्तेदार सब्जियों का सेवन किया उनमें दिल संबंधी बीमारियों और घटनाएं जैसे हार्ट अटैक और स्ट्रोक का जोखिम कम पाया गया। हमारे शोध से हरी पत्तेदार सब्जियों के फायदों के बारे में पता चलता है। बुजुर्गावस्था में ज्यादा हरी पत्तेदार सब्जियों का सेवन करने से धमनियां स्वस्थ रहती हैं और इससे दिल भी स्वस्थ रहता है।

विटामिन-के मौजूद होता है

हरी पत्तेदार सब्जियों जैसे ब्रोकली, स्प्राउट और पत्तागोभी में बड़ी मात्रा में विटामिन- के मौजूद होता है। विटामिन-के रक्त वाहिकाओं में कैल्शियम के जमाव को रोकने का काम करता है।

रोजाना सब्जी खाना जरूरी

डॉक्टर ब्लेकेनहॉर्स्ट ने कहा कि इस अध्ययन में जिन महिलाओं ने प्रतिदिन 45 ग्राम से अधिक सब्जियों का सेवन किया (जैसे एक कप उबली हुई ब्रोकली या एक कप पत्ता गोभी) उनकर महाधमनी में कैल्शियम के व्यापक जमाव की आशंका 46 प्रतिशत कम थी। इनकी तुलना रोजाना सब्जी नहीं खाने वाले लोगों से की गई। ब्लेकेनहॉर्स्ट ने कहा, अच्छे स्वास्थ्य के लिए सिर्फ ब्रोकली, स्प्राउट और पत्तागोभी का ही सेवन नहीं करना चाहिए बल्कि सभी प्रकार की मौसमी सब्जियां खानी चाहिए।

रोजाना कितनी सब्जी खाएं

- रोज सलाद के रूप में 80 ग्राम कच्ची सब्जी का सेवन करना चाहिए।
- प्रतिदिन 80 ग्राम पकी हुई सब्जी का सेवन करने की सलाह।
- प्रतिदिन 125 मिलीलीटर सब्जी के जूस का सेवन करना चाहिए।

घुटने का दर्द हो जाएगा छूमंतर ट्राय करें यह देसी नुस्खा

बढ़ती उम्र और डेली रूटीन में अलग-अलग स्थितियों के कारण हमारे शरीर में अलग-अलग प्रकार के बदलाव होते हैं। इसके परिणामस्वरूप कई प्रकार की बीमारियां और स्वास्थ्य समस्याएं भी शरीर को अपना शिकार बनाती हैं जिनमें घुटनों का दर्द भी प्रमुख रूप से गिना जाता है। घुटने के दर्द की समस्या ज्यादातर बुजुर्गों को परेशान करती है वहीं खेलकूद से जुड़े लोगों को भी इस समस्या से जूझना पड़ता है। ऐसे लोगों के लिए यहां पर एक देसी नुस्खे के बारे में बताया जा रहा है जो उनके घुटनों में होने वाले दर्द को दूर करने के लिए कारगर रूप से कार्य कर सकता है। आइए इस देसी नुस्खे के बारे में आपको पूरी जानकारी देते हैं।

क्यों होता है घुटनों में दर्द ?

इस देसी नुस्खे को जानने से पहले आपको यह जरूर जान लेना चाहिए कि आपके पैरों में होने वाले दर्द का प्रमुख कारण क्या होता है? मुख्य रूप से अगर बात की जाए तो घुटनों में होने वाला दर्द टेंडइनाइटिस, गाउट, ऑस्टियोआर्थराइटिस, बेकर्स सिस्ट, बर्साइटिस जैसी मेडिकल कंडीशन के कारण होता है। इसके अलावा खेलकूद के दौरान लगने वाली चोट या फिर किसी दुर्घटना में गिरने के कारण भी घुटनों में दर्द की समस्या हो सकती है। नीचे आपको ऐसे दो खास देसी नुस्खे बताए जा रहे हैं जो सामान्य रूप से घुटने में होने वाले दर्द की समस्या को ठीक करने के लिए आपकी मदद कर सकते हैं।

सेब के सिरके का करें सेवन

सेब के सिरके में ऐसे कई औषधीय गुण मौजूद रहते हैं जो आपकी सेहत के लिए भी प्रभावी रूप से फायदेमंद साबित होते हैं। एक चम्मच सेब के सिरके को अगर आप गर्म पानी के साथ मिलाकर पीने के लिए इस्तेमाल करते हैं तो इसमें मौजूद पेन रिलीविंग गुण आपके घुटनों में होने वाले दर्द को दूर करने के लिए प्रभावी असर दिखा सकता है। आप इस तरह सेब के सिरके का दिन में दो बार सेवन कर सकते हैं। कोशिश करें कि खाना खाने के पहले इसका सेवन करें।

नींबू और तिल के तेल का इस्तेमाल

एक नींबू लें और उसे काटकर रस निकाल लें। अब दो चम्मच तिल के तेल में नींबू के रस को मिलाएं और हल्के हाथों अपने घुटनों पर इस मिश्रण की मालिश करें। रात में सोने से पहले और सुबह उठने के बाद यानी मॉर्निंग वॉक पर जाने से पहले आप इस देसी नुस्खे को ट्राय कर सकते हैं। नींबू में मौजूद एंटी इंफ्लेमेटरी गुण घुटनों में होने वाली सूजन को कम कर के दर्द को दूर कर सकता है।

एक बात का ध्यान रखें कि गंभीर मेडिकल कंडीशन होने के कारण आपको इस देसी नुस्खे का कोई खास फायदा नही मिलेगा और आपको मेडिकल ट्रीटमेंट की जरूरत भी पड़ेगी।

लिट्टन दास की अगुवाई में बंगलादेश की टीम यूएई और पाकिस्तान का करेगी दौरा

एजेंसी

ढाका। बंगलादेश क्रिकेट बोर्ड (बीसीबी) ने यूएई और पाकिस्तान के आगामी दौरों के लिए लिट्टन दास की अगुवाई में वाली 16 सदस्यीय टीम की घोषणा कर दी है।लिटन दास को सभी प्रारूपों में कप्तान के अनुभव को देखते हुए बंगलादेश की टी-20 टीम का कप्तान नियुक्त किया गया है। साथ ही ऑफ स्पिनर महेदी हसन को उप कप्तान बनाया गया है। दास को अगले साल होने वाले टी-20 विश्वकप के लिए भी टीम नेतृत्व की जिम्मेदारी दी गई है। उन्होंने वेस्टइंडीज के खिलाफ सीरीज के दौरान अस्थाई कप्तान के रूप में बंगलादेश की टीम को विदेशी धरती पर 3-0 से क्लीन स्वीप करने में मदद की। उन्होंने अब तक एक टेस्ट, सात एकदिवसीय और चार टी-20 में बंगलादेश की कप्तानी की है। बंगलादेश क्रिकेट के अध्यक्ष नजमुल आबेदीन ने कहा कि लिटन दास अगले साल टी-20 विश्वकप तक टीम की कप्तानी करेंगे। लिटन के लिए अनुभव एक महत्वपूर्ण कारक रहा है। दास टेस्ट और एकदिवसीय कप्तानी के लिए दावेदार हैं, लेकिन इन पदों पर निर्णय कुछ समय के लिए नहीं लिया जाएगा।

मांडविया ने शिक्षकों के साथ चलाई साइकिल

नई दिल्ली। केंद्रीय खेल मंत्री डॉ. मनसुख मांडविया की अगुवाई में सुबह आयोजित फिट इंडिया संडे ऑन साइकिल के नवीनतम संस्करण में शिक्षकों, एथलीटों, फिट इंडिया प्रभावितों और फिटनेस प्रेमियों सहित 750 प्रतिभागियों ने भाग लिया।आज यहां मेजर ध्यानचंद राष्ट्रीय स्टेडियम में अयोजित 'शिक्षकों के साथ साइकिल चलाना' विषय पर लेकर आयोजित कार्यक्रम में डॉ. मांडविया ने कहा कि शिक्षक हमारे छात्रों के नायक हैं और अब आपको विकसित भारत के नायक बनना है। आप सभी साइकिल चलाना एक फैशन बना सकते हैं और मैं सभी शिक्षकों से आग्रह करता हूं कि वे स्वयं साइकिल का उपयोग फिर से शुरू करें और छात्रों से भी इसका अनुकरण करने को कहें। हम डिजिटल युग में हैं लेकिन हमें अपनी शारीरिक फिटनेस में भी सुधार करने की जरूरत है। साइक्लिंग फेडरेशन ऑफ इंडिया (सीएफआई), माई भारत और राज्य सरकारों के सहयोग से आयोजित इस कार्यक्रम में खेल सचिव हरि रंजन राव, टोक्यो ओलंपिक के रजत पदक विजेता रवि दहिया, ओलंपियन और राष्ट्रमंडल खेलों के स्वर्ण पदक विजेता दीपक पुनिया, गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड धारक रोहताश चौधरी (भारत के पुश-अप मैन) और प्रसिद्ध पर्वतारोही नरेंद्र कुमार के साथ राष्ट्रीय स्तर की कई हस्तियों, स्कूलों, विश्वविद्यालयों और निजी संस्थानों सहित शहर भर के विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों के शिक्षक, सलाहकार और अकादमिक प्रशिक्षक ने साइकिल चलाई।

सात साल में पहली बार श्रीलंका महिला टीम ने भारत को हराया

कोलंबो। चामरी अट्टापटू और सुगंधिका कुमारी (तीन-तीन विकेट) के अच्छे प्रदर्शन के बाद हर्षिता समाराविक्रमा (53) और नीलाक्षी डिसिल्वा (56) की शानदार बल्लेबाजी के दम पर श्रीलंका महिला टीम ने त्रिकोणीय श्रृंखला के चौथे एकदिवसीय मुकाबले में भारत को पांच गेंदे शेष रहते तीन विकेट से हरा दिया। सात सालों में श्रीलंका की भारत पर यह पहली एकदिवसीय जीत है। 276 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी श्रीलंका की शुरुआत अच्छी नहीं रही और उसने मात्र 30 रन के स्कोर पर अपना पहला विकेट हसिनी परेरा (22) रनआउट के रूप में गवां दिया। इसके बाद हर्षिता समाराविक्रमा ने विष्मी गुणारत्ने के साथ पारी को संभाला। दोनों बल्लेबाजों के बीच दूसरे विकेट के लिए 78 रनों की साझेदारी हुई। 23वें ओवर में अरुंधति रेड्डी ने विष्मी गुणारत्ने (33) को आउटकर इस साझेदारी का अंत किया। इसके बाद 27वें ओवर में प्रतिका रावल ने हर्षिता समाराविक्रमा (53) को आउटकर भारत को चौथी सफलता दिलाई। कप्तान चामरी अट्टापटू (23), कविशा दिलहारी (35) और देवमी विहंगा (एक) रन बनाकर आउट हुई। नीलाक्षी डिसिल्वा ने 33 गेंदों में पांच चौके और तीन छक्के लगाते हुए (56) रनों की पारी खेली। आखिरी ओवर में भारतीय गेंदबाजों ने कसी हुई गेंदबाजी कर मैच को रोमांचक बना दिया था। अनुष्का संजीवनी (23) और सुगंधिका कुमारी (19) रन बनाकर नाबाद रही। श्रीलंका ने 49.1 ओवर में सात विकेट पर 278 रन बनाकर मुकाबला तीन विकेट से जीत लिया।

श्रीपर्णा डे ने जिमनास्टिक राष्ट्रीय चैंपियनशिप में जीते चार स्वर्ण पदक

अगरतला। त्रिपुरा की जिमनास्ट श्रीपर्णा डे ने कलात्मक जिमनास्टिक राष्ट्रीय चैंपियनशिप में राज्य के लिए चार प्रतिष्ठित स्वर्ण पदक जीते। पुणे में आयोजित चैंपियनशिप में श्रीपर्णा ने 42.40 अंकों के शानदार समग्र स्कोर के साथ स्वर्ण पदक जीता। वॉल्टिंग टेबल (11.55), अनइवन बार्स (8.30), बैलेंसिंग बीम (11.35) और फ्लोर एक्सरसाइज (11.20) में कुशलता और संयम का परिचय दिया। श्रीपर्णा ने तीन श्रेणियों- वॉल्टिंग टेबल, बैलेंसिंग बीम और फ्लोर एक्सरसाइज में शानदार प्रदर्शन करते हुए तीन अतिरिक्त स्वर्ण पदक हासिल किए। लगभग दोषरहित निष्पादन के साथ श्रीपर्णा ने वॉल्टिंग टेबल में 11.800, बैलेंसिंग बीम में 11.033 और फ़्लोर एक्सरसाइज़ में 10.300 स्कोर किया। हालाँकि असमान बार्स में पदक उसके हाथ से निकल गया, लेकिन चैंपियनशिप में उसके कुल स्वर्ण पदकों की संख्या बढ़कर चार हो गई।

पंजाब किंग्स की जीत पर कोच पोंटिंग ने कहा-धर्मशाला का माहौल शानदार, घरेलू मैच जीतते रहना जरूरी

एजेंसी

धर्मशाला। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल 2025) के अपने होम लेग की शुरुआत पंजाब किंग्स ने जोरदार अंदाज़ में की। मैच के बाद प्रेस कॉन्फ्रेंस में पंजाब के हेड कोच रिकी पोंटिंग ने प्रभसिमरन की तारीफ करते हुए कहा, वो पूरे टूर्नामेंट में शानदार खेल रहा है। मैंने आज दोनों ओपनर्स (प्रियांशु और प्रभसिमरन) को चुनौती दी थी कि कोई एक शतक बनाए। दुर्भाग्य से प्रभसिमरन थोड़े रन से चूक गए, लेकिन उनका इरादा साफ था। वह इस टीम को सफल बनाना चाहता है और आज उसकी झलक भी मिली।

जॉश इंग्लिस को ऊपर भेजने की रणनीति पर बोले पोंटिंग

कोच ने बताया कि जॉश इंग्लिस को नंबर 3 पर भेजना कप्तान श्रेयस अय्यर की सोच थी। उन्होंने कहा, हमें लगा था कि लखनऊ की ओर से

मयंक यादव शुरुआत में गेंदबाज़ी करेंगे और वह आमतौर पर शॉर्ट गेंद फेंकते हैं। ऐसे में इंग्लिस को ऊपर भेजना सही रहेगा क्योंकि पुल शॉट उनकी ताकत है, जैसा कि आज उन्होंने दिखाया।

अर्शदीप को बताया टीम की ताकत

पोंटिंग ने अर्शदीप की गेंदबाज़ी की भी सराहना की और कहा, अर्शदीप हर मैच के साथ बेहतर होता जा रहा है। वह अब नई गेंद से पावरप्ले में विकेट लेने लगा है, जो हमें उसकी क्षमता पर पहले से भरोसा था। आज का उनका पहला ओवर ही मैच की लय तय कर गया। वह एक स्टार गेंदबाज़ है और हमारे लिए बेहद अहम खिलाड़ी है।

धर्मशाला की भीड़ से हुए प्रभावित

धर्मशाला की भीड़ और माहौल की तारीफ करते हुए पोंटिंग ने कहा, आज का माहौल कमाल का था। यह स्टेडियम बेहद खूबसूरत है और हम चाहते हैं कि हमारे सभी घरेलू मैचों में जीत हासिल करें। हमारा अगला मुकाबला दिल्ली के खिलाफ इसी मैदान पर है और हमें उम्मीद है कि वहां भी शानदार समर्थन मिलेगा और खिलाड़ी फिर वही प्रदर्शन दोहराएंगे। पंजाब किंग्स अब 8 मई को धर्मशाला में दिल्ली कैपिटल्स से भिड़ेगी। टीम का लक्ष्य घरेलू मैदान पर लगातार जीत दर्ज कर विपक्षी टीमों पर दबाव बनाना है।

भारत में खेलों में एआई क्रांति का मार्ग प्रशस्त कर रहे फैंटेसी स्पोर्ट्स: प्रो. विशाल मिश्रा का श्वेत पत्र जारी

एजेंसी

मुंबई। भारत को वैश्विक एआई हब बनाने के दृष्टिकोण के तहत कोलंबिया विश्वविद्यालय के प्रोफेसर और एफआईएफएस स्पोर्ट्स डेटा गेमथॉन के विशेषज्ञ सलाहकार प्रो. विशाल मिश्रा ने खेलों में भारत की एआई क्रांति के लिए उत्प्रेरक के रूप में फैंटेसी स्पोर्ट्स शीर्षक से एक श्वेत पत्र जारी किया। यह विमोचन मुंबई में आयोजित वेव्स 2025 (विश्व ऑडियो विजुअल और मनोरंजन शिखर सम्मेलन) के तहत किया गया। यह श्वेत पत्र एफआईएफएस (फेडरेशन ऑफ इंडियन फैंटेसी स्पोर्ट्स), गूगल क्लाउड और ड्रीम11 की साझेदारी में आयोजित राष्ट्रीय स्तर की खेल एआई चुनौती स्पोर्ट्स डेटा गेमथॉन पर आधारित है। इसका उद्देश्य भारत की तकनीकी प्रतिभा को प्रोत्साहित करते हुए, एआई/एमएल मॉडल के माध्यम से वास्तविक खेल समस्याओं के समाधान विकसित करना था। प्रो. मिश्रा के अनुसार, फैंटेसी स्पोर्ट्स केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं, बल्कि वे डेटा-संचालित नवाचार का प्रवेशद्वार हैं। ये प्लेटफ़ॉर्म न केवल प्रशंसकों को जोड़ता है, बल्कि एथलीट के प्रदर्शन, रणनीति और निर्णय लेने में भी क्रांतिकारी बदलाव ला सकते हैं।÷ उन्होंने यह भी बताया कि इस पहल ने इंडिया एआई के कौशल विकास और एप्लिकेशन निर्माण लक्ष्यों को मजबूती से आगे बढ़ाया है। -फैंटेसी स्पोर्ट्स को एक व्यापक एआई प्रयोगशाला और नवाचार मंच के रूप में मान्यता देने की आवश्यकता है। -स्पोर्ट्स डेटा गेमथॉन को कौशल निर्माण और वास्तविक समय मॉडल तैनाती के लिए एक स्केलेबल मॉडल के रूप में इस्तेमाल किया जाना चाहिए।

प्रीमियर लीग 2024-25 : चेल्सी ने गत चैंपियन लिवरपूल को 3-1 से हराया

एजेंसी

लंदन। प्रीमियर लीग 2024-25 के एक अहम मुकाबले में चेल्सी ने चैंपियन लिवरपूल को 3-1 से हराकर चैंपियंस लीग क्वालिफिकेशन की अपनी उम्मीदों को ज़िंदा रखा। चेल्सी के लिए एनजो फर्नांडीज, कोल पाल्मर और एक आत्मघाती गोल स्कोरिंग में शामिल रहे।

शुरुआत से ही हावी रही चेल्सी

मैच की शुरुआत से ही चेल्सी ने आक्रामक खेल दिखाया और तीसरे मिनट में ही बढ़त बना ली। कोल पाल्मर के पास पर नेटो ने गेंद एनजो फर्नांडीज को दी, जिन्होंने गेंद को नेट में पहुंचाकर टीम को शुरुआती बढ़त दिला दी।

क्वांसाह का आत्मघाती गोल और पाल्मर की वापसी

दूसरा गोल भी पाल्मर की चालाकी से आया, जब उनकी एक क्रॉस को क्लीयर करने की कोशिश में लिवरपूल डिफेंडर जारेल क्वांसाह ने अपने ही गोल में बॉल डाल दी। मैच के अंतिम पलों में पाल्मर ने पेनल्टी के जरिए अपना पहला गोल जनवरी के बाद किया। यह पेनल्टी क्वांसाह द्वारा मोइसेस कैइसेडो को गिराने के बाद मिली।

वैन डाइक ने की कोशिश, लेकिन देर हो चुकी थी

84वें मिनट में वर्जिल वैन डाइक ने कॉर्नर पर गोल कर लिवरपूल को एकमात्र संजीवनी दी, लेकिन टीम इस बढ़त को पाट नहीं सकी।- **चेल्सी पॉइंट्स टेबल में पांचवें स्थान पर:** एंजो मारेस्का की कोचिंग में चेल्सी अब 63 अंकों के साथ पांचवें स्थान पर है और चौथे स्थान पर मौजूद न्यूकैसल से केवल गोलों के आधार पर पीछे है। दोनों टीमें तीसरे स्थान पर काबिज मैनचेस्टर सिटी से केवल एक अंक पीछे हैं, जबकि तीन मुकाबले शेष हैं।

मेड्रिड ओपन 2025: कैस्पर रूड ने जैक ड्रेपर को हराकर जीता पहला मास्टर्स खिताब

एजेंसी

मैड्रिड। नॉर्वे के टेनिस स्टार कैस्पर रूड ने रात को मेड्रिड ओपन 2025 का खिताब जीतते हुए इतिहास रच दिया। 14वीं वरीयता प्राप्त रूड ने खिताबी मुकाबले में ब्रिटेन के जैक ड्रेपर को 7-5, 3-6, 6-4 से मात दी। यह रूड का पहला एटीपी मास्टर्स 1000 खिताब है। 26 वर्षीय रूड ने इस खिताब को अपने 18वें क्लेकोर्ट फाइनल में हासिल किया।

चोट के बावजूद दिखाया जज्बा, दिग्गजों को दी मात

रूड ने सेमीफाइनल में पसली में चोट लगने के बावजूद दमदार प्रदर्शन किया और ड्रेपर को हराकर खिताब अपने नाम किया। इससे पहले उन्होंने टेलर फ्रिट्ज, दानिल मेदवेदेव और फ्रांसिस्को सेरुंडोलो जैसे दिग्गज खिलाड़ियों को हराया था।

ड्रेपर से पिछड़ने के बाद जोरदार वापसी

पहले सेट में रूड 3-5 से पिछड़ रहे थे, लेकिन उन्होंने दो बार ड्रेपर की सर्विस तोड़कर सेट 7-5 से अपने नाम किया। हालांकि ड्रेपर ने दूसरा सेट 3-6 से जीतकर मुकाबले में वापसी की। तीसरे सेट में रूड ने 3-

2 की बढ़त बनाते हुए अंत में 6-4 से सेट और मैच अपने नाम कर लिया।

ड्रेपर बने वर्ल्ड नंबर 5, रूड को दी बधाई

हालांकि जैक ड्रेपर को फाइनल में हार का सामना करना पड़ा, लेकिन वे अब आज जारी होने वाली नई एटीपी रैंकिंग में करियर की सर्वोच्च रैंकिंग यानी विश्व नंबर 5 पर पहुंच जाएंगे। ड्रेपर ने मैच के बाद कहा, कैस्पर, तुम्हें बहुत-बहुत बधाई। तुमने मुश्किल पलों में मुझसे ज्यादा हिम्मत दिखाई। यह खिताब तुम्हारे मेहनत का फल है।

एफ1 मियामी जीपी 2025: पियास्त्री ने लगाई जीत की हैट्रिक

एजेंसी

मियामी। ऑस्कर पियास्त्री ने मियामी ग्रां प्री जीतकर न केवल अपनी लगातार तीसरी जीत हासिल की, बल्कि मैकलॉरेन टीम को भी एक और यादगार वन-टू फिनिश दिलाया। चौथे स्थान से रेस शुरू करने वाले ऑस्ट्रेलियाई ड्राइवर ने शानदार तरीके से आगे बढ़ते हुए जीत दर्ज की और अब वह चैंपियनशिप में टीममेट लैंडो नॉरिस से 16 अंकों से आगे हैं। दो साल पहले मियामी में सबसे धीमी टीम कही जाने वाली मैकलॉरेन ने अब वही रेस 35 सेकंड से ज्यादा के अंतर से जीत ली।

पियास्त्री ने जीत के बाद कहा, यह अविश्वसनीय है कि हम वहीं हैं जहां पहले हम लैप डाउन होते थे।

वेरस्टैपेन की पोल से जीत न होने की परंपरा बरकरार

रेड बुल के मौजूदा चैंपियन मैक्स वेरस्टैपेन पोल पोजिशन से रेस शुरू करने के बावजूद चौथे स्थान

पर रहे। मैकलॉरेन के दोनों ड्राइवरों ने उन्हें ओवरटेक किया और मियामी में पोल पोजिशन से जीत नहीं होने की परंपरा को कायम रखा। मर्सिडीज के जॉर्ज रसेल तीसरे स्थान पर रहे, लेकिन वह भी विजेता से 37.644 सेकंड पीछे रहे। विलियम्स के एलेक्स एल्बोन पांचवें स्थान पर रहे, जबकि मर्सिडीज के किमी एंटोनेली और फेरारी के चार्ल्स लेक्लेर व लुईस हैमिल्टन क्रमशः छठे, सातवें और आठवें स्थान पर रहे।

रेस की शुरुआत में ही नॉरिस और वेरस्टैपेन की भिड़ंत

रेस की पहली लैप में ही रोमांच देखने को मिला जब लैंडो नॉरिस और मैक्स वेरस्टैपेन के बीच टर्न-2 पर टक्कर हुई, जिससे नॉरिस को ट्रैक से बाहर जाना पड़ा और तीन स्थानों का नुकसान हुआ। हालांकि, स्टीवर्ड्स ने इस मामले में कोई कार्रवाई नहीं की। नॉरिस ने कहा, अगर मैं आगे नहीं जाता तो लोग शिकायत करते, और अगर जाता हूं तो भी शिकायत होती है। मैक्स के साथ तो या टक्कर होगी या ओवरटेक नहीं हो पाएगा।

फ्लॉलेस ड्राइव से पियास्त्री ने रचा इतिहास

पियास्त्री ने एंटोनेली को लैप-4 में ओवरटेक किया और फिर वेरस्टैपेन को भी पीछे छोड़ा। नॉरिस ने भी शानदार वापसी करते हुए लैप-17 तक वेरस्टैपेन को पार किया और दूसरे स्थान पर आए। रेस के दौरान तीन बार वर्चुअल सेफ्टी कार आई, जिसमें अल्पाइन, हास और सोबर की गाड़ियों ने रेस छोड़ी।

भारतीय महिला हॉकी टीम ने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ आखिरी मैच में 1-0 से दर्ज की जीत

एजेंसी

नई दिल्ली। भारतीय महिला हॉकी टीम ने पर्थ हॉकी स्टेडियम में ऑस्ट्रेलिया दौरे के पांचवें और अंतिम मैच में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ 1-0 से जीत हासिल की। भारतीय टीम की ओर से एक मात्र गोल नवनीत कौर (21वें मिनट) ने किया। इस जीत के साथ भारतीय महिला टीम ने सीरीज का अंत मजबूती से किया। मैच के पहले क्वार्टर में ऑस्ट्रेलिया ने दबदबा बनाया और दो पेनल्टी कॉर्नर जीते लेकिन भारतीय टीम के मजबूत डिफेंस ने उन्हें गोल करने से रोक दिया। दूसरे क्वार्टर के छह मिनट बाद भारतीय टीम ने उप कप्तान नवनीत कौर के फील्ड गोल की बदौलत बढ़त हासिल कर ली। दूसरे हाफ में दोनों टीमें गोल करने के लिए बेताब थीं, लेकिन भारतीय टीम ने संयम बनाए रखा और अपनी बढ़त का सफलतापूर्वक बचाव किया। अंतिम क्वार्टर में ऑस्ट्रेलिया को एक महत्वपूर्ण पेनल्टी कॉर्नर मिला। हालांकि, उन्होंने बराबरी करने का मौका गंवा दिया और अंत में भारतीय टीम ने 1-0 से जीत दर्ज की। दौरे पर ऑस्ट्रेलिया ए टीम के खिलाफ दो हार और सीनियर टीम के खिलाफ दो हार के बाद भारतीय टीम ने अंतिम मैच में मेजबान टीम के खिलाफ जीत दर्ज की। इस तरह भारतीय टीम ने जीत के साथ सीरीज का अंत किया।

बायर्न म्यूनिख ने जीता रिकॉर्ड 34वां बुंडेसलीगा खिताब, लेवरकुसेन की ड्रॉ से तय हुई जीत

एजेंसी

बर्लिन। जर्मन फुटबॉल क्लब बायर्न म्यूनिख ने बिना कोई मैच खेले ही अपना 34वां बुंडेसलीगा खिताब जीत लिया। यह उनकी लगातार 12वीं और कुल मिलाकर रिकॉर्ड 34वीं बार जर्मन लीग खिताब पर कब्जा है। खिताब की यह स्थिति तब बनी जब उनकी सबसे बड़ी प्रतिद्वंद्वी बायर लेवरकुसेन फ्राइबर्ग के खिलाफ 2-2 की बराबरी पर रुक गई। बायर्न म्यूनिख ने आरबी लाइपजिग के खिलाफ 3-3 से ड्रॉ खेला था, जिससे लेवरकुसेन को खिताबी उम्मीदों को जिंदा रखने के लिए जीत दर्ज करनी जरूरी थी। लेकिन फ्राइबर्ग ने शानदार खेल दिखाते हुए उन्हें रोक दिया।

फ्राइबर्ग ने पहले ही हाफ में बना ली बढ़त

फ्राइबर्ग ने मुकाबले में आक्रामक शुरुआत की। 44वें मिनट में मैक्सिमिलियन एगेस्टीन के

डिफ्लेक्टेड शॉट से टीम ने पहला गोल किया। दूसरे हाफ के चौथे मिनट में लेवरकुसेन के डिफेंडर पिएरो हिंकापी ने आत्मघाती गोल कर फ्राइबर्ग को 2-0 की बढ़त दिला दी।

देर से आया लेवरकुसेन का जवाब, लेकिन नहीं बचा सका खिताब

लेवरकुसेन ने मैच के अंतिम मिनटों में वापसी की कोशिश की। 82वें मिनट में फ्लोरियन विट्ज ने शानदार गोल किया और फिर स्टॉपेज टाइम में जोनाथन ताह ने बराबरी दिलाई। लेकिन तीसरा गोल नहीं कर पाने के कारण वे जीत से चूक गए।

बायर्न के नाम अब 34 बुंडेसलीगा खिताब

इस ड्रॉ के बाद लेवरकुसेन 68 अंकों के साथ दूसरे स्थान पर रह गई, जबकि बायर्न म्यूनिख 76 अंकों के साथ शीर्ष पर है।

दो मुकाबले शेष होने के बावजूद कोई टीम अब बायर्न को नहीं पछाड़ सकती, और इसी के साथ बायर्न ने 1963 में बुंडेसलीगा की शुरुआत के बाद से अपना रिकॉर्ड 34वां खिताब जीत लिया।

भोपाल की ग्रैपलिंग टीम ने जीते 30 पदक

भोपाल। राजधानी भोपाल की टीम ग्रैपलिंग ने राज्य स्तरीय चैंपियनशिप में धुआंदार प्रदर्शन दिखते हुए 30 पदक जीतकर तीसरी चैंपियन ट्रॉफी अपने नाम कर ली है. इस प्रतियोगिता का आयोजन इंदौर में एमेच्योर ग्रैपलिंग स्पोर्ट्स एसोसिएशन मध्यप्रदेश एवं इंदौर जिला ग्रैपलिंग एसोसिएशन ने संयुक्त रूप से किया गया, जिसमे देश भर के 150 से ज्यादा खिलाडी हिस्सा लेने पहुंचे थे. भोपाल की टीम के खिलाडियों ने 8 स्वर्ण, 17 रजत, और 5 कस्य पदक हासिल किये इस प्रतियोगिता के समापन में मध्यप्रदेश कुश्ती संघ के कोषाध्यक्ष, एवं मध्यप्रदेश ओलंपिक संघ के उपाध्यक्ष ओम सोनी और विक्रम पुरस्कार विजेता ओमप्रकाश खत्री उपास्थित रहे. भोपाल टीम के कोच निखिल यादव ने टीम के प्रदर्शन पर प्रसन्नता और गौरव व्यक्त किया।

आईपीएल 2025: पंजाब किंग्स ने लखनऊ सुपरजाएंट्स को 37 रनों से हराया

एजेंसी

धर्मशाला। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2025 के 54वें मुकाबले में पंजाब किंग्स ने लखनऊ सुपरजाएंट्स को हाई स्कोरिंग मुकाबले में 37 रन से हरा दिया है। इस जीत के साथ ही पंजाब की टीम अंकतालिका में दूसरे स्थान पर पहुंच गई है। उसके पास 11 मैचों में 15 अंक हैं।पंजाब की ओर से मिले 237 रन के लक्ष्य का पीछा करने उतरी लखनऊ की शुरुआत अच्छी नहीं रही और पारी के तीसरे ओवर में ही मिचेश मार्श बिना खाता खोले आउट हो गए। फिर इसी ओवर की पांचवी गेंद पर दूसरे ओपनर एडन मार्करम भी 13 रन बनाकर आउट हो गए। इसके बाद टीम को हर थोड़े अंतराल पर झटका लगाता रहा। निकोलस पूरन ने 6 रन, कप्तान ऋषभ पंत 18 रन, डेविड मिलर 11 रन बनाकर पवेलियन लौटे। हालांकि टीम के लिए थोड़ा संघर्ष आयुष बडोनी और अब्दुल समद ने किया। जिन्होंने छठे विकेट के लिए 81 रन की साझेदारी की। अब्दुल समद 45 रन बनाकर आउट हुए। इसके बाद

बडोनी ने आवेश खान के साथ 34 रन की एक छोटी पार्टनरशिप की लेकिन वह नाकाफी रही। लखनऊ की टीम 20 ओवर में 199 रन ही बना सकी। बडोनी ने 74 रन की पारी खेली, जबकि आवेश खान 19 रन बनाकर नाबाद रहे। पंजाब की ओर से अर्शदीप सिंह ने तीन और अजमतुल्लाह ओमरजाई ने दो विकेट चटकाए। जबकि मार्को यानसेन और यजुवेंद्र चहल को एक-एक सफलता मिली।इससे पहले, टॉस हारकर बल्लेबाजी करते हुए पंजाब ने निर्धारित 20 ओवरों में 5 विकेट के नुकसान पर 236 रन का विशाल स्कोर खड़ा किया। पंजाब के लिए सलामी बल्लेबाज प्रभसिमरन सिंह ने 91 रन की शानदार पारी खेली। इस दौरान उन्होंने जोश इंग्लिश (30 रन) और कप्तान श्रेयश अय्यर (45 रन) का भरपूर साथ मिला। वहीं, आखिर में शशांक सिंह ने 15 गेंदों में 33 रन और मार्कस स्टॉयनिश ने 5 गेंदों में 15 रन जड़कर टीम के स्कोर को 236 तक पहुंचा दिया।।लखनऊ के लिए आकाश सिंह और दिग्वेश राठी को दो-दो सफलता मिली। जबकि प्रिंस यादव के खाते में एक विकेट आया।

आईपीएल 2025 : रोमांचक मुकाबले में केकेआर ने आरआर को एक रन से हराया

एजेंसी

कोलकाता। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2025 का 53वां मुकाबला कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) और राजस्थान रॉयल्स (आरआर) के बीच खेला गया। इस रोमांचक मुकाबले में केकेआर ने आरआर को मात्र एक रन से हरा दिया। कोलकाता के इडेन गार्डेंस स्टेडियम में खेले गए इस मुकाबले में केकेआर ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी की और 20 ओवर में 4 विकेट खोकर 206 रन बनाए। जवाब में राजस्थान की टीम 20 ओवर में 8 विकेट खोकर 205 रन ही बना सकी और एक रन से मुकाबला हार गई। इस मुकाबले में जीत के साथ कोलकाता की टीम 11 मैचों में 5 में जीत और 5 हार के साथ अंक तालिका में छठे नंबर पर पहुंच गई है। वहीं राजस्थान की टीम 12 मैचों में तीन में जीत और नौ में हार के साथ 8वें नंबर पर मौजूद है।

लक्ष्य का पीछा करने उतरी राजस्थान रॉयल को पहले ही ओवर में वैभव सूर्यवंशी के रुप में बड़ा झटका लगा। वैभव इस मैच में जल्दी आउट हो गए और मात्र 4 रन बना सके। अगले ओवर में कुणाल सिंह राठौर बिना खाता खोले आउट हो गए। दो विकेट जल्दी गंवाने के बाद सलामी बल्लेबाज यशस्वी जायसवाल और कप्तान रियान पराग ने अच्छी साझेदारी की और छह ओवर की समाप्ति तक टीम के स्कोर को 50 रन के पार पहुंचा दिया। दोनों बल्लेबाजों के बीच 50 रन से ज्यादा

की साझेदारी हो गई थी, इस बीच यशस्वी बड़ा शॉट मारने की कोशिश में कैच आउट हो गए। यशस्वी ने 21 गेंदों में 5 चौके और एक छक्के की मदद से 34 रन बनाए। फिर आठवें ओवर में राजस्थान को दो झटके लगे। पहले ध्रुव जुरेल और फिर वानिंदु हसरंगा बिना खाता खोले आउट हो गए। आधी टीम के पवेलियन लौटने के बाद रियान पराग ने शिमरॉन हेटमायर के साथ पारी को आगे बढ़ाया। पराग ने ताबड़तोड़ अंदाज में बल्लेबाजी की और हेटमायर के साथ शानदार साझेदारी कर टीम का स्कोर 15 ओवर में 150 के पार पहुंचा दिया। यह साझेदारी हेटमायर का विकेट गिरने के साथ टूटी। हेटमायर 23 गेंदों पर एक चौका और एक छक्के की मदद से 29 रन बनाकर आउट हुए। बाद में पराग भी बड़ा शॉट खेलने की कोशिश में कैच आउट हो गए। पराग ने 45 गेंदों पर 6 चौके और 8 छक्कों की मदद से 95 रन की शानदार पारी खेली। आखिरी में शुभम दुबे और जोफ्रा आर्चर ने टीम को जीताने की भरपूर कोशिश की, लेकिन जीत से मात्र एक रन दूर रह गए। जोफ्रा ने आठ गेंदों पर 12 रन बनाए। शुभम 14 गेंदों में 25 रन बनाकर नाबाद रहे। केकेआर की तरफ से वरुण चक्रवर्ती, मोईन अली, हर्षित राणा ने 2-2 विकेट लिए, जबकि वैभव अरोड़ा को एक विकेट मिला। इससे पहले कोलकाता की टीम ने 20 ओवर में 4 विकेट खोकर 206 रन बनाए। टीम की शुरुआत अच्छी नहीं रही थी और 13 रन के स्कोर पहला विकेट गिर गया। सुनील नरेन 11 रन बनाकर पवेलियन लौट गए। इसके बाद कप्तान अंजिक्य रहाणे और रहमानुल्लाह गुरबाज ने पारी को आगे बढ़ाया।

शुभमन नहीं, इस एक्टर को डेट कर रहीं

सारा तेंदुलकर

अमिताभ बच्चन की नातिन से कनेक्शन!

सचिन तेंदुलकर की बेटी सारा अपनी पर्सनल लाइफ को लेकर खूब चर्चा में रहती हैं. कभी बॉलीवुड वाले दोस्तों के साथ पार्टी, तो कभी क्रिकेटर शुभमन गिल के साथ डेटिंग और बेक्रअप की खबरें. हालांकि, सारा तेंदुलकर किसी भी खबर पर कभी रिएक्शन नहीं देतीं. कुछ वक्त पहले खबर आई कि शुभमन गिल से उनका ब्रेकअप हो गया है. वहीं इसकी वजह टीवी एक्ट्रेस अवनीत कौर को बताया गया. लेकिन एक्ट्रेस तो पहले से ही किसी और को डेट कर रही हैं. खैर, इसी बीच सारा की जिंदगी में नए शख्स की एंट्री हो गई है.जिस बॉलीवुड एक्टर से सारा तेंदुलकर का नाम जुड़ रहा है, वो और कोई नहीं, 'गली बॉय' के एक्टर सिद्धांत चतुर्वेदी हैं. रिपोर्ट के मुताबिक, सिद्धांत चतुर्वेदी और सारा तेंदुलकर इस वक्त एक दूसरे के साथ वक्त बिता रहे हैं. साथ ही दोनों को एक दूसरे के करीब आते हुए भी देखा गया है.

क्या सिद्धांत को डेट कर रहीं सारा ?

हाल ही में फिल्मफेयर पर एक रिपोर्ट छपी. इसके मुताबिक, सारा और सिद्धांत चतुर्वेदी की दोस्ती फिलहाल शुरुआती स्टेज पर है. हालांकि, दोनों ही नहीं चाहते की उनके रिश्ते के बारे में किसी को भी कुछ पता लगे. यूं तो सिद्धांत चतुर्वेदी

पहले भी अपनी लव लाइफ को लेकर चर्चा में रह चुके हैं. उनका नाम अमिताभ बच्चन की नातिन नव्या नवेली नंदा से जुड़ा था. सिद्धांत उनकी तस्वीरों पर कमेंट भी करते थे. लेकिन फिर एक दिन अचानक एक दूसरे को अनफॉलो कर दिया. हालांकि, दोनों साथ वक्त बिताते हुए भी दिख चुके हैं.सिद्धांत चतुर्वेदी अपने करियर में 5 फिल्मों में काम कर चुके हैं. हालांकि, उन्हें असली फेम दीपिका पादुकोण की पिक्चर 'गहराइयां' से मिला था. दोनों के बीच काफी रोमांटिक सीन्स थे. हालांकि, बात सारा तेंदुलकर की हो तो उनका नाम भी क्रिकेटर शुभमन गिल के साथ सालों से जुड़ रहा है. दोनों साथ दिख चुके हैं, यहां तक कि शुभमन ने सारा से दोस्ती की बात को कंफर्म भी किया था. लेकिन कुछ दिनों पहले अलग होने की खबर आई.

इंस्टाग्राम पर नहीं करते फॉलो

दरअसल रिपोर्ट्स में सिद्धांत चतुर्वेदी और सारा तेंदुलकर की डेटिंग की अफवाहें हैं. लेकिन इसमें कितनी सच्चाई है कितनी नहीं, हम नहीं जानते. पर सोशल मीडिया की बात की जाए तो दोनों इंस्टाग्राम पर एक दूसरे को फॉलो नहीं करते हैं. हालांकि, सारा तेंदुलकर के कई फिल्म इंडस्ट्री में दोस्त हैं, जिनके साथ पार्टी करती नजर आ चुकी हैं. ओरी के साथ भी वो दिखाई दी हैं. सिद्धांत चतुर्वेदी भी लंबे वक्त से फिल्मों से दूर हैं, लेकिन इस साल उनकी एक पिक्चर आने वाली है.

ऐश्वर्या राय

ने ठुकराई थी ऋतिक की ये ब्लॉकबस्टर फिल्म, आज भी पछताती होंगीं एक्ट्रेस

हिंदी सिनेमा की मशहूर और खूबसूरत एक्ट्रेस ऐश्वर्या राय ने अपने 25 साल से ज्यादा के करियर में कई फिल्मों के जरिए फैंस का दिल जीता है. कई बड़े स्टार्स के साथ स्क्रीन शेयर करने वाली ऐश्वर्या बड़े पर्दे पर सुपरस्टार ऋतिक रोशन के साथ भी नजर आ चुकीं हैं. लेकिन वो ऋतिक की एक फिल्म को ठुकरा भी चुकीं हैं जो बाद में बहुत बड़ी ब्लॉकबस्टर साबित हुई थी.ऋतिक रोशन की इस फिल्म का बजट महज 10 करोड़ रुपये था और ये पिक्चर 25 साल पहले रिलीज हुई थी. इसने बॉक्स ऑफिस पर बजट से करीब आठ गुना ज्यादा की कमाई की थी. आइए जानते हैं कि आखिर ऋतिक की वो फिल्म कौन सी है जिसमें काम करने में ऐश्वर्या राय ने दिलचस्पी नहीं दिखाई थी.

ऐश्वर्या ने रिजेक्ट की थी 'कहो ना प्यार है'

ऐश्वर्या राय, ऋतिक रोशन की पहली हीरोइन हो सकती थीं, लेकिन उन्होंने अभिनेता की डेब्यू फिल्म 'कहो ना प्यार है' को रिजेक्ट कर दिया था. साल 2000 में आई इस पिक्चर से ऋतिक रोशन ने अपने करियर की शुरुआत की थी. मेकर्स पहले इसमें ऐश्वर्या को लेना चाहते थे, हालांकि उनकी ना के बाद अमीषा पटेल की एंट्री हुई. ऋतिक के साथ ही अमीषा की भी ये पहली पिक्चर थी. दोनों की केमिस्ट्री को दर्शकों ने पसंद किया और दोनों डेब्यू फिल्म से ही स्टार बन गए थे. टिकट खिड़की पर कहो ना प्यार है इतिहास रचते हुए ब्लॉकबस्टर निकली.

10 करोड़ बजट, कमाई 78 करोड़

ऋतिक को उनके पिता और मशहूर डायरेक्टर राकेश रोशन ने बॉलीवुड में लॉन्च किया था. राकेश रोशन के डायरेक्शन में बनी कहो ना प्यार है 14 जनवरी 2000 को रिलीज हुई थी. इसे बनाने में करीब दस करोड़ रुपये खर्च हुए थे. वहीं भारत में इसका कलेक्शन 44 करोड़ रुपये और दुनियाभर में 78 करोड़ रुपये दर्ज किया गया था.

इन फिल्मों में साथ नजर आए ऋतिक-ऐश्वर्या

चाहें ऐश्वर्या राय ने ऋतिक की फिल्म कहो ना प्यार है को रिजेक्ट कर दिया था, लेकिन बाद में ये दोनों स्टार बड़े पर्दे पर साथ दिखाई दिए. दोनों की जोड़ी को दर्शकों ने हर बार पसंद किया है. ऋतिक और ऐश्वर्या ने साथ में 'धूम 2', 'गुजारिश' और 'जोधा अकबर' जैसी फिल्मों में काम किया है.

हमें तुलना की जरूरत नहीं...रणवीर सिंह या रणबीर कपूर में बेहतर कौन? दीपिका पादुकोण ने दिया था ये जवाब

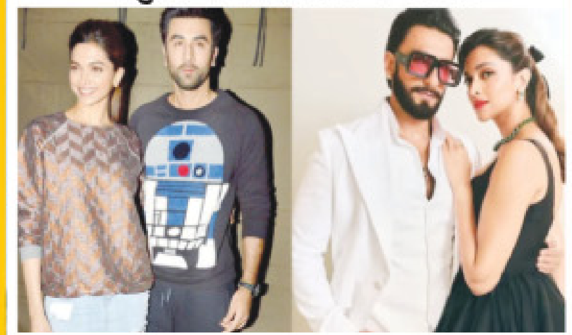

हिंदी सिनेमा की मशहूर अभिनेत्री दीपिका पादुकोण की एक्टिंग बेहद कमाल की है और इसमें किसी को कोई शक नहीं है. लेकिन दीपिका सिर्फ अपने अभिनय को लेकर ही लोगों के बीच चर्चाओं में नहीं रही हैं, बल्कि उन्होंने अपने अफेयर्स से भी खूब सुर्खियां बटोरी हैं.दीपिका पादुकोण ने साल 2018 में रणवीर सिंह से शादी की थी. हालांकि इससे पहले वो रणबीर कपूर के साथ रिश्ते में थीं. रणबीर और दीपिका का अफेयर काफी सुर्खियों में रहा था. लेकिन ब्रेकअप के बाद दीपिका की लाइफ में रणवीर आए और फिर दोनों ने शादी भी कर ली. लेकिन ब्रेकअप के बावजूद दीपिका को रणबीर कपूर के साथ देखा गया है. वहीं एक बार तो दीपिका से ये तक पूछ लिया गया था कि रणवीर और रणबीर दोनों में से बेहतर एक्टर कौन हैं ? आइए जानते हैं तब दीपिका ने क्या जवाब दिया था.

दीपिका से सवाल- रणवीर और रणबीर में से बेहतर एक्टर कौन ?

बात उन दिनों की है जब रणबीर कपूर और दीपिका पादुकोण अपनी साल 2015 में आई फिल्म 'तमाशा' का प्रमोशन कर रहे थे. ये वो दौर था जब दीपिका का रणबीर से ब्रेकअप हो चुका था और वो रणवीर सिंह को डेट कर रही थीं. तमाशा के प्रमोशन के दौरान उनसे सवाल किया गया था रणबीर कपूर और रणवीर सिंह में से वो किसे बेहतर एक्टर मानती हैं ?

दीपिका ने दिया था ऐसा जवाब

दीपिका ने इस सवाल का बेहद समझदारी के साथ जवाब दिया था. उन्होंने किसी भी एक्टर का नाम नहीं लिया था. लेकिन दोनों को ही कम नहीं आंका और न किसी को ज्यादा तवज्जो दी. उन्होंने दोनों को अपनी-अपनी जगह बेहतर कहा था. एक्ट्रेस ने कहा था, यह ऐसा है जैसे आप कह रहे हों कि आपको अपनी मां पसंद है या अपने पिता ?

रणबीर ने कहा- मैं पिता बनना चाहता हूं

दीपिका के इस जवाब के बाद दर्शकों की भीड़ में से किसी ने कहा था मां कौन होगी ? इस पर तुरंत ही मजाकिया अंदाज में रणबीर ने कहा था, मैं पिता बनना चाहता हूं.वहीं दीपिका ने आगे कहा था, मुझे ऐसा लगता है कि हम हर समय लगातार तुलना करते रहते हैंज्चाहे वो फिल्में हों, अभिनेता हों, को-स्टार हो. हमें हर समय तुलना करते रहने की जरूरत नहीं है.

करिश्मा कपूर या रवीना टंडन? अजय देवगन की दोनों एक्स में किसके पास है सबसे ज्यादा पैसा?

बॉलीवुड के पॉपुलर एक्टर अजय देवगन और काजोल की शादी को 26 साल पूरे हो चुके हैं. अजय ने काजोल से साल 1999 में शादी की थी. दोनों का रिश्ता करीब पांच साल के अफेयर के बाद शादी के मंडप तक पहुंचा था. हालांकि काजोल के प्यार में पड़ने से पहले अजय बॉलीवुड की दो दिग्गज हसीनाओं रवीना टंडन और करिश्मा कपूर के प्यार में पागल थे.अजय देवगन का अफेयर कभी रवीना टंडन और करिश्मा कपूर के साथ भी था. उन्होंने दोनों के साथ अफेयर से खूब सुर्खियां बटोरी थीं. लेकिन दोनों एक्ट्रेस के साथ उनका रिश्ता लंबा नहीं टिक पाया. आज हम आपको अजय की इन दोनों एक्स की नेटवर्थ के बारे में बता रहे हैं. आइए जानते हैं कि दोनों में से आखिर कौन सी एक्ट्रेस ज्यादा अमीर हैं ?

करिश्मा कपूर की नेट वर्थ

कपूर खानदान की बेटी करिश्मा कपूर ने सिर्फ 17 साल की उम्र में बॉलीवुड में अभिनय करियर की शुरुआत कर दी थी. रणधीर कपूर और बबीता के घर साल 1974 में जन्मीं करिश्मा के फिल्मी करियर की शुरुआत साल 1991 में हुई थी. उनकी पहली फिल्म थी 'प्रेम कैदी'. 'साजन चले ससुराल', 'राजा हिन्दुस्तानी', 'हम साथ साथ हैं', 'दुल्हन हम ले जाएंगे', जानवर, 'हसीना मान जाएगी', 'बीवी नंबर 1', 'दिल तो पागल है', 'जुड़वा', 'हीरो नंबर 1', 'जीत', 'राजा बाबू', 'जिगर' और 'अनाड़ी' जैसी बेहतरीन फिल्में दे चुकीं करिश्मा अब फिल्मों में कम ही नजर आती हैं. हालांकि इसके बावजूद वो काफी रईस हैं. मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक करिश्मा की नेटवर्थ 87 करोड़ रुपये है.

रवीना टंडन की नेट वर्थ

बात अब रवीना की नेटवर्थ की कर लेते हैं. इससे पहले आपको बता दें कि करिश्मा की तरह ही रवीना के फिल्मी करियर की शुरुआत भी साल 1991 में ही हुई थी. उन्होंने फिल्म 'प्रेम कैदी' से डेब्यू किया था जिसमें उनके अपोजिट अहम रोल में सलमान खान नजर आए थे.

रवीना अब भी बॉलीवुड में काम कर रही हैं. अपने 34 साल के करियर में एक्ट्रेस ने 'मोहरा', 'दिलवाले', 'दूल्हे राजा', 'अनाड़ी नंबर वन', 'केजीएफ 2', 'जिद्दी', 'खिलाड़ियों का खिलाड़ी' जैसी बेहतरीन फिल्में दी है. अपने लंबे और सफल करियर में खूब शोहरत के साथ ही खूब दौलत कमाने वाली रवीना करीब 166 करोड़ रुपये की संपत्ति की मालकिन हैं.